॥ ओ३म् ॥

वैदिक संसार

श्रावणी उपाकर्म (प्रचलित रक्षाबंधन) पर्व एवं
६८ वें स्वतंत्रता दिवस १५ अगस्त की समस्त आर्यों को

हार्दिक-हार्दिक शुभकामनाएँ ...

भारतीयों की
मान –मर्यादा
एवं गौरव के प्रतीक

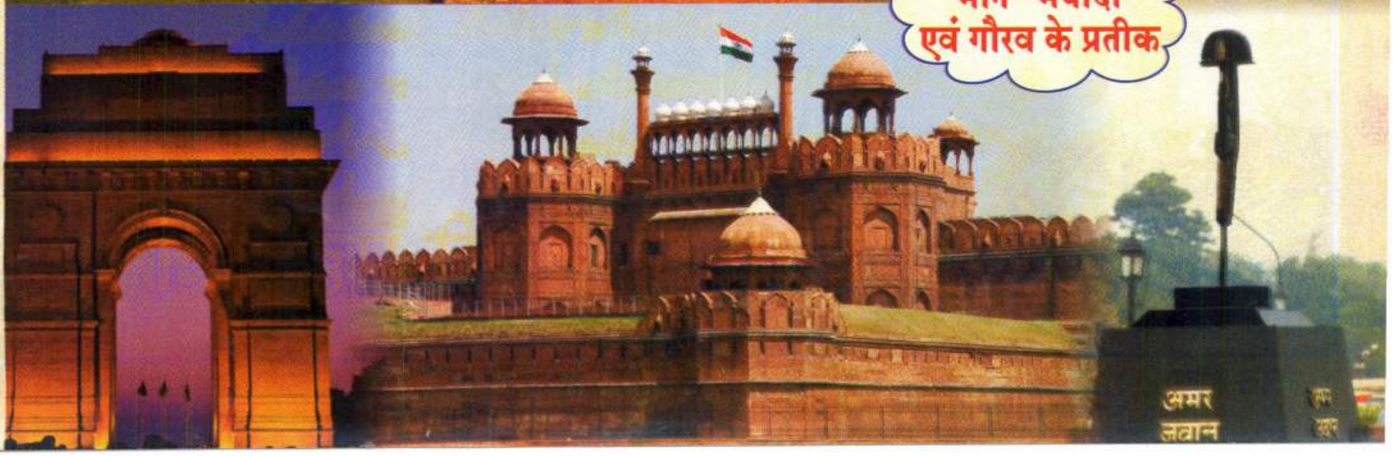

वर्ष -३ | अंक- ६ | मासिक-हिन्दी | जुलाई , २०१४ | इन्दौर(म.प्र.) | मूल्य-२५/- | कुल पृष्ठ-४४

भारत के समाचार-पत्रों के पंजीयक महोदय द्वारा पंजीकृत, पंजीयन संख्या एम.पी. एच.आई. एन. २०१२/४५०६६, डाक पंजीयन - एम.पी./आई.डी.सी./१४०५/२०१२-१४

महान राष्ट्र भक्त १८५७ की क्रांति के प्रेरणापुंज
तथा सच्चे शिव की खोज में मूलशंकर से
शुद्ध चैतन्य बने बालक को सन्यास आश्रम की
दीक्षा देकर दयानन्द नाम प्रदान करने वाले
एवं वेदों वाले महर्षि दयानन्द सरस्वती के गुरू
स्वामी पूर्णानन्द जी महाराज

प्राणी मात्र के हितकारी वैदिक धर्म का सजग प्रहरी

वैदिक संसार

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
वैदिक संसार
www.facebook.com/vaidiksansarindia

आर.एन.आई. - एम.पी.एच.आई.एन. २०१२/४५०६९
डाक पंजीयन - एम.पी./आई.डी.सी./१४०५/२०१२-१४
वर्ष- ३, अंक- ०९
अवधि- मासिक, भाषा हिन्दी
प्रकाशन आंग्ल दिनांक : २५ जुलाई २०१४
प्रकाशन आर्ष तिथि : श्रावण, कृष्णपक्ष, चतुर्दशी
सृष्टि संवत् : १,९७, २९, ४९, ११६
कलि संवत् : ५,११६
विक्रम संवत् : २०७१, दयानन्दाब्द : १९१

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक
सुखदेव शर्मा, इंदौर - ०९४२५०६९४९१

संपादक गजेश शास्त्री ०९९९३७६५०३१
सह सम्पादक नितिन शर्मा ०९४२५९५५१९१

शब्द संयोजन एवं साज सज्जा - कु. भाग्यश्री शर्मा

प्रकाशन स्थल एवं पत्र व्यवहार का पता
१२/३, संविद नगर, इंदौर-१८, मध्यप्रदेश
ई.मेल.-vaidiksansar@gmail.com

वैदिक संसार का आर्थिक आधार

एक प्रति - २५/-
वार्षिक सहयोग - २५०/- (१२ प्रति)
त्रैवार्षिक सहयोग - ६००/- (३६ प्रति)
आजीवन सहयोग - २,१००/- (१५ वर्ष)
आधार स्तंभ - ११,०००/- (न्यूनतम)
विशिष्ट सहयोग - २५,०००/-
अन्य सहयोग - स्वेच्छानुसार
बैंक खाता धारक - वैदिक संसार
भारतीय स्टेट बैंक, शाखा-ओल्ड पलासिया, इंदौर
करंट खाता क्रमांक - ३२८५९५९२४७९
आई.एफ.एस. कोड क्र.-एस.बी.आई.एन.०००३४३२

अध्यात्म के विषय में व्याप्त अंधकार को दूर करने एवं वेदोक्त ज्ञान के प्रकाश को प्रकाशमान करने में सहायक ज्योति पुंज - वैदिक संसार

अनुक्रमणिका

विषय	प्रस्तुति	पृष्ठ क्र.
पर्यावरण और प्रदूषण क्या, क्यों और कैसे.....	संपादकीय	०४
वेद मंत्र, भावार्थ एवं पत्रिका उद्देश्य	वैदिक संसार	०४
वेदामृतम्	स्वामी ध्रुवदेव परिव्राजक	०९
हमारी महान् विभूतियाँ- ऋषिका लोपामुद्रा	शिवनारायण उपाध्याय	१०
स्वामी पूर्णानन्द	स्वामी स्वतंत्रतानन्द	१०
स्वामी दयानन्द सरस्वती और विज्ञान	शिवनारायण उपाध्याय	११
आर्यावर्त था देश महान्	देशराज आर्य	१३
वयं राष्ट्र जागृयाम्......	पुरुषोत्तमदास गोठवाल	१३
देवपूजा और मूर्ति पूजा में अन्तर	सुमनकुमार वैदिक	१४
कौन हो सकता है प्रभु शरण का अधिकारी	डॉ. अशोक आर्य	१५
बन्धकर ताले में मूरत	प्रकाशचन्द्र जांगिड	१६
आह्वान-उद्बोधन	भारतेन्द्र आर्य	१६
दुर्भाग्य	ओमप्रकाश बजाज	१६
श्रीकृष्ण चरित्र के प्रथम उद्धारकर्ता	प्रो. उमाकान्त उपाध्याय	१७
अभ्यास और वैराग्य क्या और कैसे ?	दयाशंकर गोयल	१७
वैदिक धर्म, मत-मतान्तर एवं आर्य समाज	मनमोहन कुमार आर्य	१८
शंकराचार्य के निशाने पर सांई बाबा	रूपकिशोर जाकर	२१
जीवन की दूसरी पारी है: अनुभवों की फुलवारी	अर्जुनदेव चड्ढा	२४
वृद्धाश्रम की ओर	डॉ. सुभाष नारायण	२५
ऋषि दयानन्द की पंचांग विषयक मान्यता.....	आचार्य दार्शनेय लोकेश	२६
वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षा से ही देश की उन्नति....	ब्र. शिवदेव आर्य	२७
युवावस्था में सदाचार का उपदेश	साभार-आदर्श आर्यवीर	२८
युवाओं के लिये शिक्षा का महत्व	विनोद गोयल	२९
डट जाऊंगा	रमण नावलीकर	२९
भारतीय संस्कृति को तोड़-मरोड़कर पेश.....	आ. रामगोपाल शास्त्री	३१
यज्ञ करने से लाभ	स्वामी शांतानन्द	३१
इस्लामिक देश मलेशिया से.....	आ. आनन्द पुरुषार्थी	३२
दो बात हमे कहनी है केवल	डॉ. लक्ष्मीनिधि	३३
असली वोट का अकाल	मोहनलाल मगो	३३
एक व्यंग्यात्मक सच्चाई	खुशहालचन्द्र आर्य	३४
गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति से शिक्षित....	आचार्य आग्निमित्र	३४
वर्तमान सरकार का दायित्व-'हिंसा मुक्त भारत'...	गिरीश त्रिवेदी	३५
रेल यात्रा में माँस परोसना बंद हो	श्रीप्रकाश आर्य	३६
जनसंख्या दिवस ११ जुलाई २०१४	सा. वाद प्रचार सभा	३७
आर्य नेताओं व विद्वानों से विनम्र अनुरोध	स्वामी श्रद्धानन्द	३७
निर्वाचन-समाचार	संकलित	३८
वैवाहिक आवश्यकता	संकलित	३८
आर्य जगत् की प्रस्तावित गतिविधियाँ	संकलित	३९
आर्य जगत् की सम्पन्न गतिविधियाँ	संकलित	३९
वैदिक संसार को आप महानुभावों का सहयोग	वैदिक संसार	४१
आर्य मित्र सम्पादक पत्नी विरह वेदना से पीड़ित	संकलित	४२

संपादकीय

पर्यावरण और प्रदुषण क्या, क्यों और कैसे है? तथा हम कब और कैसे प्रदुषण मुक्त होंगे?

वैश्विक स्तर पर सम्पूर्ण संसार के चिन्तनशील वर्ग ने ५ जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया। चिन्तनशील वर्ग ने पृथ्वी के क्षण-प्रतिक्षण बढ़ते तापमान पर आंकड़े प्रस्तुत कर चिंताएँ जताई तथा भविष्य में प्रस्तुत होने वाले गम्भीर खतरों के प्रति आगाह किया। प्रतिवर्षानुसार इस दिवस पर भी उन्हीं सभाओं, गोष्ठियों, रैलियों, नारों, संकल्पों को परम्परानुसार पुनः दोहराया गया जिन्हें प्रतिवर्ष दोहराया जाता रहा है किन्तु ऐसा प्रतित नहीं होता कि मानव इस दिशा में गम्भीर हो जागृत हो रहा है।

आखिरकार विश्व पर्यावरण दिवस आया और चला गया। किसी गम्भीर समस्या पर चर्चा करने से पूर्व यह आवश्यक है कि पहले समस्या को ठीक से जानें, पश्चात् समस्या की उत्पत्ति के कारणों को समझे तब जाकर हम उचित समाधान प्राप्त कर पायेंगे, आईये सर्वप्रथम तो हम यह जानने का प्रयास करें कि पर्यावरण और प्रदूषण आखिर है क्या?

पर्यावरण का अर्थ है **'चारों ओर का आवरण अर्थात् वातावरण'** तथा प्र जहाँ कहीं भी प्रयुक्त होता है उसका अर्थ है **'विशेष तौर पर'**। इस प्र का अधिकांश उपयोग किसी शब्द के साथ उसकी उपयोगिता और उत्कृष्टता में वृद्धि हेतु पाया गया है जैसे प्रशिक्षण, प्रसारण, प्रबल आदि किन्तु यहाँ पर इसे दूषण अर्थात् दूषित, विकृत अथवा विकार युक्त के लिये प्रयुक्त किया गया है। जिस कारण प्रदूषण का अर्थ होगा **'विशेष तौर पर दूषित'** इस प्रकार पर्यावरण प्रदुषण का अर्थ हुआ **'चारों ओर का आवरण विशेष तौर पर दूषित'** वैसे तो पर्यावरण प्रदूषण का उपयोग पृथ्वी के संदर्भ में होता है किन्तु हम इसे मनुष्य के लिये ही उपयोग करें तो ज्यादा उचित होगा जो इस प्रकार कहलायेगा **'मनुष्य के चारों ओर का विशेषतौर पर दूषित वातावरण'**। यहाँ प्रश्न उपस्थित होगा कि मनुष्य ही क्यों? अन्य प्राणी भी तो हैं। प्रश्न उचित है किन्तु परमपिता परमात्मा ने इस संसार में असंख्य जीवात्माधारी योनियों को उत्पन्न किया, उन समस्त कृतियों में मनुष्य परमात्मा की सर्वश्रेष्ठ कृति है क्योंकि इसे परमात्मा ने मननशीलता का विशेष गुण प्रदान किया जिसके कारण ही यह सर्वश्रेष्ठ कृति होकर मनुष्य कहाया। मननशीलता के कारण यह विशेष तौर पर कार्यों को करने में सक्षम-समर्थ है।

परमपिता परमात्मा ने मननशीलता का गुण प्रदान करने के साथ मानव को स्वतंत्र भी रखा है। जब मानव इसका नकारात्मक उपयोग करता है तो पर्यावरण प्रदूषक बनता है और जब सकारात्मक उपयोग करता है तो पर्यावरण मित्र बनता है। अन्य प्राणी मनुष्य के किये गये अच्छे-बुरे कार्यों पर आश्रित तथा प्रभावित होते हैं।

इस प्रकार निष्कर्ष प्राप्त होता है कि मनुष्य के चारों ओर का वातावरण समूचे संसार को प्रभावित करता है वर्तमान में पर्यावरण प्रदूषण का अर्थ यह मान लिया गया है कि जलवायु का दूषित होना। प्राणी मात्र के जीवन में जल और वायु का विशेष महत्व है इन दो तत्वों से मिलकर ही जलवायु बना है। किन्तु मनुष्य के चारों ओर के वातावरण में और भी अनेक घटक ऐसे हैं जो मनुष्य के कार्यों को प्रभावित करते हैं और उन कार्यों के परिणाम स्वरूप ही मनुष्य के चारों ओर का वातावरण सुखद और दुःखद निर्मित होता है।

करीब १५० वर्ष पूर्व जब पाश्चात्यीकरण के भौतिक विकास की आँधी आज जितनी नहीं थी। जिस कारण जलवायु प्रदूषण भी उतना गम्भीर विषय नहीं था जितना आज है किन्तु उस समय परतंत्रता जनित अशिक्षा और अभाव के कारण आध्यात्मिक सांस्कृतिक, सामाजिक और वैचारिक प्रदुषण चरम पर था। चहूँ ओर अंधविश्वास, पाखण्ड, छुआ-छूत, नारी-उत्पीड़न, सामाजिक कुरीतियाँ, वैचारिक संकीर्णता, निरक्षरता, शोषण, अभाव व्याप्त था।

ऐसे समय में मानवता के पुजारी, युग प्रवर्तक महर्षि देव दयानन्द सरस्वती ने समस्त समस्याओं का कारण वेद ज्ञान से मानव का विमुख होना पाया तथा मानव मात्र को सूत्र दिया **'वेदों की ओर लौटो'**। वेदोक्त अज्ञानता को नष्ट कर वेदोक्त ज्ञान के प्रचार-प्रसार निमित्त उन्होंने १८७५ में आर्य समाज की स्थापना की। आर्य समाज का छठा नियम आर्य समाज के कार्यों को इस प्रकार स्पष्ट करता है **'संसार का उपकार करना इस**

वेद मंत्र एवं भावार्थ

ओ३म् विश्वे देवासो अस्रुरः सुतमागन्त तूर्णयः।
उस्रा इव स्वसराणि।। ऋग्वेद १/३/८

भावार्थ -इस मन्त्र में उपमालंकार है। ईश्वर ने जो आज्ञा दी है इसको सब विद्वान् निश्चय करके जान लेवें कि विद्या आदि शुभ गुणों के प्रकाश करने में किसी को कभी थोड़ा भी विलम्ब वा आलस्य करना योग्य नहीं है। जैसे दिन की निकासी में सूर्य्य सब मूर्तिमान् पदार्थों का प्रकाश करता है, वैसे ही विद्वान् लोगों को भी विद्या के विषयों का प्रकाश सदा करना चाहिए। **-महर्षि दयानन्द सरस्वती**

वैदिक संसार के उद्देश्य

* महान् योगी संन्यासी, महर्षि, अखंड ब्रह्मचारी, वेद प्रतिष्ठापक, तत्वज्ञानी, युगदृष्टा, स्वराष्ट्रप्रेमी, नवजागरण के सूत्रधार, अछूत एवं महिला उद्धारक, समाज सुधारक, खंडन-मंडन के प्रणेता, अंधविश्वास नाशक, पाखंड खंडनी ध्वजा वाहक, आर्य समाज संस्थापक, सत्यार्थ प्रकाश एवं सद्साहित्य प्रकाशक, दयालु, दिव्य दयानंद के समस्त मानव जाति पर किए गए उपकारार्थ कार्यों को गतिमान बनाए रखने हेतु प्रयत्न करना।
* वेदों की महत्ता को पुनर्स्थापित करने हेतु वैदिक सिद्धांतों, ऋषि दयानंद प्रणीत संदेशों को प्रकाशित करना।
* आमजन में व्याप्त अशिक्षा, धर्मान्धता, अंधविश्वास, पाखंड, कुरीतियों के विरुद्ध जनजागरण कर उन्मूलन हेतु प्रयास करना।
* आर्य (श्रेष्ठ) विद्वान् महानुभावों के मन्तव्यों, संदेशों का प्रचार-प्रसार कर प्रतिजन को उपलब्ध करवाना।
* आवश्यक सूचनाओं, गतिविधियों, समाचारों को प्रतिजन तक पहुँचाने का प्रयास करना।

समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।'

महर्षि की दिव्य दृष्टी में संसार के उपकार को शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति में केन्द्रित किया गया है अर्थात् संसार की समस्त समस्याओं का समाधान अगर करना है तो व्यक्ति की शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना होगी। इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति की उन्नति होगी तो समस्त समस्याओं का समाधान होकर व्यक्ति का ही नहीं सम्पूर्ण संसार का उपकार हो जावेगा। जलवायु प्रदूषण की भी समस्या फिर पृथक् नहीं रह उसका भी समाधान स्वतः हो जाएगा।

शंकराचार्य स्वरूपानन्द जी सरस्वती का साईं पूजा तथा साईं बाबा को राम-कृष्ण से जोड़ने के विषय में दिये गये व्यक्तव्य के बाद शंकराचार्य जी के विरोधी एवं उनके कथन के समर्थन में समर्थक पक्ष-विपक्ष बनकर आ डटे हैं और परस्पर वाक् युद्ध से आगे बढ़कर पुतलादहन, धरना, प्रदर्शन, न्यायालयीन कार्रवाइयाँ आदि हो रहे हैं। आध्यात्मिक जगत् में घटित होने वाली यह कोई नई घटना नहीं है। कभी आसाराम बापू, कभी निर्मल बाबा, कभी भूमि में हजारों टन का खजाना दबे होने की भविष्यवाणी, कभी सृष्टि के विनाश की भविष्य वाणी, कभी गणेश जी के दूध पीने की घटना, कभी स्वामी अग्निवेश जी द्वारा अमरनाथ यात्रा को पाखण्ड करार देना तथा भगदड़ में दबने-कुचलने, डूबने-बहने आदि अनेक प्रकार की समय-समय पर घटित होने वाली वे घटनाएँ तथा दुर्घटनाएँ हैं जो विश्व समुदाय का ध्यान आकर्षित करती हैं तथा एक घटना का गुबार थमता नहीं है कि दूसरी घटना का गुबार पहली घटना के गुबार पर छा जाता है।

वेदों की और लौटो
-महर्षि दयानन्द सरस्वती

इसके अतिरिक्त तथा कथित बाबाओं के मानवता को शर्मसार करते कारनामें और अंधविश्वास, पाखण्ड के चलते क्षेत्रीय सुर्खियाँ बटोरने वाली घटित-घटनाओं की गिनती कर पाना दुष्कर कार्य है। मनुष्य जीवन में आने वाले दुःखों को दूर करने, मनचाहा जीवन साथी पाने, व्यापार-व्यवसाय अच्छा चलाने, नौकरी पाने, प्रतिपक्षियों को हानी पहुँचाने, सुख शांति पाने की, तंत्र-मंत्र, टोने-टोटके की दुकानें चहूँ ओर खुली हुई हैं तथा इन दुकानों के दुकानदारों जिन्हें तथाकथित धर्म के ठेकेदार अथवा ईश्वर के एजेण्ट (प्रतिनिधि) भी कहा जावे तो कम है, इनके अखबारों एवं दूरदर्शन चेनलों पर धड़ुले से विज्ञापनों की बाढ़ आयी हुई है। इनसे कोई पूछने वाला नहीं है कि भैया यह सब कैसे कर रहे हो? क्या इसको करने की कोई योग्यता तुम्हारे पास है भी, इन दुकानों को संचालित करने का कोई प्रमाण पत्र ईश्वर ने दिया है अथवा सरकार ने? आये दिन नित नये धार्मिक हीरो (तथाकथित गुरू) आध्यात्मिक पटल पर उभरते हैं जिनके द्वारा सुनियोजित तरीके के अपने मंदिर, आश्रम, मठ, प्रचारकों का जाल खड़ा कर स्वयंभू ईश्वर के अवतार तथा संसार के एक मात्र उद्धारक, गुरू बनकर समस्त संसार के कल्याण की नहीं केवल और केवल अपनी शरण में आने वाले शिष्यों के समस्त पाप नष्ट करने, दुःख हरने, सुख-शांतिमय जीवन करने के साथ इस जीवन का तो उद्धार ठीक मरने के बाद स्वर्ग प्राप्ति की भी ग्यारण्टी दी जाती है।

आज कोई व्यक्ति ऐसा रिक्त नहीं मिलता जो किसी मत-पंथ (व्यक्ति आधारित विचारधारा) तथाकथित धार्मिक संस्थान तथा धर्मगुरू की गिरफ्त में न हो। चारों और भण्डारों, तीर्थ यात्राओं, सत्संगों, धार्मिक पर्वों आदि आयोजनों की भरमार है। ऐसा प्रतित होता है जैसे समूचा संसार धर्ममय हो गया है। इसके बावजूद हत्याओं, आत्महत्याओं, संवेदनहिनता, व्यभिचार, ठगी, चोरी, लूटमारी, बेईमानी ने सारे रिकॉर्ड तोड़ दिये हैं और ये हालात वहाँ है जिसे समूचे संसार में विश्वगुरू का सम्मान प्राप्त था। जहाँ से आध्यात्मिक आत्मिक उन्नति का वह प्रवाह-प्रवाहित होता था जो समूचे संसार को मानवता का पाठ पढ़ाकर इहलोक और परलोक को प्रगतिगामी बनाकर परमानन्द की ओर अग्रसर करता था।

समूचे संसार ने देखा कि शंकराचार्य के वक्तव्य पर सामान्य जनों द्वारा इस प्रकार की प्रतिक्रियाएँ व्यक्त की गईं कि शंकराचार्य कौन होते हैं साईं की पूजा से रोकने वाले? शंकराचार्य को किसने यह अधिकार दिया की हम किसकी पूजा करें और किसकी पूजा नहीं करें? शंकराचार्य ने साईं की पूजा पर प्रश्न उठाकर हमारी आस्था एवं श्रद्धा को ठेस पहुँचाई है आदि-आदि।

आध्यात्मिक क्षेत्र की पूर्व वर्णित स्थिति एवं शंकराचार्य जी के वक्तव्य पर व्यक्त की गई प्रतिक्रियाएँ हमारे आध्यात्मिक पतन की ओर इंगित करती हैं क्योंकि शंकराचार्य पद पर आसीन व्यक्ति वह धर्माधिकारी होता है जिसे धर्म का सम्पूर्ण ज्ञान भले ही न हो किन्तु वह धर्म विषय का अल्पज्ञानी भी नहीं होता और धार्मिक क्षेत्र में जीवन खपा देने से दीर्घ अनुभवों की धार्मिक परिपक्वता प्राप्त वह व्यक्तित्व होता है जिसके कंधों पर ईश्वर, धर्म, मनुष्य जीवन, सृष्टि, कर्मफल तथा शास्त्रोक्त ज्ञान के गुढ़ जटिल रहस्यों पर सामान्य जन को मार्गदर्शन देने का अहम् दायित्व होता है जबकि सामान्य जन उसे कहते हैं जो ईश्वर, धर्म, सृष्टि, कर्मफल का शास्त्रोक्त ज्ञान तो दूर मनुष्य जीवन और मनुष्य जीवन के लक्ष्य को भी ठीक तरह नहीं जान पाता और उसे इन विषयों के गुढ़ज्ञान की पिपासा को शांत करने हेतु शंकराचार्य जैसे धर्माचार्यों की शरण में जाना पड़ता है। यही कारण है कि भौतिक संसाधनों से आत्मिक संतुष्टि नहीं पाने के कारण विश्व समुदाय भारत की ओर मनुष्य जीवन के परम लक्ष्य परम आनन्द की प्राप्ति के लिये भागता है। उपरोक्त प्रकरण में जितने साईंभक्त दोषी हैं उससे अधिक शंकराचार्य जी भी दोषी हैं क्योंकि साईंभक्त धार्मिक अज्ञानता से ग्रसित हैं किन्तु शंकराचार्य का काल २३०० वर्ष का हो जाने के बाद भी संसार में धार्मिक अज्ञानता क्यों है? शंकराचार्य से लेकर उस परम्परा में नियुक्त सभी शंकराचार्य क्या केवल पीठाधीश्वर ही बनते रहे? क्या उन्होंने धर्म के गीरते स्वरूप की रक्षा करने के लिए क्या कार्य किया? आज आध्यत्मिक जगत् के समक्ष जो विकट परिस्थितियाँ उत्पन्न होती हैं उसका दोष किनको दिया जावे? साईंभक्त तो अधिकांश वे लोग हैं जो शंकराचार्य के भक्त हैं क्योंकि शंकराचार्य की परम्परा में ३३ करोड़ देवताओं के महासागर की मान्यता है। अब इस ३३ करोड़ देवताओं के महासागर में गोते लगाते-लगाते उनका भक्त अगर दो-चार साधारण मनुष्यों को भी ईश्वर, भगवान तथा देवता मान लेवे अथवा दो-चार भूमि में दफन पीर-फकीरों पर भी अपनी आस्था बना लेवे तो बताओ क्या किया जावे? १५० वर्ष पूर्व गुजरात के टंकारा ग्राम में जन्मे मूलशंकर ने मात्र १३ वर्ष की अल्पायु में शिवलिंग पर चढ़े चूँहे को देखकर यह निर्णय दे दिया कि यह सच्चा शिव नहीं हो सकता तथा उन्होंने सत्य को खोजने और अन्यों को

सत्य से लाभान्वित करने के लिये अपना जीवन होम कर दिया। मूलशंकर से महर्षि दयानन्द सरस्वती बने दयानन्द ने सत्य जाना कि वैदिक धर्म सत्य सनातन है और वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। आज महर्षि द्वारा स्थापित आर्य समाज तथा वैदिक मान्यताओं से जुड़े लोग समूचे संसार में है, शंकराचार्य जी भी अच्छी तरह जानते हैं कि साईं भक्तों की भीड़ में ऋषि दयानन्द भक्त अथवा आर्य समाजी एक भी नहीं मिलेगा। इसका कारण भी शंकराचार्य जी बेहतर जानते हैं कि ऋषि दयानन्द भक्त आर्य समाजी भली भाँति जानते हैं कि **इस समूची सृष्टि का निर्माणकर्ता एक ईश्वर है जो कभी उत्पन्न नहीं होकर निराकार है तथा देवता ३३ करोड़ नहीं मात्र ३३ (आठ वसु, ग्यारह रूद्र, बारह आदित्य, एक इन्द्र तथा एक प्रजापति) है। ये समस्त देवता जड़ तथा माता-पिता विद्वान् भी चेतन देवता तथा जीवात्मा को पूर्व जन्म कृत श्रेष्ठ कृत्यों के आधार पर भग् (सकल ऐश्वर्य) प्रदान करता है। भग् प्राप्त जीवात्मा भगवान की श्रेष्ठ पदवी को धारण करती है।** ऋषि ने सन्देश दिया वेदों की और लौटों तथा वेद का सन्देश **कृण्वन्तो विश्वमार्यम्** अर्थात् समस्त संसार को वेदानुकूल श्रेष्ठ बनाओं दिया। शंकराचार्य जी जैसे धर्माचार्यों ने इस तथ्य को स्वीकार कर संसार को श्रेष्ठ बनाने की दिशा में कार्य किया होता तो आज ये दिन देखने नहीं पड़ते। हम शंकराचार्य जी तथा साईंबाबा के पक्ष-विपक्ष में कोई निर्णय नहीं दे रहे। हम तो मात्र शंकराचार्य जी जैसे एक महत्वपूर्ण धर्माधिकारी एवं सामान्य जन की स्थिति को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर निर्णय पाठकों पर छोड़ हमारा मुख्य उद्देश्य आध्यात्मिक प्रदूषण की ओर ध्यान दिलाना भर है।

वेदोऽखिलो धर्ममूलम्

जब भी इस तरह का प्रकरण उठता है तो प्रश्न सामान्यजनों की आस्था, श्रद्धा और भावनाओं का उठता है तथा न्यायालय के दरवाजे तक खट्खटाये जाते हैं तथा न्यायालयों के भी निर्णय इस प्रकार देखे-सुने गये हैं कि व्यक्ति स्वतंत्र है वह अपनी भावनाओं को किस प्रकार व्यक्त करे तथा वह किस पर आस्था, श्रद्धा रखे। **बड़ा जटिल विषय है कि एक सामान्य व्यक्ति जो सत्य-असत्य का निर्णय करने में सक्षम नहीं है वह धर्म-अधर्म के विषय में कैसे निर्णय कर पायेगा ?** उसे इसका ठोस धरातल तलाशने के लिये एक परिपक्व व्यक्तित्व की परामर्शदाता के रूप में आवश्यकता होगी। ठीक उसी तरह जब एक बालक अथवा नवयुवक जीवन के महत्वपूर्ण निर्णय अभिभावकों के परामर्श के बगैर अथवा विपरीत लेता है तो उसमें त्रुटियों की संभावना अधिक होकर उस युवक के लिये गये स्वतंत्र निर्णयों को स्वतंत्रता का नाम नहीं देकर उसे स्वच्छंदता का नाम दिया जाता है। इसी प्रकार मानव परिवार के अभिभावक धर्माधिकारी होते हैं जो सामान्य जन जिसे अबोध-अज्ञानी भी कहा जाए तो गलत नहीं होगा क्योंकि धर्म जो मनुष्य जीवन का महत्वपूर्ण अंग है। धर्म उसे कहते हैं जो मनुष्य जीवन को सदाचार पथगामी बना दे। इस धर्म विषय को ठीक तरह पूर्ण रूपेण समझने के लिये सामान्य जन धर्माचार्यों पर आश्रित होता है। प्रश्न उठता है भावनाओं का, क्या चाय बनाते समय चिनी की भावना कर चाय में नमक डाल देने से चाय में मीठापन आ जावेगा? उत्तर प्राप्त होगा नहीं! क्योंकि **चिनी में मिठास की और नमक में खारेपन की भावना सत्य है किन्तु नमक में मिठास की और चिनी में खारेपन की भावना करना असत्य भावना है इससे निर्णय प्राप्त होता है तदानुकूल भावनाओं के परिणाम सार्थक प्राप्त होते हैं असत्य आधारित भावनाओं के नहीं।**

इसी प्रकार **श्रद्धा शब्द का अर्थ है सत्य को धारण करना।** असत्य भावनाएँ विकसीत करना तथा कार्य को ठीक प्रकार जाने-विचारे बिना करना श्रद्धा नहीं हो सकता। श्रद्धा, आस्था, भावना वे तत्व हैं जो मनुष्य जीवन में जब प्रवेश करते हैं तो इनका सम्बन्ध स्वार्थ से नहीं होकर मनुष्य की आत्मा से स्थायी रूप से होता है जिसका परिणाम मनुष्य के कार्य-व्यवहार में स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। बगैर पड़ताल किये, बिना सोचे-विचारे, किसी पर श्रद्धा करना अंधश्रद्धा कहलाता है तथा स्वार्थ आधारित श्रद्धा स्थायी नहीं होती क्योंकि श्रद्धा रखने मात्र से कार्य सिद्ध नहीं होता। कार्य सिद्ध होते हैं सत्य आधारित मर्यादित कार्य-व्यवहार से। जब कार्य सिद्ध नहीं होते हैं तो स्वार्थ आधारित श्रद्धा को भंग होते भी देर नहीं होती तथा अमर्यादित स्वार्थ भावनाओं का कोई अंत नहीं होता वे बढ़ती चली जाती हैं जिनकी पूर्ति असंभव है। अत: स्वार्थ आधारित भावनाओं के साथ श्रद्धा, आस्था का तालमेल असंभव है। यहाँ हमें यह भी विचार करना होगा कि स्वार्थ और श्रद्धा की प्रकृति भिन्न-भिन्न है। श्रद्धा की प्रकृति निष्कपट, निश्चल, निर्मल होती है जबकि स्वार्थ में, राग, द्वेष, कपट तथा चंचलता का खतरा सर्वाधिक होता है।

इस प्रकार हम निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि वर्तमान में आध्यात्मिक वातावरण दूषित है। आध्यात्मिक प्रदूषण को ठीक-ठीक जानने के लिये हमें धर्म-अधर्म के विषय में जानना होगा, मनुष्य द्वारा सामाजिक मर्यादाओं के अंतर्गत किया जाने वाला कार्य-व्यवहार जिसकी अपेक्षा वह औरों से अपने लिये करता है और जिसके करने से व्यक्ति ऊर्जा, उमंग, उल्लास का अनुभव करे वह धर्म और इसके विपरीत किया जाने वाला कार्य-व्यवहार जिसके करने से व्यक्ति के अंतरमन में भय, लज्जा, संकोच उत्पन्न हो वह अधर्म है। प्रश्न उठता है विशुद्ध धर्म की प्राप्ति कहाँ से होगी ? तो मनु महाराज ने अपने द्वारा रचयित पुस्तक मनुस्मृति में लिखा है **'वेदोऽखिलोधर्म मूलम्'** अर्थात् वेद धर्म के मूल हैं। धर्म का मूल जब वेद को बताया गया है तो संसार के मानवों को वेद का पढ़ना आवश्यक है अन्यथा धर्म की प्राप्ती नहीं हो सकती। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज के दूसरे नियम में लिखा है कि **वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।** यहाँ आर्यों से तात्पर्य किसी जाति से नहीं होकर उन मनुष्यों से है जिनके गुण कर्म-स्वभाव श्रेष्ठ हो।

अब प्रश्न उत्पन्न होता है कि वर्तमान समय में कितने लोग वेद पढ़ रहे हैं ? उत्तर प्राप्त होगा अपवाद स्वरूप कुछेक। प्रश्न उत्पन्न होता है **मनुष्य जीवन का आधार धर्म और धर्म का मूल वेद होने के बावजूद भी मानव वेद क्यों नहीं पढ़ रहा ? उसे वेद पढ़ने में क्या बाधा है ?** तो उत्तर प्राप्त होगा वह वेद की भाषा ही नहीं जानता। प्रश्न उत्पन्न होते हैं वेद की भाषा कौन-सी है ? तथा वह वेद की भाषा क्यों नहीं जानता ? उत्तर प्राप्त होता है वेद की भाषा वैदिक संस्कृत है तथा वह भाषायी प्रदूषण से ग्रसित

हो संस्कृत से विमुख हो गया है। कहा भी गया है कि **व्यक्ति को संस्कारवान् संस्कार बनाते हैं और संस्कार संस्कृति से प्राप्त होते हैं तथा संस्कृति की जननी संस्कृत है।**

इस प्रकार हमने जाना कि आध्यात्मिक जगत् में घटित घटनाओं, वैचारिक अनैक्यता तथा एकेश्वरवाद के स्थान पर अनेकेश्वर एवं अनिश्वरवाद के प्रमुख कारण आध्यात्मिक प्रदूषण तथा आध्यात्मिक प्रदूषण का प्रमुख कारण हमारे भाषा ज्ञान का प्रदूषण है।

यह सर्वविदित तथ्य है कि भाषा का ज्ञान शैक्षणिक व्यवस्था से होता है। **हमारे विश्वगुरू के पदारूढ़ होने का प्रमुख आधार हमारी गुरूकुलीय शिक्षा पद्धति थी। गुरूकुल में विद्वान् आचार्यों के सानिध्य में संस्कृत भाषा से समृद्ध होकर व्यक्ति वेद, उपवेद, शास्त्र, ब्राह्मणग्रन्थों, उपनिषदों, स्मृतियों का ज्ञान ग्रहण करता था तब जाकर वह मानव से मनुष्य बनता था।** जिसका सरल अर्थ है मनुष्य का अपनी जड़ों से जुड़ाव। **आज मनुष्य शैक्षणिक भाषायी और आध्यात्मिक प्रदूषण का शिकार होकर अपनी जड़ों से कट गया है।** आइये ऋषि प्रणित शरीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति के सन्देश को ठीक-ठीक समझें और मानव मात्र के मूल वैदिक धर्म अर्थात् मनुष्यत्व की जड़ों से जुड़ने का प्रयास करें।

शारीरिक उन्नति

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति क्या है और कैसे होगी ?

शारीरिक उन्नति :- वैसे तो मनुष्य की उन्नति का सबसे महत्वपूर्ण विषय है आत्मिक उन्नति। मनुष्य की आत्मिक उन्नति पर महर्षि ने स्थान-स्थान पर जोर दिया है। आत्मिक उन्नति को महत्वपूर्ण मानते हुए भी महर्षि ने शारीरिक उन्नति को प्रथम स्थान पर रखा है इससे महर्षि के दूरदृष्टा होने का प्रमाण मिलता है। कहा भी गया है **'प्रथम सुख निरोगी काया'।** आत्मा चेतन होकर अनादि और अनन्त है तथा शरीर जड़ होकर बनता और बिगड़ता है इस कारण आत्मा का स्थान सर्वोपरि है किन्तु आत्मा का निवास स्थान शरीर होने से शारीरिक उन्नति के बगैर आत्मिक उन्नति नहीं हो सकती। **शरीर स्वस्थ नहीं है शरीर में पीड़ा है तो ईश्वर की उपासना नहीं की जा सकती। ईश्वर की ठीक से उपासना नहीं होगी तो आत्मा और परमात्मा का योग कैसे होगा ?**

आत्मिक उन्नति

जब आत्मा परमात्मामय नहीं होगा तो आत्मिक उन्नति होना असंभव है अत: प्रदूषण का सर्वाधिक दुष्प्रभाव शरीर पर ही पड़ रहा है। मनुष्य के जीवन की औसत आयु लगातार घटती जा रही है। नित नये हतप्रभ कर देने वाले रोग अल्पायु में मनुष्य शरीर को ग्रसित कर रहे हैं। चिकित्सालयों तथा औषधि विक्रय केन्द्रों की बेतहाशा वृद्धि और इनके राशि जमा केन्द्रों पर रुपयों की गड्डियाँ हाथ में लिये कतारबद्ध लोगों की संख्या ऐसा दृश्य उपस्थित करती है जैसे मनुष्य जीवन और उसके जीवन में पैसा उत्पन्न करने का लक्ष्य संभवत: चिकित्सालयों में चिकित्सा करवाना भर रह गया है। अत्यंत कठिनाई से अपवाद स्वरूप कुछेक ही सौभाग्यशाली परिवार, ऐसे मिलेंगे जिन्हें चिकित्सक अथवा चिकित्सालय की आवश्यकता नहीं हो।

शारीरिक पतन का प्रमुख कारण है बदलती जीवन शैली

शारीरिक उन्नति का प्रमुख संबंध आहार और शयन से है। **वैदिक ज्ञान के अभाव में आज मनुष्य के ना तो आहार की कोई विधि है, न शयन की,** वैवाहिक जीवन तो बहुत दूर की बात है। भोजन क्या ग्रहण करना है, कब ग्रहण करना है कैसे ग्रहण करना है ? कुछ पता नहीं बस जिह्वा सुख के लिये ठूँस-ठूँसकर जो सामने आये उसे ठूँसे जा रहे हैं। इसी प्रकार अर्द्धरात्रि को शयन के समय टेलिविजन से व्यक्ति चिपका हुआ है या भ्रमण कर रहा है और **ब्रह्ममुहूर्त प्रात:काल चार बजे के स्थान पर सूर्य की किरणे पृथ्वी पर अपने तेज रूप में फैल जाने पर आठ-नौ बजे उठेगा तो प्रात: कालीन भ्रमण, आसन, प्राणायाम, ध्यान, शौच, ब्रह्मयज्ञ-देवयज्ञ कैसे करेगा ?**

शारीरिक पतन का एक और प्रमुख कारण है दूषित आहार, रासायनिक उर्वरकों एवं किटनाशकों के बढ़ते उपयोग से उत्पन्न अन्न, फल एवं सब्जियों के उत्पादन के कारण भी आज प्रत्येक व्यक्ति विष ग्रहण कर रहा है, पिछले दिनों दूरदर्शन पर समाचार आया कि सब्जियों का आकार बड़ा करने और शीघ्र उत्पादन हेतु कृषक जहरिले रसायनों के इंजेक्शन लगा रहे हैं, इस प्रकार उत्पादित सब्जियों का जब परिक्षण करवाया गया तो उनमें मनुष्य शरीर में घातक रोग उत्पन्न करने वाले तत्वों की मात्रा कई गुना अधिक पाई गई। इसके साथ ही आज का व्यक्ति **अनेक दुर्व्यसनों में फँसा हुआ है, तंबाकू-सुपारी सेवन तो मनुष्य जीवन में ऐसे घुल-मिल गये हैं जैसे इन्हें सामाजिक मान्यता दे दी गई है, ऐसे व्यक्ति रोगों से ग्रसित क्यों नहीं होंगे ?** तथा रोग से ग्रसित होने पर ऋग्वेद के उपवेद आयुर्वेद पर आधारित प्राकृतिक चिकित्सा जिसका कोई दुष्प्रभाव शरीर पर नहीं होता से न करवाकर आयातित महंगी विदेशी चिकित्सा पद्धति जिसमें विषैले रसायनों से निर्मित औषधियों का उपयोग होता है। जिनके दुष्प्रभाव में असाध्य बिमारियों से ग्रसित हो मृत्यु को प्राप्त होने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं रह जाता है। **इस प्रकार दूषित आहार और औषधियों से जिस शरीर को सर्वोत्तम धन कहा गया है वह शरीर विष भण्डार बनकर चिकित्सकों की मुद्रा छापने का स्त्रोत बनकर असमय ही नष्ट हो जाता है।**

आज मनुष्य योगवाद से विमुख होकर भोगवाद की ओर आकर्षित है। वह ब्रह्मचर्य (इन्द्रिय निग्रह) अर्थात् शारीरिक ज्ञानेन्द्रियों एवं कर्मेन्द्रियों को धर्मानुसार संयमीत रखना नहीं जानता, न ही जानना चाहता है। शारीरिक इन्द्रियों के क्षणिक सुख को ही उसने परम सुख मान लिया है। **इस प्रकार भोगी बन जाता है कि भोगते-भोगते एक समय वह स्वयं भुगतने की स्थिति में पहुँच जाता है।** वैदिक संस्कृति का संदेश **'तेन त्यक्तेन भुंजीथा....'** अर्थात् त्याग पूर्वक भोगने से उसे कोई लेना-देना नहीं है।

योगी अर्थात् वेदानुकूल संयमीत जीवन व्यतित करने वाला ही निरोगी रह शतायु को प्राप्त हो सकता है अन्यथा **भोगी का तो रोगी बन चिकित्सकों**

का कल्याण करते हुए अल्प समय में आकस्मिक इस संसार से बिदा होना निश्चित है।

ऐसे शारीरिक रोगियों से किस प्रकार परिवार, समाज और राष्ट्र का कल्याण हो सकता है? अत: शारीरिक उन्नति के बगैर संसार का उपकार नहीं हो सकता।

आत्मिक उन्नति :- आत्मिक उन्नति का अर्थ है आत्मा का बलवती होना। वर्तमान में हम देख रहे हैं कि अत्यंत अल्प आयु में अत्यंत मामूली बातों में आत्महत्याओं, हत्याओं व्यभिचार और विवादों की संख्या तथा मनुष्यों में संवेदनहिनता की घटनाएँ दिन-प्रतिदिन बढ़ रही हैं।

आत्मिक पतन का मुख्य कारण है मनुष्यों का वेद ज्ञान से विमुख होना। वेद ज्ञान से विमुख होने के कारण आत्मा क्या है? आज का मनुष्य जानता ही नहीं है। शारीरिक उन्नति विषय में हमने पूर्व में लिखा है कि शरीर आत्मा का निवास स्थान है। अत: मकान सर्वोपरि नहीं होता, सर्वोपरि तो शरीर रूपी मकान में निवास करने वाला आत्मा है। अत: मनुष्य जीवन में आत्मा मुख्य है। जब आत्मिक उन्नति होगी तो शारीरिक उन्नति स्वयमेव होना ही है क्योंकि आत्मा चेतन होकर क्रियाशील है। वर्तमान में अधिकांश समस्याओं का कारण ही यह है कि मनुष्य आत्मा से अनभिज्ञ है। जब मनुष्य आत्मा से अनभिज्ञ होगा तो उसका आत्मा की उन्नति के लिये कोई प्रयास करने का कोई प्रश्न ही पैदा नहीं होगा यही कारण है कि आज मनुष्य संसार भर के समस्त खट्कर्म शरीर के लिये कर रहा है जैसे भोजन, वस्त्र, चिकित्सा आदि कार्यों के लिये धन एकत्रित करना। शरीर के लिये मकान, वाहन अन्य सुविधा के साधन जुटाना। तेल, साबुन, इत्र, उबटन आदि का उपयोग शरीर को सुन्दर बनाने के लिये करना किन्तु **वर्तमान के मनुष्यों से प्रश्न किया जावे की आत्मा की उन्नति तथा आत्मा को सुन्दर बनाने के लिये क्या कार्य किया?** तो कुछ अपवाद छोड़कर अधिकांश आपको विक्षिप्त समझेंगे क्योंकि उन्हें तो यह पता ही नहीं है कि उनके जीवन में आत्मा मुख्य है वे तो आत्मा से अनभिज्ञ होकर शरीर को ही सब कुछ समझ रहे हैं। इस प्रकार **जब आत्मा के विषय में वे जानते-समझते ही नहीं तो आत्मोन्नति के प्रयास करेंगे कैसे?** और बगैर जानकारी के प्रयास करेंगे भी तो वे सार्थक नहीं होकर निरर्थक होंगे जैसे आज का मनुष्य परमपिता परमात्मा कैसा है? कहाँ रहता है? क्या करता है? आदि बातों से अनभिज्ञ होने के बावजूद घंटे-घड़ियाल तथा नगाड़े बजा-बजाकर, चिख-चिखकर उसे पहाड़ों-कंदराओं, गुफाओं, जलाशयों तथा अपने द्वारा बनाये गये ईट-पत्थर-कांक्रिट के भव्य भवनों (मन्दिरों) में खोजकर पाने का प्रयास कर रहा है और वह भी इसलिये कि उसे परीक्षा, कोर्ट-कचहरी आदि में सफलता पाना है, उसके यहाँ सन्तान नहीं होने के कारण सन्तान पाना है, व्यापार-व्यवसाय अच्छा चले खुब रुपये प्राप्त हो इसलिये उसे प्रसन्न करना है, नौकरी नहीं मिल रही नौकरी पाने के लिये अधिकारी से पहले प्रभु को रिश्वत देना जरुरी है, पुत्र-पुत्री का विवाह नहीं हो रहा इसलिये उस प्रभु की वक्रदृष्टि को ठीक करना है, पड़ौसी के बंगले से बड़ा बंगला स्वयं का बन जावे तथा पड़ौसी लग्जरी कार ले आया है हमारा भी विदेशी कार लाने का सपना है इसलिये ईश्वर को पटाना जरुरी है। जैसे वह परमपिता परमात्मा जगत् नियन्ता, जग का पालनहार न होकर उनका निजी सेवक हो और तुच्छ प्राणी मनुष्य के द्वारा बनावटी धन (मुद्रा), अल्प भोजन (भोग), क्षणिक अल्प प्रकाश (दीपक) और झूठ-मक्कारी-दुर्जनता से युक्त मन-मस्तिष्क की प्रशंसा (भजनों) का भुखा हो। जबकि उस अल्पज्ञानी मनुष्य को अपनी शक्ति सामर्थ्य एवं कर्मों का चिन्तन ही नहीं है। उसे पता ही नहीं है कि उसकी शक्ति सामर्थ्य परमपिता के सामने तुच्छ है तथा उसे यह भी पता नहीं है कि **परमपिता परमात्मा उसके जैसा स्वार्थी नहीं होकर शुद्ध तथा पवित्र है और सर्वत्र व्याप्त होने के बावजूद उसी अंत:करण को प्राप्त होता है जो शुद्ध और पवित्र है।**

आत्मा का मुख्य लक्ष्य है परमात्मा की प्राप्ति। आत्मा का परमात्मामय होने का नाम ही योग है अर्थात् आत्मा का परमात्मा से जुड़ जाना तथा रुग्ण आत्मा का परमात्मा से योग होना असंभव है। आत्मा बलवती होने के लिये आत्मा का भोजन है विचारों की पवित्रता, विचारों की पवित्रता के लिये आवश्यक है वैदिक योगदर्शन के अष्टांग सूत्रों यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधी का पालन। जब योगदर्शन के अष्टांग सूत्रों का यथावत पालन होगा तो आत्मिक उन्नति होगी और जब आत्मिक उन्नति होगी तो मनुष्य का जीवन विधि पूर्वक होकर उसकी शारीरिक उन्नति भी स्वमेव होती चली जावेगी।

सामाजिक उन्नति:- समाज का अर्थ समान रूप से उत्पत्ति होने वालों का समूह दूसरे अर्थों में समान विचारधारा अथवा समान, गुण, कर्म, स्वभाव वाले लोगों का समूह जब संसार में मनुष्यों की शारीरिक और आत्मिक उन्नति होकर दुर्व्यसन मुक्त स्वस्थ हृष्ट-पुष्ट शरीर के आत्मिक बल से युक्त वैचारिक सुदृढ़ता प्राप्त मनुष्यों की वृद्धि होगी तो नि:संदेह मानव समाज की सामाजिक उन्नति होगी और जब मनुष्य शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति को प्राप्त होगा तो स्वत: संसार का उपकार हो जावेगा।

ऋषि के इन सन्देशों को प्राप्त कर ही इस धरा का मानव सुसुप्तावस्था और नैराश्यता को त्याग जागृतावस्था को अग्रसर हुआ और अनार्य अंग्रेजों की दासता से मुक्त हुआ किन्तु अत्यन्त विडम्बना का विषय है कि स्वतंत्रता प्राप्ती के ६७ वर्षो के बाद भी विश्व का मार्गदर्शन करने वाला यह भू-भाग अपनी जड़ों से नहीं जुड़ पाया और शैक्षणिक, भाषायी और आध्यात्मिक प्रदूषण से ग्रसित हो वेदोक्त ज्ञान के अभाव में अज्ञानता के गहरे अंधकार में भटक अनेकों प्रकार के प्रदूषणों के काल का ग्रास बन रहा है।

आओ शीघ्रातिशीघ्र ऋषि के पावन सन्देश **'वेदों की और लोटो'** को आत्मसात करें और वेदों की ओर लौट चलें और विश्वगुरू का दायित्व पुन: निर्वाह करें।

(इस विषय को और अधिक विस्तार से जानने के लिये पृष्ठ-२१ पर पढ़े **'शंकराचार्य के निशाने पर सांईबाबा'**) ●

जब संशय हो, तो अगला कदम छोटा लें। अधिक अच्छा तो यह है, कि 'पहले संशय को दूर कर लें, फिर कदम बढ़ाये। -दर्शन योग महाविद्यालय

वेद धर्म के मूल हैं

वेदामृतम्

प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्ता।
आध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चिद्राजा चिद्यं भगं भक्षीत्याह।। (यजु. ३४/३५)

पदार्थ :- हे मनुष्यों! **(प्रात:)** पाँच घड़ी रात्रि रहे **(जितम्)** जयशील परमात्मा को अथवा **(प्रातर्जितम्)** प्रात: काल ही उत्तमता से प्राप्त होने के योग्य को **(भगम्)** ऐश्वर्य के दाता ईश्वर को **(अदिते:)** अन्तरिक्ष के **(उग्रं पुत्रम्)** तेजस्वी पुत्ररूप सूर्य की उत्पत्ति करने हारे को और **(य:)** जो कि सूर्यादि लोगों का **(विधर्ता)** विशेष करके धारण करने हारा **(आध्र:)** सब और से धारण कर्ता अथवा जो कि सूर्यादि लोकों का **(विधर्ता)** विशेष करके धारण करने हारा **(आध्र:)** सब और से धारण कर्ता अथवा जो सबके द्वारा सब ओर से धारण किया जाता है अथवा अपुत्र का पुत्र या असहाय का रक्षक या न्यायादि में तृप्ति न करने वाले का पुत्र **(यं चित्)** जिस किसी को भी **(मन्यमान:)** जानने हारा परमेश्वर है **(तुरश्चित्)** दुष्टों को भी दण्ड दाता या शीघ्रकारी भी और **(राजा)** सब का प्रकाशक है, **(यम्)** जिस **(भगम्)** भजनीयस्वरूप को **(चित्)** भी **(भक्षीति)** इस प्रकार सेवन करता हूँ, और इसी प्रकार भगवान् परमेश्वर सब को **(आह)** उपदेश करता है कि तुम जो मैं सूर्यादि जगत् का बनाने और धारण करने हारा हूँ, उस मेरी उपासना किया और मेरी आज्ञा में चला करो, इससे **(वयम्)** हम लोग उस की **(हुवेम)** स्तुति करते हैं।

-स. वि. .ऋषि दया. कृत वेदभाष्य

भावार्थ-(१):- हे मनुष्यों! तुम लोगों को सदा प्रात: काल से लेकर सोते समय तक यथाशक्ति सामर्थ्य से विद्या और पुरूषार्थ से ऐश्वर्य की उन्नति कर आनन्द भोगना और दरिद्रों के लिये सुख देना चाहिये यह ईश्वर ने कहा है। -ऋ. दया. कृत यजु. भाष्य अ. ३४/मं. ३५

(२) :- मनुष्यों को चाहिये कि प्रात: समय उठकर सब के आधार परमेश्वर का ध्यान करके सब करनेयोग्य कामों को नाना प्रकार से चिन्तन कर धर्म और पुरूषार्थ से पाये हुए ऐश्वर्य को भोगें व भोगावें यह ईश्वर उपदेश देता है। -ऋ. दया. कृत. ऋ. भाष्य मं. ७/४१/२

टिप्पणी :- (क) ईश्वर जयशील है जीतने के स्वभाव वाला है कभी हारता नहीं है। मनुष्य अल्पज्ञ अल्पसामर्थ्य वाला होने से काम, क्रोध, लोभ, मोहादि आन्तरिक शत्रुओं से परास्त होकर कामी, क्रोधी, लोभी हो जाता है परन्तु ईश्वर सर्वदा विद्यायुक्त रहने के कारण कभी काम, क्रोध, लोभादि के वश में नहीं होता। मनुष्य के बाह्य शत्रु वे मनुष्य हैं जो उससे द्वेष करते हैं, उसके अच्छे कार्यों का विरोध करते हैं, उनमें बाधा डालते हैं। कुछ मनुष्य इन बाह्य शत्रुओं से परास्त होकर अच्छे कार्यों को करना छोड़ देते हैं व जैसा उसके शत्रु कहते मानते हैं उसका समर्थन करना प्रारम्भ कर देते हैं। ईश्वर के शत्रु हैं जो उसकी आज्ञा का पालन नहीं करते, जो उसके सर्वहितकारक कार्यों में बाधा डालते हैं अर्थात् पापी, दुष्टजन। जब संसार में पापी, हिंसक दुष्टों को धनादि ऐश्वर्य, मान प्रतिष्ठादि प्राप्त होती है तो लगता है कि वे जीत रहे हैं, ईश्वर का उनके ऊपर कोई वश नहीं चल रहा। परन्तु वस्तुत: सुख-दु:ख का सम्बन्ध आत्मा में होता है उनके आत्मा में अविद्या, अविवेक होने के कारण बाह्य साधनों से सुसज्जित होने पर भी वे दु:खी, अशान्त, चंचल, तनावयुक्त, भयभीत, असहनशील रहते हैं, उनकी आत्मा में आनन्द नहीं होता। मनुस्मृति में कहा है-

अधर्मेणैधते तावत्ततो भद्राणि पश्यति।
तत: सपत्नांजयति समूलस्तु विनश्यति।। (मनु.)

इसका अर्थ सत्यार्थ प्रकाश में ऐसे दिया है कि - जब अधर्मात्मा मनुष्य धर्म की मर्यादा छोड़ (जैसे तालाब के बंध को तोड़ जल चारों ओर फैल जाता है वैसे) मिथ्याभाषण, कपट, पाखण्ड अर्थात् रक्षा करने वाले वेदों का खण्डन और विश्वासघातादि कर्मों से पराये पदार्थों को लेकर प्रथम बढ़ता है। पश्चात् धनादि ऐश्वर्य से खान-पान, वस्त्र, आभूषण, यान, स्थान, मान, प्रतिष्ठा को प्राप्त होता है। अन्याय से शत्रुओं को भी जीतता है, पश्चात् शीघ्र नष्ट हो जाता है। जैसे जड़ काटा हुआ वृक्ष नष्ट हो जाता है वैसे अधर्मी नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है। इस रूप में भी ईश्वर अधर्मी को हराता है। अत: पापी व्यक्ति सदा आनन्द से रहित रहता है व बाह्य साधन भी उसके कालान्तर में छिन लिये जाते हैं। यह उसकी हार है।

(ख) सूर्य को अन्तरिक्ष का पुत्र कहते हैं। क्योंकि जैसे पुत्र माता के शरीर में उत्पन्न होता है उसी प्रकार सूर्य अन्तरिक्ष में उत्पन्न होता है।

(ग) ईश्वर **'आध्र:'** है क्योंकि (१) ईश्वर अनाथ का नाथ है, असहाय का रक्षक है। ईश्वर वेदादि शास्त्रों के माध्यम से व आनन्द, उत्साहादि के द्वारा मनुष्यों को प्रेरणा देता है कि अनाथों, वृद्धों, रोगियों की सेवा में अपना, तन, मन, धन लगाओ। (२) संसार में जिसको न्याय नहीं मिलता जिसकी क्षतिपूर्ति नहीं होती ईश्वर के दरबार में उसे पूरा न्याय मिलता है। ईश्वर उसकी क्षति की पूर्ति कर देता है। अथवा संसार में मनुष्य को जिन अच्छे कर्मों का फल राजादि अधिकारी व्यक्ति प्रदान नहीं करता ईश्वर उसको उन अच्छे कर्मों का फल अवश्य देता है। (३) सब प्राणियों के द्वारा सब ओर से धारण किया जाता है कोई भी प्राणी ईश्वर के नियमों, व्यवस्थाओं की सहायता के बिना जीवित नहीं रह सकता।

(घ) ईश्वर की मनुष्यों को आज्ञा है कि हे मनुष्यों ! मैंने सूर्यादि जगत् को उत्पन्न किया है व धारण किया है, इसलिये तुम मेरी ही उपासना किया करो तथा मेरी आज्ञा का पालन किया करो।

-स्वामी ध्रुवदेव जी परिव्राजक (उपाध्याय)
दर्शन योग महाविद्यालय, आर्यवन रोजड़,
जिला-साबरकांठा (गुज.)
दूरभाष-(०२७७०)-२८७४१८,२८७५१८

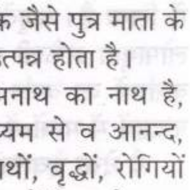

आवश्यकता से अधिक कमाएंगे तो ? मोह-माया में फँस जाएंगे।

गतांक से आगे

स्वामी दयानन्द और विज्ञान

अब हम स्वामी दयानन्द के वेद भाष्य के आधार पर आकाश और समय पर विचार करते हैं। स्वामी दयानंद सरस्वती का मानना है कि आकाश और समय आपस में जुड़े हुए हैं। इन्हें किसी भी तरह से अलग नहीं किया जा सकता है।

पूर्वे अर्द्धे रजसो अप्त्यस्य गवां जनित्र्यकृत प्रकेतुम्।
व्यु प्रथते वितरं वरीय ओभा पृणन्ती पित्रोरूपस्था।। ऋ. १/१२४/५

पदार्थ – जैसे प्रातः समय की वेला कन्या के तुल्य (**उभा**) दोनों लोकों की (**पृणन्ती**) सुख से पूरती और (**पित्रोः**) अपने माता पिता के समान भूमि और सूर्य मण्डल की (**उपस्था**) गोद में ठहरी हुई (**वितरम्**) जिससे विविध प्रकार के दुःखों से पार होते हैं उस (**वरीयः**) अत्यन्त उत्तम काम को (**वि, उ, प्रथते**) विशेष करके तो विस्तारती तथा (**गवाम्**) सूर्य की किरणों को (**जनित्री**) उत्पन्न करने वाली (**अप्त्यस्य**) विस्तार युक्त संसार में हुए (**रजसः**) लोक समूह के (**पूर्वे**) प्रथम आगे वर्तमान (**अर्द्धे**) आधे भाग में (**केतुम्**) किरणों को (**प्र, आ, अकृत**) प्रसिद्ध करती है।

भावार्थ – इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालंङ्कार है। प्रभात वेला से प्रसिद्ध हुआ सूर्य मण्डल का प्रकाश भूगोल के आधे भाग में सब कहीं उजाला करता है और दूसरे आधे भाग में रात्रि होती है। उन दिन-रात्रि के बीच में प्रातः समय की वेला विराजमान है। ऐसे निरन्तर रात्रि, प्रभातवेला और दिन क्रम से वर्तमान है। इससे क्या आया कि जितना पृथ्वी का प्रदेश सूर्य मण्डल के आगे होता है उतने में दिन और जितना पीछे होता जाता है उतने में रात्रि होती है तथा सायं और प्रातः काल की सन्धि में उषा होती है। इस उक्त प्रकार से लोकों के घूमने के द्वारा ये सायं-प्रातः काल भी घूमते से दिखलाई देते हैं। चूँकि पृथ्वी पश्चिम से पूर्व की ओर घूमते हुए सम्पूर्ण रूप सूर्य के सामने नहीं आती इससे सब स्थानों पर एक सा समय नहीं हो सकता अर्थात् समय आकाश के साथ बंधा हुआ है, संयुक्त है।

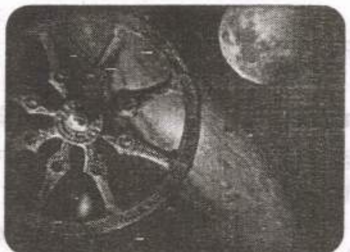

मैं समय चक्र हूँ

इसी धारणा को निम्न मन्त्र में व्यक्त किया गया है-

अपान्यदेत्यभ्य न्यदेति विषुरूपे अहनी सं चरेते।
परिक्षितोस्तमो अन्यागुहाकरद्यौदुषाः शोशुचता रथेन।। ऋ. १/१२३/७

पदार्थ – जो (**विषुरूपे**) संसार में व्याप्त (**अहनी**) रात्री और दिन एक साथ (**सं, चरेते**) सञ्चार करते अर्थात् आते जाते हैं उनमें (**परिक्षितोः**) सब ओर से वसने हारे अन्धकार और उजाले के बीच से (**गुहा**) अन्धकार से संसार को ढाँपने वाली (**तमः**) रात्रि (**अन्या**) और कामों में (**अकः**) करती तथा (**उषाः**) सूर्य से पदार्थों को तपाने वाला दिन (**शोशुचता**) अत्यन्त प्रकाश और (**रथेन**) रमण करने योग्य रूप से (**अद्यौत्**) उजेला करता (**अन्यत्**) अपने से भिन्न प्रकाश को (**अप, एति**) दूर करता तथा (**अन्यत्**) अन्य प्रकाश को (**अभ्येति**) सब ओर से प्राप्त होता इस सब व्यवहार के समान स्त्री पुरुष अपना वर्ताव वर्तें।

भावार्थ – इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालंङ्कार है। इस जगत् में अन्धेरा उजाला दो पदार्थ हैं जिनसे सदैव पृथ्वी आदि लोकों के आधे भाग में दिन और आधे में रात्रि रहती है। जो वस्तु अन्धकार को छोड़ता वह उजाले का ग्रहण करता और जितना प्रकाश अन्धकार को छोड़ता उतना रात्रि लेती, दोनों पारी से सदैव अपनी व्याप्ति के साथ पाये हुए पदार्थ को ढाँपते और

-शिवनारायण उपाध्याय
७३, शास्त्री नगर, दादाबाड़ी, कोटा (राज.)
चलभाष-०७४४२५०१७८५

दोनों एक साथ वर्तमान हैं। उनका जहाँ-जहाँ संयोग है वहाँ-वहाँ सन्ध्या और जहाँ-जहाँ वियोग होता अर्थात् अलग होते वहाँ रात्रि और दिन होते।

ऋ. १/१२३/८ के भावार्थ में स्वामी जी लिखते हैं – जैसे ईश्वर के नियम को प्राप्त जो हो गये होते और होने वाले रात्रि-दिन हैं उनका अन्यथापन नहीं होता, वैसे ही इस संसार के क्रम का विपरीत भाव नहीं होता अर्थात् दिन, सन्ध्या, रात्रि, उषा और दिन के क्रम में कभी भी बदलाव या परिवर्तन नहीं होगा। वास्तव में पृथ्वी पर दिन-रात्रि का समय सदैव व्याप्त रहता है।

द्वे विरूपे चरतः स्वर्थे अन्यान्या वत्समुप धापयेते।
हरिरन्यस्यां भवति स्वधावाञ्छुक्रो अन्यस्यां ददृशे सुवर्चाः।। ऋ.

पदार्थ – हे मनुष्य! जो (**विरूपे**) उजाले और अन्धेरे से अलग-अलग रूप और (**स्वर्थे**) उत्तम प्रयोजन वाले (**द्वे**) दो अर्थात् रात और दिन परस्पर (**चरतः**) वर्ताव वर्तते और (**अन्यान्या**) परस्पर (**वत्सम्**) उत्पन्न हुए संसार का (**उप धापयेते**) खान-पान कराते हैं (**अन्यस्याम्**) दिन और अन्य रात्रि में (**स्वधावान्**) जो अपने गुण से धारण किया जाता वह औषधि आदि पदार्थों का रस जिसमें विद्यमान है ऐसा (**हरिः**) उष्णता आदि पदार्थों का निवारण करने वाला चन्द्रमा (**भवति**) प्रकट होता है वा (**अन्यस्याम्**) रात्रि से अन्य दिवस होने वाली वेला में (**शुक्रः**) आतपवान् (**सुवर्चाः**) अच्छे प्रकार उजाला करने वाला सूर्य (**ददृशे**) देखा जाता है वे रात्रि-दिन सदैव वर्तमान हैं, इसको रेखा गणित आदि गणित विद्या से जानकर इनके बीच उपयोग करो।

भावार्थ – मनुष्यों को चाहिये कि दिन-रात कभी निवृत्त नहीं होते किन्तु सर्वदा बने रहते हैं अर्थात् एक देश में नहीं तो दूसरे देश में होते हैं।

अगले मन्त्र में आकाश की दशा-दिशाओं के विषय में बताया गया है। समय को जानकर उसका उचित उपयोग करना अत्यन्त आवश्यक है।

त्रीणि जाना परि भूषन्त्यस्य समुद्र एकं दिव्येकमप्सु।
पूर्वामनु प्र दिशं पार्थिवानामृतून् प्रशासद्वि दधावनुष्ठु।।

पदार्थ – हे गणित विद्या को जानने वाले मनुष्यों! जो दिन-रात (**पूर्वाम्**) पूर्व (**प्र दिशम्**) प्रदेश जिसका कि मनुष्य उपदेश किया करते हैं उसको (**अनुष्ठु**) तथा उसके अनुकूल (**पार्थिवानाम्**) पृथ्वी और अन्तरिक्षं में विदित हुए पदार्थों के बीच (**ऋतून्**) वसन्त आदि ऋतुओं को (**प्रशासत्**) प्रेरणा देता हुआ (**अनु**) तदन्तर उनका (**वि, दधौ**) विधान करता है (**अस्य**) इस दिन-रात का (**एकम्**) एक पाँव (**दिवि**) सूर्य में एक (**समुद्रे**) समुद्र में और (**एकम्**) एक (**अप्सु**) अर्थात् भूत, भविष्यत् और वर्तमान पृथक्भाव से उत्पन्न (**जाना**) मनुष्यों में हुए व्यवहारों को (**परि, भूषन्ति**) शोभित करते हैं इन सबको जानो।

भावार्थ – दिन-रात आदि समय के अङ्गों के वर्ताव के बिना भूत भविष्यत् और वर्तमान कालों की संभावना भी नहीं हो सकती और न इनके बिना किसी ऋतु का होना संभव है जो सूर्य और अन्तरिक्ष में गहरे हुए

पवन की गति से समय के अवयव अर्थात् दिन-रात्रि आदि प्रसिद्ध है उन सबको जानकर सब मनुष्यों को चाहिए कि व्यवहार सिद्धि करें।

अगले मन्त्र ऋ. १/९५/४ के भावार्थ में स्वामी जी लिखते हैं - मनुष्यों को यह जानना चाहिए कि जिसका सूक्ष्म से सूक्ष्म बोध है जो समस्त अपने अवयवों को प्रकट करता सब कामों में व्याप्त होता जिसमें सब जगत् एक रस रहता है उस समय को कोई विद्वान् जान सकता है सब कोई नहीं।

कोई भी कार्य बिना काल लगे हो जाना असंभव है -

त्वेषं रूपं कृणुत उत्तरं यत्संपृञ्चानः सदने गोभिरद्भिः।
कविर्बुध्नं परिमर्मृज्यते धीः सा देवताता समितिर्बभूव।। ऋ. १/९५/८

भावार्थ - मनुष्यों को जानना चाहिये कि काल के बिना कार्य स्वरूप उत्पन्न और नष्ट हो जाय यह होता ही नहीं। इसी को आधार मानकर समय की परिभाषा बनती है, किसी भी विध्वन्सात्मक अथवा सृजनात्मक कार्य को एक निश्चित स्थिति तक पहुँचाने के लिये जो प्रतीक्षा करनी पड़ती है उसे समय कहा जाता है।

अगले मन्त्र ऋ. १/९५/९ के भावार्थ में स्वामी जी लिखते हैं - 'मनुष्यों को यह जानना चाहिये कि समय के बिना सूर्य आदि कार्य जगत् का बार-बार वर्ताव नहीं होता और न उनसे अलग हम लोगों का कुछ भी काम अच्छी प्रकार हो सकता है।

काल अनन्त अपरिणामी और विभु वर्तमान है न उसकी उत्पत्ति हुई है और न नाश है, इसे वेद इस प्रकार कहता है-

द्वादशारं नहि तज्जराय वर्वर्ति चक्रं परि द्यामृतस्य।
आ पुत्रा अग्ने मिथुनासो अत्र सप्त शतानि विंशतिश्च तस्थुः।। ऋ.

भावार्थ - काल अनन्त अपरिणामी और विभु वर्तमान है न उसकी कभी उत्पत्ति है और न नाश है।....

काल सदैव गति में रहता है कभी भी ठहरता नहीं है।

ईर्मान्यद्वपुषे वपुश्चक्रं रथस्य येमथुः।
पर्यन्या नाहुषा युगा मह्ना रजांसि दीयथः।। ऋ.५/७३/३

भावार्थ - हे मनुष्यों! जैसे रथ के पहिये घूमते हैं वैसे ही दिन रात्रि काल संबंधी चक्र घूमता है जिससे क्षण आदि तथा युग कल्प और महाकल्प आदि संबंधी गणित विद्या सिद्ध होती है ऐसा जानो।

समय का एक निश्चित मूल्य नहीं होता इस विषय पर मनुस्मृति में स्पष्ट रूप से बताया गया है।

मनुष्यों का एक मास पितर गणों का एक दिन-रात्रि माना जाता है। पितर गणों का एक वर्ष मनुष्यों के तीस वर्ष के बराबर होता है। इसी प्रकार मनुष्यों का एक वर्ष देवताओं के एक दिन-रात के बराबर होता है। देवताओं का एक वर्ष मनुष्यों के तीन सौ साठ वर्षों के बराबर होता है। इसे ध्यान में रखते हुए युगों की गणना निम्न ढंग से होती है-

दिव्य वर्ष	मनुष्य वर्ष	युग का नाम
१२००	४३२०००	कलियुग
२४००	८६४०००	द्वापरयुग
३६००	१२९६०००	त्रेतायुग
४८००	१७२८०००	सतयुग
१२०००	**४३२००००**	**एक चतुर्युगी**
१२००००००	४३२००००००००	सृष्टि की आयु
१२००००००	४३२००००००००	प्रलयकाल

यह ब्रह्मा का एक दिन-रात का समय है। सृष्टि की आयु ब्रह्मा का एक दिन तथा प्रलयकाल ब्रह्मा की रात मानी जाती है। ऐसे १०० वर्ष या ३६००० दिन ब्रह्मा की आयु होती है । इसी आधार पर स्वामी दयानन्द ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में वेदोत्पत्ति काल का निर्णय किया है।

आज कल विज्ञान यह मानने लगा है कि काल का माप प्रत्येक प्राणी ही नहीं वरन् प्रत्येक कण का भी अलग-अलग होता है। वेदों के अनुसार मनुष्य की आयु सौ वर्ष होती है तथा आशा की जाती है कि प्रत्येक मनुष्य सौ वर्ष तक निरोगी रह कर जीवित रहे। इसी धारणा के अनुकूल जब भी किसी व्यक्ति का देहावसान होता है तो कहा जाता है कि इनके सौ वर्ष पूरे हो गये हैं चाहे मृत्यु किसी भी आयु में हुई हो।

अब वेदों में आकाश के विषय में क्या कहा गया है इसे भी स्वामी दयानन्द सरस्वती के आधार पर विचारते हैं-

क्व स्विदस्य रजसो महस्परं क्वावरं मरुतो यस्मिन्नायय।
यच्च्यावयथ विथुरेव संहितं व्यद्रिणा पतथ त्वेषमर्णवम्।। ऋ १.१६८.६

भावार्थ- जिसमें यह भूगोल आदि जगत् जाता, आता, कम्पता उसी को आकाश के समान कारण जानो, जिसमें ये लोक उत्पन्न होते, भ्रमते और प्रलय हो जाते हैं वह परम उत्कृष्ट निमित्त कारण ब्रह्म है।

आकाश एक विशाल अनन्त महासागर के समान है।

तस्याः समुद्रा अधि वि क्षरन्ति तेन जीवन्ति प्रदिशश्चतस्रः।
ततः क्षरत्यक्षरं तद्विश्वमुपजीवती।। ऋ. १.१६४.४२

भावार्थ- समुद्र के समान आकाश है, उसके बीच रत्नों के समान शब्द, शब्दों के प्रयोग करने वाले रत्नों को ग्रहण करने वाले हैं, उन शब्दों के उपदेश सुनने से सब की जीविका और सबका आश्रय होता है।

शब्द नष्ट नहीं होता वरन् वह आकाश में संचित रहता है इसी को आधार बनाकर आकाशवाणी और दूरदर्शन कार्य करते हैं।

ऋ.६.६१.८ में आकाश की तुलना पानी से भरे आकाश से की गई है-

यस्या अनन्तो अहुतस्त्वेषश्चरिष्णुरर्णवः। अमश्चरति रोरुवत्।।

भावार्थ- हे मनुष्यों! जितना आकाश है उतना ही शब्द अनन्त है जैसे समुद्र जल से पूरा है वैसे आकाश में शब्द हैं।

वैशेषिक दर्शन ने आकाश की परिभाषा इस प्रकार की है-

निष्क्रमण प्रवेशनमित्याकाशस्य लिंगम्।। वै. २.१.२०

जिसमें निकलना और प्रवेश करना होता है वह आकाश है। स्वामी दयानन्द ने आकाश को शून्य माना है। सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास आठ में वे लिखते हैं **"शून्य आकाश, अदृश्य, अवकाश और बिन्दु को भी कहते हैं। शून्य जड़ पदार्थ इस शून्य में सब पदार्थ अदृश्य रहते हैं।"**

स्वामी जी के अनुसार आकाश कुछ होता नहीं केवल भासता है। आगे वे लिखते हैं - **"उस परमेश्वर की प्रकृति से आकाश अर्थात् जो कारण रूप द्रव्य सर्वत्र फैल रहा था उसको इकट्ठा करने से आकाश उत्पन्न सा होता है।**

विज्ञान भी आकाश को शून्य मानता है। क्षेत्र सिद्धांत के अनुसार पदार्थ एवं आकाश कभी अलग नहीं होने वाले तथा सम्पूर्ण के अन्तर्निर्भर भाग है।

इस सम्पूर्ण विवरण से सिद्ध होता है कि-

(१) आकाश एवं समय एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। (२) समय (काल) सदैव गतिशील रहता है। (३) आकाश एवं काल की न कभी उत्पत्ति हुई है और न कभी विनाश होगा। (४) आकाश एवं काल का अस्तित्व प्रलय में भी रहता है। (५) काल वा समय का कोई निश्चित माप नहीं है। (६) सब समय पृथ्वी पर अलग-अलग व्यक्ति के लिए काल का माप अलग-अलग है।

यह सम्पूर्ण विज्ञान की मान्यता के अनुकूल है। **क्रमशः**

आर्यावर्त था देश महान्

आर्यावर्त था देश महान्, मिलते अनेक प्रमाण।
पढ़ो इतिहास पुराना, पढ़ो......
आदि सृष्टि में ईश्वर ने, त्रिविष्टप पर मानव निर्माण किया,
अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा श्रेष्ठ पुरुषों को नाम दिया।
अग्नि को ऋग्वेद और वायु को यजुर्वेद का ज्ञान दिया,
आदित्य को दिया सामवेद, अंगिरा को अथर्ववेद का मान दिया।।
चारों ऋषियों से पढ़ वेद, ब्रह्मा बन गया था श्रेष्ठ महान्।
पढ़ो इतिहास पुराना, पढ़ो......
पिता ब्रह्मा से पढ़ वेद विराट ने, मनु पुत्र को वेद पढ़ाये,
फिर मनु महर्षि ने, मरीचि आदि दश पुत्रों को वेद पढ़ाये।
मनु पुत्र स्वायम्भुव ने, राज और समाज के नियम बनाये,
छठी पीढ़ी में इक्ष्वाकु राजा ने, संस्कृत में वेद लिखवाये।।
इसी पीढ़ी में विश्वकर्मा नामक, एक पुरुष हुए महान्।
पढ़ो इतिहास पुराना, पढ़ो......
कला कौशल में विश्वकर्मा ने जग में नाम कमाया,
'अर्थवेद' उपवेद को पढ़, उसने वायुयान बनाया।
वायुयान पर बैठा ऋषियों को, नभ में खूब घुमाया,
मंद, सुगंध, शीतल वायु, रमणीय स्थलों का दर्श दिखाया।।
बस गये आर्य झट वहीं, देखा जहाँ हरा-भरा सुन्दर स्थान।
पढ़ो इतिहास पुराना, पढ़ो......
पूर्वकाल में आर्यावर्त में, विद्याओं की थी भरमार,
अस्त्र, शस्त्र, विमान-विद्या के, ग्रन्थ उपलब्ध थे बेशुमार।
भरे पड़े थे पुस्तकालय, रखे थे ग्रन्थ कई हजार,
यवनों ने दिये जला अधिकतर, उठ रहा था धुआं अपार।।
ऋषि दयानन्द ने भी देखा उस पुस्तक को, जिससे रचते थे विमान।
पढ़ो इतिहास पुराना, पढ़ो......
उपरिचर एक राजा था तब, जो हवा में भ्रमण करता था,
गुब्बारह विद्या में पारंगत था, जिससे हवा में उड़ा करता था।
समुद्री जहाजों का बेड़ा भी तब, व्यापारिक कार्य करता था,
कर लगा कर जहाजों पर, राज कोष तब भरता था।।
आश्चर्य है भाई! उस समय दरिद्र भी रखते थे विमान।
पढ़ो इतिहास पुराना, पढ़ो......
युद्ध विद्या में बहुत कुशल थे, कवायद भी तब करते थे,
धनुर्वेद सिखाते सबको और व्यूह रचना भी करते थे।
सैन्य टोलियां बना बनाकर शत्रु पर धावा करते थे,
असि[1], शतघ्नी[2] और भुशुण्डी[3] का खुलकर उपयोग करते थे।।
महाभारत के सभा पर्व में भी देख सकते हैं प्रमाण।
पढ़ो इतिहास पुराना, पढ़ो......
ऋषि दयानन्द का पूना प्रवचन पढ़, प्राप्त करें यह सब ज्ञान।
पढ़ो इतिहास पुराना, पढ़ो......

[1]तलवार, [2]तोप, [3]बन्दूक

- **देशराज आर्य,** से.नि. प्रधानाचार्य
रेवाड़ी, हरि., चलभाष-०९४१६३३७६०९

"वयं राष्ट्र जागृयाम्"-देव दयानन्द महर्षि-राष्ट्र निर्माण-महानायक

- पुरूषोत्तमदास गोठवाल
एस-८ बी, कबीर मार्ग, बनीपार्क, जयपुर-३०२०१६
दूरभाष - ०१४१-२२०५९९१

विश्वगुरु रहे भारतवर्ष की पावन धरा पर अठारवीं शताब्दी के मध्य टंकारा ग्राम (गुजरात प्रान्त) में जन्में महर्षि देव दयानन्द जी प्रारम्भिक रुढ़ीवादी संस्कारों से युक्त जीवन के कारण उन्हें प्रारम्भ से ही अनेक कठिनाइयों से जुझना पड़ा बाल्यकाल में ही चाचा व बहिन की मृत्यु के बाद हृदय में वैराग्यता का बीजारोपण कर दिया।

'असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय' की सकारात्मकता की समझ के लिये इस लंगोटधारी सन्यासी ने हमें वैदिक धर्म की ओर चलने-चलाने में सक्षमता प्राप्त कर, निर्भिकता से पौराणिक पाषाण पूजक समाज में नई क्रान्ति का सृजन करते रहे।

देश में अकेले पैदल गंगा के किनारे-किनारे घूम-घूम कर, हमारी भीड़मंत्र वाली अशिक्षित जनता जनार्दन जो गरीबी से संघर्ष करते-करते निराशाओं से जुझती को देख कर द्रवित होते रहे। जगाने वाले बहुत आये हम जागे नहीं और फिर गहरी नींद में सो गये, दुर्भाग्य हमारा नहीं तो और क्या?

पुनः निर्माण की भारतभाग्य विधाता का शंखनाद सुनकर आज भाई नरेन्द्र मोदी जी के प्रचण्ड समर्थन, नेतृत्व वाली नई बेला (सरकार) अपनी पारी की नई सोच, समझ और समर्पण द्वारा जन आकांशाओं पर खरी उतरेगी ऐसी कामना हम करते हैं।

याद रहे, सर्व कल्याणकारी भगवान् शंकर को भी कठिन दौर में गरल पीना पड़ा था, क्योंकि लोक कल्याणार्थ व सृष्टि को विध्वंशात्मक ताकतों से बचाना उस समय की नियति रही थी। देश काल और परिस्थिति अनुकूल कठिन फैसले लेने में अपनों से भी इसकी आलोचना की परवाह न करते हुये देशहित का ध्यान सर्वोपरि स्वीकार्य होना नितान्त आज की आवश्यकता है। गीता के भगवान कृष्ण आज इस समर भूमि में अपनी छठा को **'कार्यक्षेत्रे कर्मक्षेत्रे'** में रणकौशलता, चतुराई-पूर्वक सफल बने ऐसी आशा प्रत्येक नर-नारी कर रहे हैं।

लोकतंत्र को ऐसा निर्भिक, निरासंक्ति, निर्लिप्ति-भाव से सदा देश प्रेम, देशहित और मजबूत तंत्र को विकसित कराने के कठिन सोपान तक हम आज संकल्प लेकर अंतर्राष्ट्रीय सरहदों से आगे तक सर्व-मंगल कामना व जन भावनाओं की समझ रख कर सार्क देशों की आपसी हितों को आगे लाकर जनता में जनतंत्र की मजबूत परिणति को उजागर कर रहे हैं।

इस प्रकार **'अग्रणी और सुपथगामी'** भारत की देवभूमि का ऋण उतार कर देश खुशहाल, आत्मनिर्भर, आत्मरक्षात्मक, स्वावलंबन स्वरूप की भूमिका

निभाकर आज उभर रहा है। जन-मन मंगलकारी हृदय सम्राट हमारे प्रधान मंत्री जी की राष्ट्रव्यापी सोच समझ और देश की बागडोर संभालने की व्यापक समिक्षा कर कड़े फैसलों की क्रियान्विति की प्रक्रिया पर जनता से समर्थन मिलेगा और देश तीव्रगामी क्षितिज पर पहुँच कर अपनी प्रभा बिखेरने लगे, ऐसी कामना प्रत्येक भारतवंशी गरीब जनता आपसे अपेक्षा करती है।

विशेष महत्व का प्रश्न एक ही है कि कहाँ वे, हार्वर्ड/आक्सफोर्ड वि.वि. के बहुत अधिक पढ़े-लिखे प्रधानमंत्री और कहाँ एक ग्रामीण परिवेश का साधारण चाय बेचने वाला जो गरीबी से ऊपर उठकर देश के सर्वोच्च पद आसीन है।

सत्यार्थप्रकाश ग्रंथ के रचियता महान् संत दयानन्द जी सरस्वती का नारा आज सार्थक कराने का संकल्प साकार हो **'सब की उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए'**/धूर्त और पाखंडियों से देश को बचाना है वेद कहता है-**पाप पाखंड हमसे छुड़ाओं, वेद मार्ग पर सबको चलाओं।**

'सर्वे भवन्तु सुखेन-सर्वे सन्तु निरामया'। ●

देवपूजा और मूर्तिपूजा में अन्तर

-सुमन कुमार वैदिक
सम्पादक-आर्यावर्त केसरी, ग्रेटर नोएडा,
जिला- गौतमबुद्ध नगर (उ.प्र.)
चलभाष-९४५६२७४३५०

किसी ने प्रश्न किया कि स्वामी दयानन्द और साईंबाबा में क्या अन्तर है?

साईंबाबा हो या अन्य देवी-देवता, जिनकी मूर्तियों की पूजा की जाती है, वह एकांगी पूजा है। मूर्तियाँ, जो देख-बोल नहीं सकती हैं, किंतु हम उनके सामने नतमस्तक होकर धूप, दीप, फ ल, सोना-चांदी चढ़ाकर अपनी इच्छाओं, कामनाओं और कष्टों का वर्णन कर, उससे निवारण चाहते हैं, इसके साथ अपने कार्य सिद्धि हेतु कर्म करते तथा रोग का चिकित्सक से उपचार भी कराते हैं। इस बीच यदि कार्य हो जाए तो इन देवताओं में श्रद्धा-आस्था और अधिक हो जाती है और यदि सफलता नहीं मिली तो अपने भाग्य को कोसते हैं। ऐसे देवताओं की पूजा में अपनी बुराई छोड़ने को नहीं, उनकी कृपा की आवश्यकता होती है। इसलिए उन देवों पर भेंट चढ़ाते हैं। स्वामी दयानन्द ने अपनी पूजा नहीं करायी, न ही कोई सम्प्रदाय बनाया। उन्होंने वेदों से धर्म और ईश्वर का सच्चा ज्ञान कराया। साथ ही सामाजिक व धार्मिक सभी क्षेत्रों में सुधार का कार्य किया। वेद और यज्ञ से अपनी स्वार्थसिद्धि नहीं, सबके लाभ की विधि बतायी।

जहाँ अन्य गुरुओं के ज्ञान व्यष्टि (संकीर्ण) की ओर ले जाते हैं, वही दयानन्द समष्टि (सबके लाभ) की बात करते हैं। वेद और यज्ञ, जो मध्यकाल में हिंसा से जोड़कर देखे जाते थे, जिस कारण समाज यज्ञ से दूर जा रहा था, वेदों को पण्डित ही पढ़ते थे और वे भी उसका अर्थ नहीं जानते थे। महीधर, सायण आदि ने वेदों को यज्ञ तक ही सीमित कर दिया। **'स्त्री शूद्रो नाधीयतामिति वैदिक श्रुति' कहकर स्त्री और शूद्रों से वेद के अध्ययन का अधिकार छीन लिया** और कहा कि वेद परमात्मा के द्वारा सृष्टि के प्रारम्भ में मानव समाज के लिए दिया गया ज्ञान है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना सभी आर्यों (श्रेष्ठ) का परम धर्म है। स्वामी दयानन्द ने समाज में प्रचलित मूर्ति पूजा के स्थान पर यज्ञ द्वारा संध्या (ब्रह्मयज्ञ) देवपूजा के वैदिक विधान को बताया। उन्होंने कहा कि यज्ञ से पंचमहाभूतों की अर्थात् सारी सृष्टि की पूजा होती है। यह एक विज्ञान है, जिससे की गयी पूजा से जड़ तथा चैतन्य देव प्रसन्न होते हैं। पूजा का अर्थ वस्तु का सदुपयोग करना है। आज हम यज्ञ के नाम पर अग्निहोत्र और चतुष्कोणीय यज्ञशाला को ही जानते हैं जबकि **ब्रह्चारी कृष्णदत्त जी ने २ से २४ कोणीय यज्ञशालाओं में किये जाने वाले अनेक प्रकार के यज्ञों का वर्णन किया, जो वैदिक काल में किये जाते थे।** आज भी उनकी कर्मस्थली बरनावा, जिला-बागपत (उ.प्र.) में प्रत्येक वर्ष चतुर्वेद पारायण यज्ञ एक साथ पाँच वेदियों पर होता है। उनके शिष्य अनेक प्रकार की यज्ञशालाओं में यज्ञ करते हैं। उनका कहना है कि यज्ञ श्रेष्ठतम् कर्म है। इसे जानने के लिए यज्ञ के सही स्वरूप को समझना होगा। यज्ञ शब्द की उत्पत्ति यज् धातु से है, जिसका अर्थ है देवपूजा, संगतिकरण और दान। यज्ञ एक ऐसा कर्म है, जो रूढ़िवाद में नहीं, व्यापकता में ले जाता है। रूढ़ि का अर्थ है संकीर्ण, जबकि यज्ञ का अर्थ है व्यापक। यज्ञ की आहुति, प्रहुति दोनों कर्म इस प्रकार हैं, जिससे समस्त समाज, मानवता और वायुमण्डल पवित्र बनते हैं। वेदमंत्र अन्तरिक्ष के अशुद्ध वातावरण को नष्ट करते हैं। यज्ञ मानव को रूढ़िवाद से आध्यात्मवाद में परिणत कर देता है। भौतिक और आध्यात्मिक यज्ञ के दो स्वरूप होते हैं। भौतिक यज्ञ में घृत और सामग्री से दी गयी, आहुतियाँ वातावरण को शुद्ध करती हैं। आध्यात्मिक यज्ञ में योगी शरीर में अपनी प्रवृत्तियों को ऊर्ध्वागति में ले जाकर करता है, जो पाँचिक यज्ञ कहलाता है। जिसका अर्थ है हमारी पाँच कर्मेन्द्रियों का विषय ज्ञानेन्द्रियों में आ जाता है। अर्थात् ज्ञानेन्द्रियों का विषय पाँचिक यज्ञ की सामग्री और घृत बन जाती है। हृदय रूपी यज्ञशाला में उसकी आहुति दी जाती है। उसमें शांत मुद्रा में बाह्य संसार से अपने को हटा आन्तरिक जगत् को दृष्टिपात किया जाता है। ऐसे में आत्मा, मन, प्राण तीनों एक हो जाते हैं। इससे भिन्न पूजा, जिसमें देवताओं अतिथियों की पूजा की जाती है, रूढ़ि (संकीर्ण कर्म) में ले जाती है। यज्ञ में अपने शत्रु को भी निमंत्रित नहीं करने पर भी उसके शत्रु को भी स्वत: लाभ हो जाता है, जो अन्य किसी पूजा से नहीं होता। ब्रह्मयज्ञ करने वाला, पदार्थों की सुगन्धि प्रसारित नहीं करता, विचारों की सुगन्धि तो उसके मस्तिष्क में होती है, वह प्राणी मात्र को मित्र भी चाहे मानता है, किन्तु उसके जीवन में हृदय में व्यवहार में शत्रुता के अंकुर भी प्राय: रहे हैं, जो कभी भी पतित बना सकते हैं। निष्पक्ष होकर शिक्षा देने वाले गुरू में भी शिष्यों से घृणा, क्रोध उत्पन्न हो जाता है। ब्रह्मवेत्ताओं में भी संकीर्णता, रूढ़ि आ सकती है, किंतु यज्ञ करने वाला यज्ञ के समय सुगन्धि करता है, तब उसके हृदय में मस्तिष्क में रूढ़ि नहीं होती। जो व्यक्ति देवता बनना चाहता है, मृत्यु को विजय करना चाहता है, यज्ञशाला के समीप प्रसन्नतापूर्वक आकर यज्ञ करे। दु:खी व्यक्ति आकर यज्ञ करे। दु:खी व्यक्ति यज्ञशाला से दूर बैठकर वेदमंत्रों और स्वाहा श्रवण मात्र करे, और यज्ञ में भाग न ले, क्योंकि यज्ञ एक विमान है, जिसमें विराजमान हो महापुरूष का चित्त, वाणी और विचारों के साथ द्युलोक को गमन करते हैं। अत: यह कहना कि यज्ञ एक सर्वांगीण पूजा है अन्य पूजा के प्रकार संकीर्ण या आधे-अधूरे या स्वार्थ के लिए किये जाते हैं। हम यज्ञ को अपनाएँ और अन्य पूजा छोड़ें। (लेख ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी प्रवचनों के आधार पर है।) ●

कौन हो सकता है प्रभुशरण का अधिकारी

- डॉ. अशोक आर्य
कौशाम्बी, जिला-गाजियाबाद (उ.प्र.)
चलभाष-०९७१८५२८०६८

परमपिता परमात्मा हम सब का पालक है, हम सब का रक्षक है, हम सब का प्रेरक है। हम सब उस प्रभु की शरण प्राप्त किये बिना कुछ भी नहीं कर सकते। प्रभु शरण ही जीव को इस भवसागर से पार ले जाती है, प्रभु शरण से ही जीवात्मा का बेड़ा पार होता है, प्रभुशरण से ही सब का कल्याण होता, प्रभु शरण से ही जीव सुखी होता है। इसलिए प्रत्येक जीव प्रभुशरण को प्राप्त करने के लिए अनथक यत्न करता है, प्रयास करता है किन्तु प्रभु शरण उस को ही मिल पाती है, जिस पर प्रभु की दया हो, प्रभु की कृपा हो, प्रभु का आशीर्वाद हो। यह दया, यह कृपा, यह आशीर्वाद प्रभु से हम कैसे प्राप्त कर सकते हैं ? इस पर सामवेद के मन्त्र संख्या ४९ पर विस्तार से चर्चा करते हुए कहा गया है कि –

अग्निमीडिष्वावसे गाथाभिः शीरशोचीषम्।
अग्निं राये पुरुमीढ़ श्रुतं नरोऽग्निः सुदीतये छर्दीः ।। साम ४९

इस मन्त्र में बताया गया है कि प्रभु सब का रक्षक है। हे मनुष्य! यदि तू प्रभु का रक्षण चाहता है तो तू दान देने वाला बनकर उसे खुश कर। दान में अपार शक्ति होती है।

इस मन्त्र में प्रभु का आशीर्वाद पाने के लिए, प्रभु शरण का अधिकारी बनने के लिए तीन बातों पर बल दिया गया है। इन तीन बातों पर बल देते हुए कहा गया है कि प्रभु की शरण पाने के लिए जीव को इन तीन बातों पर चलना आवश्यक है। यह तीन बाते हैं –

१) प्रतिक्षण प्रभु का चिंतन करो :– मनुष्य प्रभुशरण में जाने का अभिलाषी होता है, वह जल्द से जल्द प्रभु का आशीर्वाद प्राप्त करना चाहता है। इस निमित्त मन्त्र प्रथम उपदेश देते हुए कहता है कि हे मानव! यदि तू उस प्रभु से रक्षण चाहता है तो तू देख, अपना आत्मचिंतन कर, देख तू हिंसक तो नहीं है। हिंसक व्यक्ति को प्रभु कभी भी पसंद नहीं करता। यदि प्रभु की शरण को पाना है तो यह आवश्यक है कि तु सब से पूर्व हिंसा के मार्ग को त्याग दे। हिंसा के मार्ग को त्याग कर अपने अन्दर ज्ञान की अग्नि को जला। ज्ञान की अग्नि की लपटें, ज्वालायें बड़ी गहन व तीव्र होती हैं। इस ज्ञान की अग्नि के माध्यम से गायन कर, प्रभु आराधना के गीत गा। इन गीतों के द्वारा प्रभुस्मरण कर, उसकी उपासना कर, स्तुति कर, प्रार्थना कर।

मनुष्य जितना सरल है, उतना ही दृढ़ है। उसकी सरलता के कारण उस पर निरंतर अनेक शत्रु आक्रमण करते रहते हैं। यह शत्रु है काम-क्रोध, विषय-वासनाएँ आदि। इन शत्रुओं के आक्रमण निरंतर जीव पर, मनुष्य पर होते रहते हैं। ये सब शत्रु मानव को नष्ट करके रख देते हैं। इनकी चपेट में आया मानव किसी काम का भी नहीं रहता। इसलिए मन्त्र कहता है कि हे मानव! तू अपने आप को इन शत्रुओं से बचा। अपनी इन शत्रुओं से रक्षा कर। इन आक्रमाओं से बचने के लिए एक मात्र शस्त्र है उस प्रभु का चिंतन। प्रभु के चिंतन रूपी शस्त्र को उठा। तैयार हो जा, जब तू चिंतन में लगेगा तो यह शत्रु स्वयं ही पराजित हो जावेंगे।

हम प्रतिदिन देखते हैं कि गडरिये जंगल में आत्मरक्षा के लिए अपने चारों ओर अग्नि जला लेते हैं। अग्नि के पास कोई भी हिंसक पशु आने का साहस नहीं करता। ठीक इस प्रकार ही प्रभु चिंतन एक ऐसा रक्षा कवच है जिसे भेदने का साहस हमारे आतंरिक शत्रुओं (काम, क्रोध, वासना आदि) में नहीं होता। जिस प्रकार जंगल के भयंकर पशु आग को भेद कर गडरिये तक नहीं आ पाते, उस प्रकार ही प्रभु भक्ति रूपी कवच को पार कर हमारे आतंरिक शत्रु भी हमें हानि नहीं पहुँचा सकते। अतः ज्ञान का भण्डार अपने में एकत्र कर उस ज्ञान रूप पिता को धारण कर, तेरा कल्याण होगा।

२) खूब दान कर:– हे मानव! प्रभु दानशील व्यक्ति को शीघ्र ही अपनी शरण में लेता है। इस तथ्य को समझ कर तू निरंतर प्रभु की शरण पाने का अभिलाषी बन तथा जीवन में निरंतर दान कर, सब प्राणियों पर धन की वर्षा कर, दीन-दुःखियों का सहायक बन। तेरे पास क्या नहीं है, इसकी कभी चिंता न कर, जो तेरे पास है उसे जरुरत मंदों के पास लुटा दे, सब की सहायता करने के लिए अपने धन की वर्षा करो। इस बात की चिंता न करो कि जो थोड़ा सा धन है, वह शीघ्र समाप्त हो जावेगा, फिर क्या करोगे ? धन पाने के लिए निरंतर उस प्रभु का चिंतन करता रह, उस प्रभु की स्तुति, प्रार्थना, उपासना कर। इस प्रकार जो पास है उसे निरंतर बाँटता जा तथा और पाने के लिए प्रभु का छोर पकड़े रख। जो और प्राप्त हो उसे भी बाँट दे तथा और पाने के लिए फिर से प्रभु की शरण में जा। जो है उसे बाँट तथा और बाँटने के लिए प्रभु से माँग। जब तू बाँटने के लिए प्रभु से मांगेगा तो प्रभु तो है ही शरणागत का सेवक, भक्तवत्सल वह प्रभु तुझे निरंतर देता जावेगा।

३) यज्ञक कभी विलासी नहीं होता :– मन्त्र में तीसरी व अंतिम बात पर चर्चा करते हुए मन्त्र कहता है कि यज्ञक व्यक्ति अर्थात् प्रतिदिन पंचयज्ञ करने वाला व्यक्ति कभी विलासी नहीं होता। मन्त्र आदेश देता है कि हे मनुष्य! वह प्रभु खूब दान देने वाले व्यक्ति को गृह आश्रय देता है। भाव यह है कि प्रभु दानशील व्यक्ति का पालन करना अपना मुख्य कर्तव्य मानते हुए उसकी रक्षा करने के लिए उसे रक्षणस्थल देने की व्यवस्था करता है। मानव का रक्षण स्थल होता है निवास अथवा घर। अतः वह प्रभु मानव की रक्षा के लिए, उसकी सुख, सुविधा के लिए उसे भवन की, मकान की, घर की व्यवस्था करके देता है। एतदर्थ उसकी सहायता करता है। मन्त्र कहता है कि जो खूब दान देता है, वह कभी वासनाओं का वशीभूत नहीं होता। दानशील व्यक्ति अपने अतिरिक्त धन को दूसरों की सहायता में बाँट देता है। गरीब कन्याओं का विवाह करवा देना, उनकी पढ़ाई की व्यवस्था करना, वस्त्र, भोजन आदि में सहयोग करना आदि कार्यों में अपना अतिरिक्त धन व्यय कर देता है। यह सब करने से न तो उसके पास समय ही बच पाता है तथा न ही इतना अधिक धन ही होता है कि वह अपने जीवन को विषय वासनाओं रूपी शत्रु को सौंप दे।

इससे स्पष्ट होता है कि दानशील व्यक्ति कभी विषय वासनाओं में फंसता ही नहीं। जो व्यक्ति पाँच महायज्ञ करता है। यह पाँचों यज्ञ करने के पश्चात् ही कुछ अपनी क्षुधा को शांत करने के लिए ग्रहण करता है। ऐसा करने वाले के पास भोग विलास के लिए समय ही कहाँ होगा अतिरिक्त धन ही कहाँ होगा। अतः हे प्राणी! तू वेद की इस तीसरी बात को भी अपने हृदय में रख तथा वासनाओं से बचने के लिए खूब दान कर व यज्ञ कर। इससे तुझे निश्चय ही प्रभु की शरण मिलेगी। ●

बन्धकर ताले में मूरत

बन्ध कर ताले में मूरत,
किमती जेवरो से सजाया।
जब दिल किया प्रार्थना का,
खोल ताला शिश नवाया।।
परकोटा भूमि भवन भव्य बना,
फिर कैद कर दिया।
कहते तो हैं, हर जगह है ईश्वर,
फिर मन्दिर में क्यूं रोक दिया।।
ईश्वर पर आधिपत्य ईन्सा का,
क्यू ओर कब होने लगा।
प्रभुत्व की प्रवृत्ति हुई हावि,
लाचार इन्सान रोने लगा।।
ईन्सा पर ईश्वर भी हारा,
ये भक्त क्या करने लगा।
मुझसे ज्यादा भक्त मेरा,
क्यूं पैसों पे मरने लगा।।
जो सबका है दातार,
उसे कर्जदार करने लगा।
चन्द टकों का चन्दा देकर,
अपने पाप हरने लगा।।
फिर मेरा काम क्या उस जगह,
जहाँ व्यापार चलने लगा।
मैं तो हूँ हर पाक दिल में,
जो ईन्सानियत को समझने लगा।।

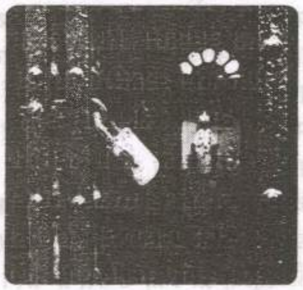

- प्रकाशचन्द्र पिड़वा
६३७, बापू नगर विस्तार,
पाली (मारवाड़)
चलभाष-०९८२९०३२५२९

आध्यात्मिक जिज्ञासा/प्रश्न आपके, जवाब वैदिक विद्वानों के

जिज्ञासा-ऋषि दयानन्द ने अंतिम समय में ऐसा क्यों कहा-हे ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण होवें? इच्छा तो जीव करता है। परमात्मा की तो कोई इच्छा होती नहीं है, यदि वह इच्छा करें तो जीव की तरह सांसारिक प्रपंचों में फंसकर रह जावेगा। जिज्ञासु-रूपकिशोर जाकर, इन्दौर

उपरोक्त जिज्ञासा का वेदानुकूल उत्तर विद्वान् महानुभावों से शीघ्रातीशीघ्र अपेक्षित है। - **सम्पादक**

ईश्वर, प्रकृति, जीवात्मा तथा अध्यात्म (धर्म) से संबंधित आपकी कोई जिज्ञासा अथवा प्रश्न हो तो उठाइये कलम और वैदिक संसार को लिखिए पत्र, उत्तर वैदिक विद्वान् महानुभावों से प्राप्त कर प्रकाशित किये जावेंगे। - सम्पादक

आह्वान-उद्बोधन

रे मानव! अब तो छोड़ो कर्म, स्वार्थ भरे चटकीले।
ईश भक्ति शुभ कर्म में, काम न आये कभी बिचौले।।
प्रभु प्यार के रंग में आज, अन्तर चुनरी संजोले।
इस डर के मनके को, शुभकर्म की माला बीच पिरोले।।
श्रद्धा, विश्वास और आत्मबल का आश्रय अपने संग ले।
रे मानव ! निज अन्तर मन को नित ईश प्रेम में रंग ले।।
वेद ज्ञान और सत्कर्मो से जब हृदय पुष्प खिल जायेगा।
हो परोपकार का शुभ उदय तब प्रभु प्यार मिल जायेगा।।
श्री राम प्यार में हनु ने, रंगा देह सिन्दुर।
नित्य श्री कृष्ण रंग में रहते भक्त विदुर।।
रंग प्रभु का भर मानव, काया मध्य प्रचुर।
हो हृदय आनन्दमय, ईश कृपा भरपूर।।

- भारतेन्द्र आर्य
खरसौद कलां, जिला-उज्जैन (म.प्र.)
चलभाष-०९४२४५५३८९६

दुर्भाग्य

कैसा है दुर्भाग्य देश का
कि स्वाधीनता हमें
अधिक समय तक रास नहीं आती!
सैकड़ों वर्षो की पराधीनता का कारण
आज के हालात देख कर
बखूबी समझ में आता है।
हर युग में इस बदनसीब देश में
कोई न कोई जयचंद मीरजाफर
पैदा हो ही जाता है।
निजी स्वार्थ, सत्ता की लोलुपता में
मदांध हो कर जगह-जगह
कुछ ऐसे तत्व सिर उठाते हैं
जो अपनी दूषित सोच और घृणित चालों से
समृद्धि और विकास की ओर अग्रसर राष्ट्र को
फिर पीछे की ओर धकेल ले जाते हैं।
भूल जाते हैं ऐसे लोग
कि यदि देश ही संगठित सुदृढ़ नहीं होगा
तो वे भी सुरक्षित नहीं रहेंगे।

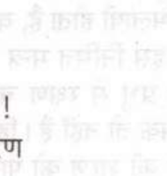

-ओमप्रकाश बजाज
बी-२, गगन विहार, जबलपुर
चलभाष: ९८२६४९६९७५

श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर विशेष प्रस्तुति

श्री कृष्ण चरित्र के प्रथम उद्धारकर्ता

-प्रो. उमाकान्त उपाध्याय
पी-३०, कालिन्दी, कोलकाता
चलभाष-९४३२३०१६०२

योगेश्वर श्री कृष्ण महाभारत के उच्चतम पात्रों में गिने जाते हैं। उन्हें गीता में योगेश्वर श्री कृष्ण (**यत्र योगेश्वरः कृष्ण** - अध्याय-१८) कहा गया है। भीष्म पितामह ने श्री कृष्ण को **वेद वेदांग तत्वज्ञः** कहा है। स्वामी दयानन्द ने अपने कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में श्री कृष्ण चरित्र की बड़ी प्रशंसा की है। महाभारत में श्री कृष्ण चरित्र को बहुत अच्छा बताया गया है। इस प्रकार हम देखते हैं। श्री कृष्ण योगेश्वर, नीति निपुण तथा महाभारत युद्ध में पाण्डव पक्ष के सफल नेता हैं। यदि श्री कृष्ण पाण्डव पक्ष के नेता न होते तो पाण्डव पक्ष का क्या बनता, यह सहज अनुमानगम्य है।

पौराणिक काल में रासलीला आदि का कृष्ण चरित्र में मिश्रण किया गया। श्री कृष्ण चरित्र के साथ गोपिकाओं का चीरहरण, राधा के साथ उनका प्रेम सम्बन्ध, कुब्जा दासी आदि की बड़ी अश्लील कथाएँ सब जोड़ दी गयी। योगेश्वर श्री कृष्ण महारसिया व्यभिचारी के रूप में चर्चा में आ गये और पौराणिक कथाओं में भागवत आदि पुराणों की कथाओं में श्री कृष्ण का योगेश्वर रूप लुप्त हो गया। श्री कृष्ण के इस भ्रष्ट चरित्र का मुसलमान, ईसाईयों ने हिन्दू धर्म को बदनाम करने के लिये खूब उपयोग किया। हिन्दुओं का सिर लज्जा से झुक जाता था। वे पौराणिक कथाओं के आलोक में मुसलमान, ईसाईयों को कोई उत्तर नहीं दे पाते थे। कई हिन्दू तो इन अश्लीलताओं से लज्जित होकर धर्म परिवर्तन भी कर लेते थे।

१९वीं शताब्दी भारतवर्ष के इतिहास में नवजागरण की शताब्दी के रूप में आयी। सर्वप्रथम राजा राममोहन राय ने हिन्दुओं के कुछ निर्बल पक्षों पर विचार किया और ब्रह्म समाज की स्थापना की। विशेषरूप से सतीप्रथा आदि में सुधार का प्रयास किया (यह आज के हमारे विचार विषय से बाहर है) राजा राममोहन राय के लगभग ५० वर्ष पश्चात् महर्षि स्वामी दयानन्द का युग आता है, उन्होंने बहुमुखी सुधार का काम किया। स्वामी दयानन्द के कार्यक्षेत्र से धर्म, समाज, साहित्य, राजनीति कुछ भी अछूता न रह गया। उनका कार्य बहुमुखी या सर्वतोमुखी कार्य के रूप में सामने आया। उन्होंने अपने कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में योगेश्वर श्री कृष्ण को अति उत्तम चरित्र का नीतिमान महापुरुष बताया। स्वामी दयानन्द ने लिखा है कि श्री कृष्ण का महाभारत में अतिनिर्मल, निर्दोष चरित्र मिलता है उन्होंने कभी कोई पाप नहीं किया। सत्यार्थ प्रकाश प्रथम संस्करण १८७४-७५ तथा द्वितीय संस्करण १८८२-८३ का है। इससे पता चलता है कि स्वामी दयानन्द ने श्री कृष्ण चरित्र को निर्मल, निर्दोष १८८२-८३ में ही सिद्ध कर दिया था।

श्री कृष्ण चरित्र पर वन्दे मातरम् के प्रसिद्ध गीतकार, उद्गाता बंकिमचन्द्र चटर्जी ने बहुत सुन्दर विचार किया है। श्री बंकिमचन्द्र चटर्जी का जन्म २७ जून, १८३८ ई. को हुआ था और उनका देहान्त ८ अप्रैल १८९४ ई. को हुआ। स्वामी दयानन्द का जन्म फरवरी १८२५ ई. तथा मृत्यु दीपावली १८८३ ई. है। किसी भी सूरत में स्वामी दयानन्द ने श्री कृष्ण चरित्र के निर्मल उद्धार का काम १८८३ ई. से पूर्व ही कर दिया था। श्री बंकिमचन्द्र चटर्जी ने श्री कृष्ण चरित्र पर जो पुस्तक लिखि वह १८८६ ई. को है।

हिन्दू धर्म एवं श्री कृष्ण चरित्र के प्रति अश्रद्धेय चर्चा से खिन्न होकर बंकिमचन्द्र ने श्री कृष्ण चरित्र भाग-१ सन् १८८६ ई. और भाग-२ सन्

अभ्यास और वैराग्य क्या और कैसे?

असंशय माहावाहो, मनो दुर्निग्रहं चलम्।
अभ्यासेन तु कौन्तय, वैराग्येन च गृह्यते।। गीता ६/३५
निसंदेह मन अति चंचल है, मुश्किल से वश में आता।
किन्तु संयमित जन, सम्यक यत्नौ से काबू कर पाता।।
इसके हित अभ्यास और वैराग्य योग साधो भाई।
साधन में अनवरत परीश्रम हो, निष्ठा नियमित ताई।।
जब-जब मन विषयों में भटके, तब-तब पकड़-पकड़ लाओ।
अपने ध्यान बिन्दु पर उसको यत्न पूर्वक बिठलाओ।।
ईश्वर के गुणगान, कीर्तन, मनन और सत्संग करो।
'**ओमेकाक्षर**' परमब्रह्म का जप श्वासों के संग करो।।
इससे अहम् केन्द्रित कामेच्छाऐं कम होने लगती।
विषयों की गलियों में भटकन, मन की मिटने लगती।।
बार-बार ऐसा प्रयत्न करना '**अभ्यास**' कहाता है।
नियति इस '**अभ्यास योग**' से मन स्थिर हो जाता है।।
और कामनाओं से मुक्ति की प्रबलेच्छा जग जाती।
जो उसको वैराग्य राह पे अनायास ही ले जाती।।
है वैराग्य अनासक्त होकर के कर्मों का करना।
कर्मों के फल से संबंधित किंचित भी रुचि न रखना।।
इसमें '**संगम त्यक्ता**' का आशय-सुभाव अवगुंठित है।
राग-द्वेष, तृष्णादि का सर्वांश त्याग अपेक्षित है।।
मनुज स्वभाविक अपना जीवन जिये, गृहस्थ के कर्म करे।
किन्तु मोह-आसक्ति किसी से भी, किंचित भी न रखे।।
कर्मच्युत, तज गेह, बदलना भेष, पराश्रित हो जीना।
'**परमार्थे परमानंद करना**' भांग-तम्बाकू को पीना।।
है नहि ये वैराग्य, वही है सच्चा योगी वैरागी।
जो अपने कर्तव्य कर्म करता, फल की इच्छा त्यागी।।
अस्तु, उचित '**अभ्यास और वैराग्य योग**' सब अपनाऐं।
रहें कहीं भी, अनासक्त निज कर्म करें, प्रभु गुण गाऐं।।

स्मृति शेष-दयाशंकर गोयल
सुदामा नगर, इन्दौर (म.प्र.)

१८९२ ई. में प्रस्तुत किया। श्री बंकिमचन्द्र के श्री कृष्ण चरित्र की चर्चा के सन्दर्भ में श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने कहा है -

'बंगदेश यदि निश्चेतन और प्राणहीन नहीं होता, तो श्री कृष्ण चरित्र को लेकर आज के हिन्दू समाज तथा विकृत हिन्दू धर्म पर जो अस्त्राघात है उससे व्यथित तथा सचेतन हो उठता। बंकिम की भांति तेजस्वी और प्रतिभा सम्पन्न और किसी व्यक्ति ने लोकाचार, देशाचार के विरोध में ऐसे निर्भीक तथा स्पष्ट उच्चारण में स्वमत प्रकाश का साहस नहीं दिखाया है। यहाँ तक कि बंकिम ने प्राचीन हिन्दूशास्त्र को ऐतिहासिक तर्क देकर जिस तरह से उसके सार और असार भागों को अलग किया है, उसके प्रामाणिक तथा अ-प्रामाणिक अंशों का विश्लेषण जिस तरह निःसंकोच चित्त से किया है, आज उसका सानी पाना कठिन है।'

इस विवेचना से यह नितान्त सुस्पष्ट हो जाता है कि स्वामी दयानन्द ने श्री बंकिमचन्द्र चटर्जी से ३-४ वर्ष पूर्व श्री कृष्ण चरित्र की निर्दोषता को प्रमाणित एवं लिपिबद्ध कर दिया था।●

वैदिक धर्म, मत-मतान्तर एवं आर्य समाज

-मनमोहन कुमार आर्य
१९६, चुक्खूवाला-२, देहरादून
चलभाष-९४१२९८५१२१

सुदूर अतीत में इस सृष्टि की रचना के बाद जब पहली बार मनुष्य का जन्म हुआ तो आँख को खोलने के साथ उसने सोचा होगा कि वह कहाँ है, कौन है, यह संसार क्या है ? और उसका उद्देश्य क्या है, आदि ? आरम्भिक मनुष्य इस सृष्टि में अकेले नहीं था। उसके साथ व आस-पास अनेक मनुष्य उत्पन्न हुए थे जो सभी युवा थे और उनमें स्त्री व पुरुष दोनों थे। इसके जान लेने से पूर्व ही सृष्टि में वनस्पतियाँ लहलहा रही थी। जल से भरे नदी व नाले आस-पास बह रहे थे। अहिंसक पशु उसके इर्द-गिर्द घूम रहे थे। पक्षी उड़ रहे थे एवं चहचहा रहे थे। सारा वातावरण उसको विस्मित व अचम्भित कर रहे थे। इस प्रकार का चिन्तन मनुष्य में तभी होना सम्भव है जब कि उसको किसी एक भाषा का ज्ञान हो। यहाँ केवल एक ही सम्भव है कि उसको भाषा संसार के सृष्टा व रचयिता **''ईश्वर''** से ही प्राप्त हो सकती थी व हुई थी। यह नया मानव यह नहीं जानता कि, जो प्रकाश सूर्य से उसे प्राप्त हो रहा है, उस सूर्य, प्रकाश आदि के नाम क्या हैं, नदी व जल के स्त्रोत जो उसके आस-पास विद्यमान थे, उनके नाम व संज्ञाओं से भी वह सर्वथा अपरिचित, अनभिज्ञ था। उसे स्वयं के नाम व अंगों का भी किंचित अता-पता नहीं था। भूख व प्यास से भी वह सर्वथा अपरिचित था। उसे इन सबके व अपने कर्तव्य के बारे में कि जीवनयापन कैसे किस उद्देश्य से व क्यों करना है, ज्ञात नहीं था। किस काम को करना चाहिये और किन कामों को नहीं इसका भी उसे किंचित ज्ञान नहीं था। इसकी उसे तत्काल आवश्यकता थी जिससे उसका जीवनयापन सार्थक, उद्देश्यपूर्ण व लक्ष्य की प्राप्ति के अनुकृत हो। सभी मनुष्य पूर्णतः अज्ञानी थे। कोई आपस में ज्ञान का आदान-प्रदान नहीं कर सकते थे। भाषा का ज्ञान न होने तक परस्पर बातचीत कर अपने सुख-दुःख भी एक दूसरे को बता नहीं सकते थे। ऐसी विषम परिस्थिति कुछ थोड़े समय के लिए उनके सामने उपस्थित हुई। दूसरी ओर ईश्वर सर्वज्ञ होने के कारण उसकी प्रत्येक परेशानी व कष्ट व दुःख से परिचित था। वह उसकी प्रत्येक परेशानी व कष्ट को दूर करने में सक्षम व समर्थ था। उसने फिर देर क्यों लगानी थी ? आप नित्य ज्ञान ऋग्वेद-यजु-साम-अथर्व वेद को वह आरम्भ में ही चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा के माध्यम से भाषा व मन्त्रार्थ सहित प्रदान करता है जिससे उसके सच्चिदानन्द, सृष्टिकर्ता, सर्वज्ञ कर्म-फल व मुक्ति आदि के देने वाले स्वरूप का बोध होता है। ईश्वर से प्राप्त सब सत्य विद्याओं के ज्ञान वेद को यह चारों ऋषि 'ब्रह्मा' को प्रदान कर स्वयं भी अन्य वेदों का ज्ञान अर्जित कर पश्चात् शेष सभी मनुष्यों को कराते हैं जिससे सृष्टि के आरम्भ से ही सभी मनुष्यों को कर्तव्य के बोध के साथ सृष्टि के निर्माण एवं जीवन के उद्देश्य आदि से जुड़ी शंकाओं का निवारण हो जाता है। उन्हें यह ज्ञात हो जाता है कि भोजन के रूप में कन्द मूल व फलों एवं गोदुग्ध व जल आदि का पान कर जीवन निर्वाह करना है। सृष्टि के आरम्भ में आदि मानवों के सामने भोजन की कोई समस्या नहीं थी। पर्याप्त कंद मूल एवं फल व दुग्ध प्रचुरता से उपलब्ध था। वेदों के ज्ञान व अपने विवेक से उन्होंने दुग्ध से घृत नवनीत-मक्खन, छाछ, दही आदि बनाये व कृषि कर गेहूँ, चावल, हरि सब्जियाँ उत्पन्न कर यथा आवश्यकता उनका सेवन आरम्भ कर दिया था। अतः पुस्तकों में जो पढ़ाया जाता है कि आदि मानव सृष्टि के आरम्भ काल में पत्थर आदि को हथियारों के रूप में प्रयोग करके पशुओं का शिकार कर तथा उन्हें अग्नि में तपा कर अपनी क्षुधा व भूख दूर करता था यह हमारे विदेशी बन्धुओं का अपनी प्रवृत्तियों के अनुरूप अविवेक व छलयुक्त मान्यता व निर्णय है। यह प्रायः ऐसा ही है जैसा कि अज्ञानी मनुष्य ज्ञानी मनुष्य को अपनी ही तरह अज्ञानी व मूर्ख समझ लेता है। यह एक सौ प्रतिशत सत्य है कि आज का मानव पूर्णतः शाकाहारी व निरामिष भोजी था।

ऋषियों को वेदों का ज्ञान मिलने व उनके द्वारा अन्य मनुष्यों को विद्यादान व शिक्षण के द्वारा ज्ञान प्रदान किए जाने पर सभी समस्याओं के हल मिल गये और जीवनयापन से सम्बन्धित कोई मुख्य समस्या नहीं रही। इसे समझने के लिए इतना जानना आवश्यक है कि सभी व अधिकांश समस्यायें अज्ञान से उत्पन्न होती है और ज्ञान प्राप्त होने पर उनका निवारण हो जाता है। ऐसा ही वेदों का ज्ञान प्राप्त होने व ऋषियों द्वारा उनका प्रचार करने से हुआ। दिन-प्रतिदिन ज्ञान का प्रयोग कर नये-नये अविष्कार व कार्य होने लगे और आर्यावर्त्त समस्त वैभव से पूर्ण हो गया। महाभारत काल तक आर्यावर्त्त में स्वर्णिम युग विद्यमान रहा। वेदों की सहायता से हमारे योग सिद्ध को प्राप्त ऋषि-मुनियों द्वारा धर्म, समाज, राष्ट्र व विश्व के लिए निष्पक्ष, न्याय परिपूर्ण, मानव हितकारी व कल्याणकारी नियम व नीतियों का प्रचलन हुआ जिससे प्रत्येक मानव सुख-चैन से जीवन व्यतीत करते थे। सृष्टि के आरम्भ में रचित मनुस्मृति ने व्यवस्था दी कि वेद अखिल धर्म-संस्कृति व सभ्यता का मूल हैं। ज्ञान से पवित्र व मूल्यवान इस पूरे संसार में कुछ भी नहीं है। जीवन का उद्देश्य अभ्युदय व अपवर्ग अर्थात् मोक्ष-मुक्ति की प्राप्ति है। प्रत्येक मनुष्य को वेदाज्ञा के अनुसार प्रातः-सायं सन्ध्या अर्थात् ईश्वर का ध्यान व चिन्तन, अग्निहोत्र-यज्ञ, पितृयज्ञ, बलिवैश्वदेवयज्ञ एवं अतिथियज्ञ सम्पादित करने होते थे। शिक्षा में वेद एवं वेदों की व्याख्यायें करने वाले ग्रन्थ हुआ करते थे। इन पर आधारित

विज्ञान-प्रौद्योगिकी व शिल्प विद्या का प्रचार था। सभी लोग सम्पन्न, स्वस्थ, निरोगी, दीर्घजीवी, परोपकारी, सेवाभावी, देशभक्त, मातृ-पितृ-आचार्य भक्त हुआ करते थे। ब्रह्मचर्य, योग-ईश्वरोपासना एवं यज्ञ आदि का सर्वत्र प्रचार था। कोई भी मांसाहारी न होने के कारण पशु वध की कोई समस्या थी ही नहीं। समय-समय पर आवश्यकता होने पर हमारे ऋषि-मुनि मौखिक प्रचार के साथ वेदों व अन्य विद्याओं के सहायक ग्रन्थ बना देते थे जिनसे मिथ्या-विश्वास उत्पन्न ही नहीं होते थे। यह जान लेना आवश्यक है कि चारों वेद सभी सत्य विद्याओं के आकार ग्रन्थ हैं। मनुष्यों को अपना विवेक विकसित करने के लिए जितनी विद्यायें एवं ज्ञान आवश्यक है वह सब, आधा-अधूरा नहीं अपितु पूर्ण, सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर ने मनुष्यों को प्रदान किया था। इस प्रकार लगभग १.९६ अरब वर्ष तक वैदिक धर्म अबाध रूप से आर्यावर्त भारत व सारे भूगोल व विश्व में विद्यमान रहा। इसका प्रमाण सृष्टि की आयु १,९६,०८,५३,११३ वर्ष होना है एवं संसार का प्रथम व प्रमुख वेदेतर धार्मिक ग्रन्थ जिन्दावस्था का मात्र लगभग २,५०० वर्ष पूर्व अस्तित्व में आना है। इससे पूर्व सारी दुनियाँ में वेद एवं वैदिक साहित्य ही मात्र धर्म व कर्तव्यों का ग्रन्थ या पुस्तक थी और सभी लोग उसी का आचरण किया करते थे। जिन्दावस्था से लेकर अब तक नाना प्रकार के मत-मतान्तर उत्पन्न हुए जिनका मुख्य कारण धर्म व कर्तव्य-अकर्तव्य के ज्ञान में भ्रान्तियों का होना था। भारत में बौद्ध मत, जैन मत, पौराणिक मत, अद्वैत मत तथा विदेशों में यहूदी, ईसाई मत, ईस्लाम मत आदि का आविर्भाव हुआ। धर्म व कर्तव्य-अकर्तव्य में भ्रान्तियों का कारण आज से लगभग ५००० वर्ष पूर्व ''महाभारत'' का महायुद्ध था जिसके कारण भारत में सर्वत्र शिक्षा व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो गई। अन्धकार में प्रायः ऐसा होता है कि कोई भी वस्तु अपने यथार्थ स्वरूप में न दिखने के कारण उसके अनुरूप भिन्न-भिन्न कल्पनाओं का सहारा लेना पड़ता है जिसमें कुछ सत्य व कुछ असत्य होती हैं। इसी प्रकार महाभारत के बाद अज्ञानता के काल में हुआ। महाभारत के समय में भारत में अन्तिम ऋषि जैमिनी या बादरायण हुए। उनके बाद से ऋषियों व वेदों के पारदर्शी विद्वानों की परम्परा अवरूद्ध हो गई। अल्प ज्ञानी लोगों ने अपनी अल्प मति से धार्मिक, कर्तव्य व अकर्तव्य के नये-नये ग्रन्थ बनाये व प्रचार किया जो सत्य व असत्य मान्यताओं व नियमों से मिश्रित थे। अज्ञान बढ़ता रहा और महाभारत के कुछ सौ वर्षों बाद मध्यकाल आ गया जब धर्म सम्बन्धी मान्यताओं में अधिकांशतः असत्य व अविवेकपूर्ण मान्यताओं के प्रचार व आचरण का समय था। इसी कारण कालान्तर में नाना प्रकार के मत-मतान्तर उत्पन्न हुए जिनका उल्लेख पूर्व पंक्तियों में किया गया है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि सृष्टि की आदि में ईश्वर द्वारा वेदों के प्रादुर्भाव से वेद मत-धर्म अस्तित्व में आया। महाभारत के बाद वैदिक धर्म में जो भ्रान्तियाँ उत्पन्न हुईं उनसे देश-विदेश में नाना प्रकार के मत-मतान्तरों की नींव पड़ी। धीरे-धीरे इन सभी मत-मतान्तरों से इनके अनुयायियों के हित व स्वार्थ जुड़ गये। आज सब अपने-अपने अज्ञान व भ्रान्तिपूर्ण मतों में स्थित हैं। वह यह जानना ही नहीं चाहते कि उनमें कुछ कमियाँ हैं या नहीं। कमियों को जानने व उन्हें दूर करने का कोई प्रयास ही नहीं किया जाता है। यदि वैज्ञानिकों के कार्यों पर दृष्टिपात करें तो हमें लगता है कि विज्ञान की उपलब्धियों का कारण उनका सत्य को ग्रहण करना व असत्य को त्याग देना है। धर्म में ऐसा न होने के कारण मत-मतान्तरों की संख्या बढ़ती जा रही है जबकि वैज्ञानिक सभी विषयों में एक मत हैं। धर्म के क्षेत्र में भी ऐसा ही होना चाहिए था। परन्तु अब यह वर्तमान व निकट भविष्य में सम्भव प्रतित नहीं होता। यह होना तो एक दिन अवश्य है क्योंकि धर्म के क्षेत्र में सत्य को अवश्यमेव ही प्रतिष्ठित होना है। जो मत सत्य पर १०० प्रतिशत अवलम्बित होगा, वही ठहर पायेगा, अन्य नहीं।

हम यहाँ दो उदाहरणों से यह कहना चाहते हैं कि ईश्वरीय ज्ञान वही होगा जो सृष्टि की उत्पत्ति या आरम्भ में दिया जाये और जिसे बाद में कभी भी बदलने की आवश्यकता न हो। यदि यह कहा जाये कि आरम्भ में दिया गया ज्ञान भी ईश्वरीय है और बाद में संशोधित या परिवर्तित ज्ञान भी ईश्वरीय है तो इससे ईश्वर प्रदत्त पूर्ण ज्ञान की त्रुटियाँ व अपूर्णतायें ज्ञात होती हैं जिससे ईश्वर के ज्ञान में वृद्धि-ह्रास या घटना-बढ़ना सिद्ध होता है जो कि असम्भव है। इस कथन को इस उदाहरण से समझा जा सकता है कि माता-पिता सन्तान के उत्पन्न होने के बाद उसकी बौद्धिक व शारीरिक क्षमता के अनुसार उसे ज्ञान देना आरम्भ कर देते हैं। माँ बच्चे को गोद में लेकर दूध पिलाती है और उस समय जिस प्रकार की भावना करती या होती है उसका बच्चे के मानसिक स्वास्थ्य या ज्ञान की वृद्धि पर प्रभाव पड़ता है। उसको सुलाने के लिए या उसे प्रसन्न करने वा व्यायाम या मालिश आदि करते समय जो वचन या लोरियाँ माता के मुख से उच्चारित होती हैं, वह भी एक प्रकार से बच्चे को दिया जा रहा ज्ञान है। इसी प्रकार पिता के वचनों को सुनकर वह अपने माता-पिता को उनके स्वर, ध्वनि या आवाज से पहचानने लगता है। बच्चा बड़ा होता रहता है और माता-पिता भी उसे उसकी समझ में आने वाली बातें बताते रहते हैं।

जब पाँच वर्ष या इससे अधिक वय का होता है तो उसे आचार्यकुल, पाठशाला या विद्यालय में भेजते हैं जिससे वह नियमित शिक्षा प्राप्त कर ज्ञानी व विद्वान् बने। यहाँ हम यह देखते हैं कि बच्चे को माता-पिता ने ज्ञान देना जन्म के लगभग साथ ही आरम्भ कर दिया है। ज्ञान प्राप्ति का यह क्रम मृत्यु पर्यन्त नाना रूपों में चलता है। पहले ज्ञान प्राप्त किया जाता है और बाद के समय में नये ज्ञान की प्राप्ति के साथ पूर्व अर्जित ज्ञान को पुनरावृत्ति द्वारा परिपक्व किया जाता है। कोई भी माता-पिता बच्चे को अधूरा, अपूर्ण, असत्य, सृष्टि क्रम का विरोधी व उसके शारीरिक, सामाजिक, बौद्धिक व आत्मिक ज्ञान के विरुद्ध शिक्षा नहीं देता है। वह वही ज्ञान देते हैं जो उनको विदित होता है। इसी प्रकार पूर्ण ज्ञानवान् सर्वज्ञ ईश्वर भी सृष्टि के आरम्भ में युवा स्त्री-पुरुषों को पूर्ण ज्ञान देता है, अधूरा व परिवर्तनीय ज्ञान नहीं देता। अतः इस सिद्धान्त के विरुद्ध मतमतान्तरों द्वारा जो विचार व तर्क दिए जाते हैं वह असत्य, भ्रामक व अपने मत की असत्य युक्तियों से रक्षा के उपाय होते हैं जिससे अल्प बुद्धि लोग ही भ्रमित होते हैं। यदि ईश्वर को बाद में या समय-समय पर परिवर्तन करने पड़ते हैं तो उन संशोधनों के लाभ से पूर्व जन्में व मृतक जीवात्मायें वंचित रहने से इसका दोष भी परमात्मा पर आता है। यह असत्य है और यह सब बातें कल्पित व भ्रान्त मत के अनुयायियों की मिथ्या युक्तियाँ ही सिद्ध होती हैं।

ज्ञान के उत्थान व पतन की कहानी को हम नदियों व वर्षा के उदाहरण से भी समझ सकते हैं। सृष्टि के आरम्भ में वेदों का ज्ञान ईश्वर से प्राप्त हुआ जो कि पूर्ण था जिसमें किसी प्रकार की कोई न्यूनता या त्रुटि नहीं थी। आर्यावर्त के तिब्बत में मनुष्यों की उत्पत्ति के बाद मनुष्य धीरे-धीरे सारी दुनियाँ में फैलते रहे और वेदों के अनुसार जीवनयापन करते रहे। भारत के ऋषि-मुनियों ने भी सारे विश्व में जहाँ-जहाँ मानव थे, वेद धर्म के प्रचार की सुन्दर व्यवस्था कर रखी थी। इस कारण महाभारत

काल तक अन्य कोई मत संसार में उत्पन्न नहीं हुआ। महाभारत काल के बाद वेद-धर्म के प्रचार की व्यवस्था छिन्न-भिन्न या बाद्धित हुई जिससे ज्ञान घटता गया और अज्ञान बढ़ता गया। सूर्य का प्रकाश जहाँ तक पहुँचता है, वहाँ सभी वस्तुएँ स्पष्ट दृष्टिगोचर होती हैं और जहाँ वह प्रकाश नहीं पहुँचता वहाँ अन्धकार होने के कारण वस्तुएँ स्पष्ट दृष्टिगोचर नहीं होती। **अतः ज्ञान न होने, अज्ञान होने या भ्रममूलक ज्ञान के कारण मत-मतान्तर अस्तित्व में आते हैं।** नदी के उदाहरण से इसे इस प्रकार जान सकते हैं कि जहाँ-जहाँ नदी जाती है उसके दोनों ओर के स्थान हरे-भरे होते हैं। वहाँ कृषि का कार्य उत्तम प्रकार से सम्पादित होता है। बड़ी नदियों से उसकी शाखायें निकाल कर विस्तृत भाग में सिंचाई कर कृषि उत्पादन को बढ़ाया जा सकता है जिससे ऊसर भूमि भी कृषि योग्य बन जाती है। परन्तु असिंचित भूमि में कृषि की फसल या तो होती नहीं या अच्छी नहीं होती। इसी प्रकार **'सत्य वैदिक धर्म'** का प्रचार यदि किन्हीं स्थानों में नहीं होगा तो वहाँ असत्य अपना अधिकार स्वमेव प्राप्त करता है जैसे कि जिस स्थान पर प्रकाश नहीं पहुँचता वहाँ अन्धकार स्वेमव होता है। जहाँ-जहाँ वेदों का प्रचार किन्हीं कारणों से बन्द हो गया, रुक गया या कम हो गया वहाँ अज्ञान व अधर्म बढ़ने लगा जिसका कारण वहाँ कालान्तर में सत्य व असत्य मिश्रित मत, मतान्तर, मजहब, सम्प्रदाय आदि उत्पन्न होते गये। जहाँ-जहाँ जितनी वर्षा होती है वह भूभाग वनस्पतियों व कृषि के उत्पादों से हरे-भरे रहते हैं और जहाँ वर्षा कम या बिलकुल नहीं होती वहाँ हरियाली कम व रेगिस्तान जैसी स्थिति होती है। इसी प्रकार से धर्म व मत-मतान्तर की स्थिति है।

विज्ञान एवं धर्म के विषय में भी विचार कर लेना समीचीन है। विज्ञान ने सत्य को अपनाया। वह सारी मानव जाति की उन्नति व सुख का कारण बना। धर्म में किन्हीं कारणों से भ्रान्तियाँ उत्पन्न होने पर मत-मतान्तर उत्पन्न हुए। इनकी मान्यतायें कुछ समान, कुछ असमान व किंचित परस्पर विरोधी भी रही। इससे संघर्ष हुए और लाखों करोड़ लोग मृत्यु का शिकार हुए। प्रत्येक विचारशील, बुद्धिमान वा विवेकशील मनुष्य जानता है कि संसार के सभी लोगों का धर्म तो एक ही है यथा सत्य बोलना, माता-पिता, आचार्य व वृद्धों का आदर-सत्कार करना, तर्क के सिद्ध सच्चे ईश्वर की उपासना करना, सत्य का ग्रहण व असत्य का परित्याग, सत्य को मानना व मनवाना, असत्य को छोड़ना व छुड़वाना, अविद्या का नाश व विद्या की वृद्धि करना, ज्ञान व विज्ञान को जीवन में स्थान देना व किसी का अपकार न करना एवं परोपकार व सेवाभावी जीवन व्यतीत करना, केवल अपनी उन्नति के प्रति ही सजग न होना अपितु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझना, पक्षपात रहित न्यायाचरण आदि। ईश्वर की उपासना नाना प्रकार से की जा सकती है परन्तु उसमें भी बुद्धिमानों व श्रेष्ठ लोगों का अनुसरण करना। यहां यह बताना उचित होगा की उपासना का सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ 'योग दर्शन' है। इसमें किसी मत का आग्रह नहीं है। यह सारी दुनिया के सभी मतों के लोगों के लिये बनाया गया था तथा आज भी है। इसे अपनाकर ही मत-मतान्तरों का यथार्थ धर्म में एकीकरण हो सकता है। अतः विज्ञान का अनुसरण कर वैज्ञानिको की ही भांति सत्य का ग्रहण व असत्य का त्याग प्रत्येक मत व मतान्तर, मजहब व सम्प्रदाय को करना चाहिये।

अब आर्य समाज को लेते हैं। **आर्य समाज क्या है?** आर्य समाज वस्तुतः सत्य को जानने, मानने स्वीकार करने व स्वीकार कराने वाला एक धार्मिक, सामाजिक व आर्थिक क्षेत्रों में समग्र क्रान्ति करने वाला अग्रणीय आन्दोलनकारी संगठन है। जिस प्रकार वैद्य, चिकित्सक व डॉक्टर रोगी के शरीर से अनावश्यक पदार्थों व रोग के किटाणुओं को नष्ट कर रोगी को स्वस्थ करते हैं इसी प्रकार आर्य समाज भी धार्मिक व सामाजिक जगत् से अज्ञानता, कुरीति व मिथ्या विश्वासों आदि को दूर कर मानव जीवन को स्वस्थ करता है। इसकी उपमा का कोई अन्य संगठन देश या संसार में उत्पन्न नहीं हुआ न आज विद्यमान है। यह आर्य समाज अपनी उपमा स्वयं ही है। **आर्य समाज ने सभी मत-मतान्तरों, मजहब व सम्प्रदाय आदि का मन्थन कर यह पाया कि संसार में केवल व केवल मात्र वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है जो शत-प्रतिशत सत्य व प्रमाणिक है।** वेदों में जो कर्तव्य व अकर्तव्य बताये गये हैं, वही वस्तुतः धर्म व अधर्म वा पाप व पुण्य है। दुनियाँ के सभी लोगों को वेदों का अध्ययन कर उसके सत्य अर्थों को जानने का प्रयत्न करना चाहिये और उसी का आचरण करना चाहिये। धर्म के पालन में वेद परम प्रमाण हैं। जो भी वेदों के विरुद्ध आचरण है वह पाप व अधर्म है। आर्य समाज वेदों के आधार पर निराकार, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान व सच्चिदानन्द स्वरूप वाले ईश्वर की योग पद्धति से उपासना, देवयज्ञ-अग्निहोत्र का अनुष्ठान, माता-पिता-आचार्य-विद्वानों-वृद्धों की सेवा व सम्मान, पशु-पक्षियों आदि के प्रति दयाभाव व उन्हें भोजन प्रदान करना, १६ वैदिक संस्कारों में पूर्ण आस्था व उसका अनुष्ठान, देश भक्ति आदि का आचरण करना, सत्य धर्म व मानव धर्म को मानता है एवं उसके सर्वत्र पालन के लिए कार्यरत एक आन्दोलन है। आर्य समाज की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह आलोचनाओं से डरता नहीं, अपितु उसका स्वागत करता है और अन्य मत-मतान्तरों की शंकाओं एवं भ्रान्तियों के समाधान के लिए तत्पर रहता है। आर्य समाज विज्ञान को महत्व देता है और धर्म में उसके प्रयोग व पालन को स्वीकार करता है। आर्य समाज किसी व्यक्ति विशेष को धर्म प्रवर्तक या ईश्वर का दूत या संदेश वाहक न मानकर वेदों एवं वैदिक मान्यताओं को धर्म मानता है और उसके पालन कराने के लिए प्रचार इसलिए करता है कि इसी में विश्व के सभी प्राणियों का कल्याण निहित है। आर्य समाज से पहले सारे विश्व में मत-मतान्तरों में अव्यवस्था थी जिसे आर्य समाज ने वेद एवं सत्य का प्रचार कर कुछ नियंत्रित किया। यद्यपि रूढ़िवाद, अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियाँ, असत्य व अज्ञान बढ़ रहा है फिर भी यह निश्चित है कि संसार का अन्तिम धर्म व मत सत्य व ज्ञान पर ही आधारित होगा और वह अन्य कोई नहीं अपितु वैदिक मत होगा। आर्य समाज को अपनाने में ही विश्व के सभी मानवों का हित निहित है और यदि वह ऐसा नहीं करते तो मृत्यु के बाद के अपने जीवन को वह सँवार नहीं पायेंगे जो कि एक वास्तविकता है।

'अवश्यमेव हि भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्' के अनुसार सभी मनुष्यों को अपने शुभ व अशुभ कर्मों के फलों को अवश्य ही भोगना होगा। सुख-दुःख रूपी कर्मों के फलों का भोग इस जन्म व भावी जन्मों में ईश्वर अवश्य प्रदान करेगा, यह सोच कर ही कर्मों में प्रवृत्त होना विवेकपूर्ण है। अतः वैदिक धर्म का पूरी निष्ठा से पालन करने वाले सभी मनुष्य परजन्म में अन्यों से अधिक लाभकारी व भाग्यशाली होंगे।

हमने इस लेख में संसार में धर्म, मत-मतान्तर-सम्प्रदाय-मजहबों और आर्य समाज का निष्पक्ष वर्णन किया है। आशा है कि पाठक इसे पढ़कर लाभान्वित होंगे। ●

शंकराचार्य के निशाने पर साईं बाबा–त्वरित प्रतिक्रिया

– रूपकिशोर जाकर
३४३, आर्य भवन, ई.डब्ल्यू.एस.
खजरानी (एल.आई.जी.), इन्दौर
चलभाष–०९६१७९०७९२३

शंकराचार्य स्वरूपानंद जी सरस्वती द्वारा शिर्डी के साईं बाबा को निशाने पर लिया गया है, उनके द्वारा किये गये आक्षेप पर देशभर में व्यापक प्रतिक्रियाएँ हुई हैं, जिन्हें हम दूरदर्शन चैनल और समाचार पत्रों में नित्य प्रति देख रहे हैं, सोशल मीडिया पर भी जनसाधारण अपनी–अपनी प्रतिक्रियाएँ अभिव्यक्त कर रहा है, शंकराचार्य जी के आक्षेपों पर ऋषि दयानन्द स्वीकृत वैदिक मान्यताओं के आधार पर अपनी प्रतिक्रियाएँ तथा हिन्दू समाज को संदेश अभिव्यक्त करता हूँ :–

(१)

शंकराचार्य का आक्षेप : हिन्दुओं द्वारा साईंबाबा की पूजा करना सही नहीं है?

प्रतिक्रिया :– अब यहाँ यह प्रश्न उपस्थित होता है कि क्या उन्हें ऐसा आदेश देने का अधिकार प्राप्त है? शंकराचार्य जी धर्माधिकारी हैं इस नाते उन्हें ऐसा अधिकार प्राप्त है, इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता है, शास्त्रों के आधार पर उन्हें ऐसा अधिकार प्राप्त है, इस विषयक शास्त्रों में धर्माचार्य और गुरुजनों के आदेश देखे जा सकते हैं, किन्तु प्रश्न यह है कि क्या समस्त हिन्दू समाज उन्हें अपना धर्माधिकारी स्वीकार करता है? वास्तविकता यह है कि हिन्दू समाज का कोई एकमात्र सर्व–स्वीकार्य धर्माधिकारी है ही नहीं, इसलिए जो हिन्दू उन्हें अपना धर्माधिकारी मानते हैं उन्हें साईं बाबा की पूजा नहीं करना चाहिए।

देखने वाली बात यह है कि, **शंकराचार्य जी और साईं बाबा के भक्तगण दोनों सनातन धर्मी हैं,** इनका सनातन धर्म क्या है? **हिन्दू वेदों को तो स्वीकार करता है किन्तु उसकी आस्था विश्वास और श्रद्धा पुराणों पर टिकी है,** वह सनातनी हिन्दू है, पुराणों में क्या है? पुराणों में हैं अवतारवाद, ईश्वरीय लीलाएँ, श्राप और उद्धार की कथाऐं, ग्रंथ पूजा, प्रतिमापूजा, गुरुपूजा, दर्शन, मेला, नदियों में स्नान से पाप से मुक्ति, प्रकृति के नियमों के विरुद्ध चमत्कार पूर्ण कथा–कहानियाँ आदि पुराणों का आधार हैं, ऐसा सनातनी हिन्दू अवतारी भगवान और

धर्मो रक्षति रक्षितः अर्थात् रक्षा किया हुआ धर्म रक्षा करता है

इससे स्पष्ट है कि मरा हुआ धर्म मनुष्य को मार देता है। वर्तमान में शंकराचार्य जी का साईं के विषय में दिये गये वक्तव्य इसका उदाहरण है। आर्य (श्रेष्ठ) से हिन्दू बनी जनता का आज सर्वमान्य न तो कोई एक धर्म गुरू है, न तो कोई एक शास्त्र है, ना ही एक ईश्वर है। आज सैकड़ों नहीं हजारों धर्माचार्य हैं। सबकी अपनी–अपनी सत्ताएँ हैं परस्पर कोई एक्यता नहीं। सैकड़ों नहीं हजारों कथा, चालिसा आदि धार्मिक पुस्तकें प्रचलन में हैं और तो और इस सृष्टि का निर्माण कर्ता, पालन करने वाला ईश्वर भी एक नहीं होकर सबके अपनी मनमर्जी के ईश्वर हैं। इन सब परिस्थितियों के जिम्मेदार कौन? अगर महर्षि दयानन्द सरस्वती की सर्वकल्याणकारी वैदिक मान्यताओं को तथाकथित धर्माचार्यों ने स्वीकार किया होता तो आज हिन्दू ब्राह्मण, अग्रवाल, नीमा, राजपुत, माली, तेली, नाई, कोली, जाट, विश्नोई, सुनार, चमार, लोहार, भावसार, हरिजन, सिर्वी, पाटीदार, सुतार, काछी, धीमर अनेक जातियों में विभक्त न होकर एक मात्र वैदिक मान्यताओं को समर्पित श्रेष्ठ आचरण वाले आर्य होते। अनेक धार्मिक पुस्तकों के स्थान पर एक मात्र ग्रन्थ वेद और शास्त्र रूप में वैदिक मान्यताओं को पुष्ट करते प्राचीन ऋषियों कृत उपवेद, ब्राह्मण ग्रंथ, दर्शन शास्त्र, उपनिषद् एवं मानव जीवन का संविधान मनुस्मृति होते। ऐसा जब हो जाता तो वर्तमान की नित नयी समस्याओं के स्थान पर सर्वत्र सुख–शांति छा जाती। जब हमारा एक ईश्वर नहीं, एक शास्त्र नहीं, एक धर्मगुरू नहीं तो फिर हमारे विचार कैसे एक होंगे? जब विचार एक नहीं होंगे तो एकता की कल्पना कैसे की जा सकती है? शंकराचार्य जी ने साईं बाबा को निशाने पर लिया है ऋषि दयानन्द के अनन्य भक्त वैदिक धर्म के सिपाही श्री रूपकिशोर जी जाकर वैदिक मान्यताओं के निशाने पर शंकराचार्य जी को ले रहे हैं।

कौन है रूपकिशोर जाकर? – श्री रूपकिशोर जी वैदिक मान्यताओं के दृढ़ प्रतिज्ञ व्यक्ति हैं। प्रतिदिन संध्या हवन करते हैं। जीवन का अधिकांश समय आर्य समाज संयोगितागंज, इन्दौर के माध्यम से वैदिक धर्म की सेवा की है। आपने अपनी धर्मपत्नी के निधन पर वैदिक विधि अनुसार अंत्येष्टि पश्चात् अस्थि संचय और शुद्धि यज्ञ के अतिरिक्त कोई कार्य नहीं किया। दिनांक १६/०४/२०१४ को आपकी पौत्री विदुषी के विवाह संस्कार पर आपने महर्षि दयानन्द सरस्वती का चित्र आमंत्रण पत्र के मुख पृष्ठ पर प्रकाशित किया है तथा अन्दर की ओर ग्रहस्थ जीवन से संबंधित वेदमंत्रों को भावार्थ सहित उद्धृत किया है। इसके अतिरिक्त गणेश आदि के कोई चित्र, श्लोक तथा कुल देवी–देवता की कामना प्रकाशित नहीं की है जो समस्त मानवों के लिये प्रेरणादायी है। –सम्पादक

चमत्कारी गुरु और बाबाओं की ओर अधिक आकर्षित होते हैं। साईं चरित्र या अवतारी चरित्र दोनों में ऐसे चमत्कारपूर्ण विवरण देखे जा सकते हैं। चमत्कार प्रिय हिन्दू साईं पूजा कर रहा है, शंकराचार्य साईं पूजा की मनाही नहीं करते हैं, साईं भक्त साईं प्रतिमा की आरती उतारे, उन्हें हार-पुष्प चढ़ावे, उनके भजन गाएँ, नमन करें उनको किसी पर भी आपत्ति नहीं है, ऐसा क्यों? इसके कुछ कारण हैं -

(१) उनकी आस्था पुराणों पर टिकी है जो प्रतिमापूजा समर्थक ग्रन्थ हैं, यदि उन्होंने प्रतिमा-पूजा का विरोध किया तो स्वयं उनके पक्षधरों का कोप झेलना होगा। (२) उनमें ऋषि दयानन्द की तरह वेदों के आधार पर मूर्तिपूजा का खंडन करने का बल भी नहीं है, इसीलिए अब शंकराचार्य जी हिन्दुओं में उत्पन्न हुए मूर्तिपूजा और चमत्कारों के दोषों को दूर करने की अपेक्षा चतुराई पूर्वक कह रहे हैं कि, साईं का मंदिर अलग हो और हमारे देवी-देवताओं के मंदिर अलग रहें।

अब महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि पूजा है -क्या? और इस पूजा शब्द का वजन क्या है? मेरी सम्मति में पूजा शब्द के महत्व को इस प्रकार समझा जा सकता है कि **''जो जड़ पदार्थ और चेतन जीव जगत् है उनके गुण, कर्म, स्वभाव को परखकर उत्तम रीति से व्यवहार में लाना अर्थात् स्वयं भी लाभांवित होना और जड़ और जीव जगत् की भी क्षतिकारित न होवे उसे पूजा कहा जा सकता है।** हिन्दू बहुधा गौ-पूजा करते हैं, गाय को हार पहनाया जाता है, तिलक लगाते हैं, पाँव छूते हैं, किन्तु यह तो निरर्थक भावना-प्रधान पूजा है, क्योंकि आपके द्वारा दिये जा रहे सम्मान को गाय नहीं समझती है, गाय को तो पीने के लिए पानी और पेट भरने के लिए चंदी-चारा चाहिए, यह है जीव जगत् पूजा। नदियों की आरती उतारी जाती है, उसमें सिक्के फैंके जाते हैं, किंतु नदी ऐसी पूजा को नहीं समझती है, यह भी निरर्थक भावना-प्रधान पूजा है। हमारा प्रयास यह होना चाहिए कि हम उसे प्रदूषित होने से बचावे। ऐसा ही भाव भूमि, वृक्षों और पहाड़ के प्रति होना सही अर्थों में जड़ देवताओं की पूजा है। केवल भावना-प्रधान पूजा मनुष्य को अंधविश्वासी बनाती है और केवल तर्क प्रधान मस्तिष्क उसे नास्तिक बना डालता है। धार्मिक मनुष्यों को भावना और तर्क दोनों का सामंजस्य बैठाकर पूजा शब्द के वजन को समझना चाहिए, ऐसा मेरा निवेदन है।

साईं बाबा के मंदिर और अन्य बाबाओं के दरबार में लोग क्यों जाते हैं? एक तर्क यह होता है कि, अमुक मंदिर या दरबार में लाखों लोग जाते हैं, वे कोई नासमझ तो हैं नहीं और दूसरा उनका यह विचार होता है कि, ऐसे स्थानों पर जाने से मन की मुरादें पूरी हो जाती है, ऐसे बेहूदे-लचर तर्क से बचें। आप भेंड़ नहीं है। ईश्वर ने आपको बुद्धि दी है, उसका प्रयोग करें बहुत कम ऐसे मनुष्य होते हैं जो अपनी मुफलिसी, भूत-प्रेत की बाधा, नौकरी-पेशे की परेशानी और संतान न होने का योग्य कारण ढूंढ पाते हैं। सामान्यत: सबसे सस्ता, सहज और सरल मार्ग बाबाओं के डेरे, मंदिर और दरबार ही लगता है। आज साईं बाबा के मंदिर और निर्मल बाबा के दरबार में जो भीड़ हो रही है, उसका मुख्य कारण यही है, यह मनुष्य के आत्मबल की कमी और समस्या के योग्य कारण को खोज निकालने की असमक्षता है। पुराण में एक कथा है कि, नदी में ऐरावत हाथी का पैर मगर ने पकड़ लिया। उसने अपने को बचाने का कोई प्रयत्न-प्रयास नहीं किया और अपनी रक्षा के लिए विष्णु को पुकारने लगा। विचार कीजिए यदि ऐरावत, विष्णु को पुकारने की अपेक्षा अपना दूसरा पाँव मगर पर रख देता तो समस्या का समाधान हो जाता या नहीं? सच पूछो तो बहुसंख्यक मनुष्य जो बाबाओ के डेरों, मंदिर और दरबार में जाते हैं, ऐरावत हाथी हैं, आप कहीं भी जाएँ किन्तु अपनी बुद्धि को घर की खूँटी पर छोड़कर न जायें, ऐसा मेरा निवेदन है।

इस बात पर ध्यान दीजिए कि अवतारी ईश्वर और गुरूओं की मूर्तिपूजा-चित्रपूजा का सर्वाधिक चलन किन-किन सम्प्रदायों में होता है? उत्तर होगा, इसका सर्वाधिक चलन पौराणिक, जैन, बौद्ध और नाग पंथियों में होता है, यहुदी, ईसाई और इस्लाम में अनेक पैगम्बर हुए हैं किंतु किसी भी यहूदी देवालय, चर्च और मस्जिद में पैगम्बर की प्रतिमा-पूजा का विधान नहीं है। अवतारी ईश्वर की तरह पैगम्बरों के जीवन चरित्र में भी अनेक चमत्कारों के दर्शन होते हैं, किन्तु ये लोग मूर्तिपूजा के स्थान पर खुदा की इबादत करते हैं, कबीर ने गुरू के महत्व पर अनेक दोहे रचे हैं उनके चरित्र-चित्रण में भी चमत्कार के दर्शन होते हैं किंतु कबीर की मूर्ति-पूजा नहीं होती है। सिक्ख-धर्म में दस गुरूओं का बड़ा महत्व है किंतु किसी भी गुरूद्वारे में गुरू की मूर्ति-पूजा नहीं होती है। ब्रह्मसमाज के संस्थापक राजा राममोहनराय ब्रह्मसमाजियों के गुरू माने जाते हैं किंतु ब्रह्मसमाज में उनकी मुर्तिपूजा नहीं होती है। आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द आर्यसमाजियों के गुरू माने जाते हैं किंतु आर्यसमाज में महर्षि की मूर्तिपूजा नहीं होती है। अत: यह जानना बड़ा रोचक विषय होगा कि, मूर्ति-पूजा का चलन कहाँ से और कैसे प्रारम्भ हुआ, जिसे हम आगे अभिव्यक्त करेंगे।

(२) शंकराचार्यजी का आक्षेप :- साईं भगवान नहीं थें।

प्रतिक्रिया :- शंकराचार्य जी का और साईं भक्तों के बीच अब यह विवाद का मुद्दा नहीं रहा क्योंकि **साईं ने कभी नहीं कहा कि, वे भगवान हैं।** इसके उपरान्त भी अनेक साईं भक्त उन्हें भगवान मानते हैं। यदि ऐसा है तो शिर्डी के साईं ट्रस्ट की ओर से ऐसी अपील क्यों नहीं प्रसारित की जाती है कि, साईं भक्त, साई को भगवान मानने की भ्रांतधारणा से बचें। क्या भीड़ बनाये रखने के लिए मौन साध रखा है? ऐसा ही सवाल शंकराचार्य से भी पूछा जा सकता है कि **यदि साईं भगवान नहीं है तो इतिहास पुरूष परशुराम, राम और कृष्ण भगवान कैसे हो गए, ये भी तो साईं की तरह मनुष्य ही तो थे।**

हमारी दृष्टि में मनुष्य को भगवान बनाने में पुराणों का अवतारवाद, जैन का पंचपरमेष्टि का सिद्धान्त और बौद्धों का महायान है, इसके अधिक विस्तार में न जाते हुए हम इनकी एक झलक प्रस्तुत करते हैं।

अवतारवाद तीन प्रकार के होते हैं :-पूर्णावतार, जिसका प्रतिनिधित्व राम और कृष्ण करते हैं। दूसरा अवतार है-**आवेशावतार**, जिसके प्रतिनिधि परसुराम हैं, जो क्रोधी स्वभाव के हैं। तीसरा अवतार है-**अंशावतार** जिसमें देवता और दानवों के अंश से मनुष्य रूप में उत्पत्ति होती है। महाभारत में इन अंशावतारों की सूची प्रस्तुत की गई है। राम तीन हुए हैं। एक परशुराम, दूसरे श्री राम और तीसरे हैं बलराम। बलराम शेषनाग के अंशावतार माने जाते हैं, इस प्रकार अवतारवाद की अवधारणा ने मनुष्य को भगवान बना डाला। अब आगे पंचपरमेष्टि के विषय में लिखते हैं।

जैन धर्म में पंचपरमेष्टि का बड़ा महत्व है। यह मोक्ष प्राप्ति का मार्ग है। जो मोक्ष को प्राप्त हुआ, भगवान बन गया। इसके पाँच सोपान हैं - साधु, उपाध्याय, आचार्य, सिद्ध और अर्हत्। अर्हत् तीर्थकरों को कहा गया है जो चौविस हैं। जैनधर्म में सभी तीर्थकरों को भगवान कहा गया है। सिद्ध केवल संन्यासी पुरूष हो सकता है, जो सिद्ध भया वह भगवान हो गया।

इसके बाद बौद्धधर्म के भीतर से महायान सम्प्रदाय उपजा। यह बौद्ध कम, पौराणिक अधिक हो गया, इसने पुराणों की तरह बुद्ध को

भगवान बना दिया। इसने भी देवी-देवताओं की फौज खड़ी कर दी। अवतारवाद की तरह बुद्ध पर जातक कथाएँ रची गईं। वैसे देखा जाये तो केरल के आदि शंकराचार्य जी ने **अद्वैतमत** के माध्यम से मनुष्य को ब्रह्म बनाने का उपक्रम किया है। इस प्रकार पुराणों का अवतारवाद, जैन का पंचपरमेष्टि, महायान के बौद्ध और आदि शंकराचार्य मनुष्य को भगवान बनाने वाले ठहराये जा सकते हैं। **इस दृष्टि से यहूदी, ईसाई और इस्लाम की प्रशंसा करना होगी कि, उन्होंने कभी भी मनुष्य को यहोवा, खुदा या अल्लाह नहीं बनाया। उन्होंने खुदा को खुदा और आदम को आदम ही बनाए रखा।**

यदि मनुष्य जाति भगवान (ईश्वर) और मानव के बीच अन्तर को समझ लेवें तो अज्ञान और अंधविश्वास कुछ हद तक तो मिट ही सकता है। केवल ईश्वर के लिए प्रयुक्त होने वाला सर्वशक्तिमान शब्द इस अन्तर को अच्छी तरह अभिव्यक्त करता है। महर्षि दयानन्द इस शब्द का बोध कराते हैं कि ईश्वर सर्वशक्तिमान इसलिए है कि, वह अपने समस्त कार्यों को पूर्ण करने में मनुष्यों की तरह किसी की भी सहायता ग्रहण नहीं करता है। वह अपने सामर्थ्य-बल-बुद्धि से सृष्टि की उत्पत्ति, विकास और प्रलयकर्ता है। वह अपने सामर्थ्य से जीवों के पाप-पुण्य की व्यवस्था करता है। अल्पबुद्धि, अल्पज्ञानी, अल्पसामर्थ्यवान, दूसरों की सहायता का आकांक्षी जीव (मनुष्य) में इतना सामर्थ्य कहाँ कि, उसे भगवान ठहराया जाए। अवतारी भगवान भी सर्वशक्तिमान नहीं क्योंकि वह दूसरों की सहायता से अपने काम पूर्ण कर पाता है। **यहुदी, ईसाई और मुसलमान का यहोवा, खुदा या अल्लाह भी सर्वशक्तिमान नहीं क्योंकि वह भी अपने कामों को पूर्ण करने में फरिश्तों, नबी और पैगम्बरों की आश्रय लेता है** युक्ति और तर्क से मनुष्य को ईश्वर मानना सही नहीं है। शंकराचार्य जी का यह कथन सही है कि, साईं भगवान नहीं है। किंतु यह भी उतना ही सही है कि, इतिहास पुरूष परशुराम राम-कृष्ण भी ईश्वर नहीं, यह कठोर सत्य मनुष्य के गले उतरे। ऐसी मेरी धारणा है।

(३) शंकराचार्यजी का आक्षेप :- हिन्दू धर्म में सिर्फ अवतारवाद और गुरू की पूजा होती है।

प्रतिक्रिया :- वैदिक कालीन भारत में अवतारवाद की अवधारणा नहीं थी और नहीं गुरूप्रतिमा पूजन का चलन था। शिष्य अपने गुरू के प्रति अपार श्रद्धा का भाव रखते थे और गुरू आज्ञा पालन उनका मुख्य कर्तव्यकर्म हुआ करता था। आर्यों के धर्म-ग्रंथ वेद भी ऐसी बातों का समर्थन नहीं करते हैं। फिर हिन्दू धर्म में यह अवतारवाद और गुरूप्रतिमा पूजा की बातें आई कहाँ से? हम पूर्व में पुराणों पर चर्चा कर आए हैं। पुराण कथा-कहानियों का संग्रह है, ऐसा अभिमत भी प्रकट कर आए हैं। संस्कृति के चार अध्याय पुस्तक के यशस्वी लेखक श्री रामधारी सिंह दिनकर ऐसे विषय पर अपनी सम्मति इस प्रकार प्रकट करते हैं कि, ''वेदों के बाद जब पुराणों का जमाना आया तब पुराणों में कथा-कहानियों का अम्बार खड़ा हो गया-ये कथाएँ और कहानियाँ केवल आर्यों के मस्तिष्क की उपज नहीं थी, बल्कि द्रविड़, औष्ट्रिक एवं निग्रो समाज तथा बाद में आने वाले मंगोल, युनानी आदि जातियों के यहाँ दन्त कथाओं के रूप में प्रचलित थी, वे आर्यों के साहित्य में भी अनेक कारणों से घुल-मिल गईं। ऋषियों ने आवश्यकतानुसार उन्हें जब तब कुछ नया रूप भी दे दिया। इसका एक प्रमाण यह भी है कि, पुराणों की बहुत ज्यादा कहानियाँ ऐसी हैं जो किसी न किसी रूप में दक्षिण के प्राचीन साहित्य में मिलती है तथा जिसका समावेश बौद्ध जातक कथाओं में भी पाया जाता है। अगर वनवासी लोगों की दन्तकथाओं का संग्रह किया जाए तो उनसे भी इस अनुमान का समर्थन मिल सकता है'' यदि हम दिनकर जी के कथन पर भरोसा करें और भरोसा नहीं करने का कोई कारण भी नहीं है तो अवतारवाद दन्त कथाएँ ही हैं। **सत्य सनातन वैदिक धर्म भी अवतारवाद का पक्षपोषाण नहीं करता है।**

महाभारत में एकलव्य द्वारा गुरू द्रोणाचार्य की प्रतिमा-पूजा का प्रसंग अवश्य है किन्तु इसे गुरूप्रतिमा-पूजा के प्रमाण के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता है। इस प्रसंग को गहराई से समझें। एकलव्य वनवासी भीलवंशी युवक था। आज भी वनवासी जन जातियों में नाना प्रकार की हिंसक-अहिंसक जीवों की, देवी-देवताओं की प्रतिमापूजा का चलन उनमें अंधानुकरण जनित पूजा से आस्था, विश्वास है। निश्चित् ही एकलव्य ने अपने समाज के आचार-विचार से गुरू द्रोणाचार्य की मूर्ति बना, दत्त-चित्त से धनुर्विद्या सीखने का प्रयत्न किया जिसमें वह सफल रहा। किन्तु इससे मूर्तिपूजा को बल नहीं मिलता है। प्रतिमापूजक लोगों की यह भी आस्था-विश्वास है कि, जब तक प्रतिमा की प्राण-प्रतिष्ठा नहीं हो जाती वह सजीव होती है। एकलव्य ने गुरू प्रतिमा की प्राण-प्रतिष्ठा भी नहीं की थी फिर भी वह कुशल धनुर्धारी कैसे बन गया? सही यह है कि, एकलव्य की धनुर्विद्या सीखने की लगन और सतत साधना से वह कुशल धनुर्धारी बना थान कि मात्र मूर्तिपूजा से।

इस अवतारवाद और गुरू प्रतिमा पूजा का पक्ष समर्थन करते हुए एक प्रसिद्ध दैनिक समाचार पत्र के ग्रुप एडिटर बड़ी मजेदार बात लिखते हैं कि, **''हिन्दू में यही सबसे बड़ी विशेषता है कि, वह किसी बन्धन में नहीं है।''** इसका यह अर्थ हुआ कि हिन्दू किसी मर्यादित जीवन-पद्धति में विश्वास नहीं करता है। **वह स्वच्छन्द होकर मनमाना आचरण करने में अपनी मर्जी का मालिक है। यदि वास्तव में हिन्दू ऐसा है तो, यह हमारे लिए चिंता का विषय होना चाहिए क्योंकि धर्म से मर्यादित जीवन जीने और धर्म शास्त्रों के आदेशों के पालन की सीख देता है। शंकराचार्य जी आज जिसे हिन्दू धर्म कह रहे हैं और सांई बाबा की पूजा की मनाही कर रहे हैं उसके मूल में यही स्वच्छन्द आस्था विश्वास है। इसी स्वच्छन्दता के कारण एक निराकार ईश्वर की आस्था में से नाना प्रकार के पंथ और देवी-देवताओं का उद्भव हो गया।** जंगली जातियों की मूर्तिपूजा का चलन प्रारम्भ हो गया। जिस वैदिक धर्म ने निराकार ईश्वर की पूजापद्धतियाँ सुझाई पुराणों के स्वच्छन्द आस्था विश्वास के कारण आज का हिंदू समाज पाँच सम्प्रदायों में बंट गया है जो इस प्रकार है:-(१) **शैव** मतावलम्बि जो शिव को अपना आराध्य मानते हैं। (२) **वैष्णव**, जो विष्णु में आस्था रखते हैं। (३) **शाक्त** जो देवियों के शौर्य, पराक्रम, संहार, मांस-मदिरा भक्षण और बलि प्रथा में विश्वास रखते हैं। (४) **सौर**, जो सूर्य शनि-ग्रह नक्षत्रपूजक हैं। (५) **गाणपत्य** जो गणेश पूजा में विश्वास रखते हैं और प्रत्येक शुभ कार्य के प्रारम्भ में गणेश को पूजनीय मानते हैं। समस्त सम्प्रदायवादी अपनी-अपनी स्वच्छन्द विचारधारा के कारण अपने सम्प्रदाय को महत्वपूर्ण और शेष को गौण मानते हैं।

उक्त तमाम सम्प्रदायों का जन्म महाभारत के युद्ध के पश्चात् पाँचवीं से आठवीं और १२वीं से १६वीं शताब्दी में पुराणों की रचनाएँ जो महर्षि वेदव्यास के नाम से प्रचारित की गई ताकि लोग उन्हें वेदव्यास के नाम पर विश्वसनीय मानें के आधार पर हुआ। इधर पुराणों ने अवतारवाद और मूर्तिपूजा का मार्ग प्रशस्त किया उधर १४वीं शताब्दी में कबीर का जन्म हुआ तो उन्होंने गुरूमहिमा के ऐसे-ऐसे दोहे रचे जिससे गुरू महान् और ईश्वर बौना ठहराया गया। कबीर के बाद तुलसीदास तक गुरुओं की फौज

खड़ी हो गई। संक्षेप में हमारे स्वाध्याय और विश्वास के आधार पर वर्तमान हिन्दू धर्म में अवतारवाद और मूर्तिपूजा उपरोक्त कालखण्ड की देन है। वैदिक युगीन भारत में इसका कोई अस्तित्व नहीं था।

(४) शंकराचार्य जी का आक्षेप :- साईं मांसाहारी था।

प्रतिक्रिया :- पुराण-शास्त्रों में ऐसे देवी-देवताओं का उल्लेख मिलता है, जो मदिरापान करते हैं, भांग, धतुरा सेवन करने वाले और मांसाहारी हैं।

वाममार्गी शाक्त धर्म का मुख्य पीठ असम का कामाख्या मंदिर माना जाता है। इस कामाख्या मंदिर में, कलकत्ता के काली मंदिर में, राजस्थान के कैला देवी मंदिर में निरीह पशुओं का मांस-भक्षण करने वाली देवियाँ प्रतिष्ठित हैं। भैरव को तो मांस-मदिरा से ही तृप्ति मिलती है। प्रश्न यह है कि, ये देवी-देवता भी साईं की तरह पूजा के अयोग्य क्यों नहीं ठहराये जाते हैं? साईं मांसाहारी था तो ये देवी-देवता भी कम नहीं हैं! क्या शंकराचार्य जी इन्हें भी निंदित और पूजा के अपात्र ठहराने का साहस जुटायेंगे?

(५) शंकाराचार्य जी का आक्षेप :- सांई का मंदिर अलग रहे।

प्रतिक्रिया :- शंकराचार्य जी का सोच है कि साईं का मंदिर और पौराणिक देवी-देवताओं के मंदिर अलग-अलग होना चाहिए किन्तु यह समस्या का समाधान नहीं है, इससे बाबाओं के अलग मंदिर बनने का चलन प्रारम्भ हो जायेगा। हिन्दू समाज में फूट पड़ेगी सो अलग, हमारी चिंता इस बात की होनी चाहिए कि पूजा किसकी होनी चाहिए, बाबाओं की या महान् आत्माओं की क्योंकि ईश्वर की पूजा नहीं स्तुति-प्रार्थना उपासना की जाती है। वैदिक सिद्धांतों के अनुसार पूजा वेदानुकूल उत्तमचरित्र युक्त महान् आत्माओं की होनी चाहिए। हमने प्रारंभ में मूक जीव और जड़ पूजा की चर्चा की। पूता के योग्य चेतन देवता हैं जो माता-पिता, आचार्य, अतिथि, विद्वान् कहाते हैं। इनकी प्रत्यक्ष पूजा यथायोग्य सत्कार और आज्ञा पालन द्वारा होती है तथा अप्रत्यक्ष पूजा इनके दिये गये उपदेश एवं चरित्र के अनुगामी बनने से होती है। हमें मनुष्य को ईश्वर से श्रेष्ठ अथवा तुल्य बताने की मनोवृत्ति से बचना चाहिए, वेद आधारित सुस्पष्ट संदेश है कि जब तक मनुष्य की आस्था निराकार ईश्वर की ओर नहीं लौटेगी समस्या का समाधान संभव नहीं है।

अपनी प्रतिक्रिया के उपसंहार में, मैं हिन्दू समाज से निवेदन करुंगा कि वे अपनी कोरी भावुक आस्था पर ही टिके न रहें, भावनाओं में तर्क का चूर्ण मिलायें, बिना पाचक चूर्ण तैयार नहीं होता है। बहुधा यह टेक होती है अपनी-अपनी आस्था होती है, आपको क्या? यह मानसिकता धर्म को विकृत बना डालती है। धार्मिक बनने के लिए अपने माने हुए विचारों में सुधार किए बिना कोई भी मनुष्य धार्मिक नहीं हो सकता है। पुराणो ने हिन्दू समाज को सृष्टि नियमों के विरुद्ध कथा-कहानियाँ और चमत्कार पूर्ण कथानक परोसें हैं जब तक इन्हें त्यागने के लिए उद्यत् नहीं होओगे हिंदू समाज का शुद्धिकरण नहीं होगा। पुराणों को समझो और वेदों की ओर लौटो।●

जीवन की दूसरी पारी है : अनुभवों की फुलवारी

सकारात्मक सोच से जीवन को बनाएँ खुशहाल

-अर्जुनदेव चड्डा
प्रधान-जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, कोटा
४-प-२८, विज्ञान नगर, कोटा (राज.)
चलभाष-०९४१४१८७४२८

जीवन की दूसरी पारी (रिटायरमेन्ट) यानी ६० साल के बाद का जीवन। एक ऐसी स्थिति होती है जिसमें पहली पारी में हुए जीवन के तमाम खट्टे मीठे अनुभवों से अतीत और भवीष्य दोनों दृश्यमान से लगते हैं। जीवन में अनुभवों का ऐसा खजाना एकत्र हो जाता है कि यदि उनका सदुपयोग किया जाय तो दूसरी पारी का जीवन आनन्दमय हो जावे। कुछ लोग जीवन की इस दूसरी पारी को निराशावादी नजरिये से देखते हैं और जीते हैं। किन्तु यदि जीवन का एक लक्ष्य लेकर चला जाय तो दूसरी पारी आनन्दमयी बन जाती है।

सदी के महानायक अमिताभ बच्चन का उदाहरण सबके सामने है। जिसने अपनी पहली पारी के अनुभवों से सीख लेते हुए अपनी दूसरी पारी को पहली से अधिक बेहतर बनाया और अधिक यश व सम्मान कमाया है। ९३ वर्षीय भारतीय सिक्ख फ ोजासिंह ने मैराथन दौड़ में दौड़कर नया रिकार्ड कायम किया।

मनुष्य की श्रेष्ठता उसके अच्छे कार्यो से सिद्ध होती है। जीवन का वास्तविक आनन्द अनुभवों के पश्चात् ही मिलता है। ६० साल के पहले का जीवन त्रुटियों और भूलों भरा होता है। चिन्तन करने पर पता चलता है कि कहाँ-कहाँ गलतियाँ हुई हैं। दूसरी पारी में व्यक्ति संभलकर आगे कदम बढ़ाता है। जीवन के यही अनुभव दूसरों के लिए प्रेरणा प्रदान करते हैं।

यह ध्रुव सत्य है कि सबके जीवन में दूसरी पारी आनी है। इसलिए जीवन की प्रथम पारी के ५० बसंत निकलने के बाद से ही इस दूसरी पारी के लिए तैयारी आरंभ कर देनी चाहिए। शरीर रक्षा व स्वास्थ्य नियमों का पालन, उचित आहार-विहार, स्वाध्याय करना, योगासन, धर्माचरण तथा ईश्वर चिन्तन में मन को लगाना ऐसे कार्य हैं। यदि इन्हें किया जाय साठोत्तर जीवन सुखद बन जाता है।

जीवन की दूसरी पारी मधुरिम बने इसके लिए ऐसे बहुत सारे कार्य जिन्हें व्यक्ति अपनी योग्यता एवं रूचि के अनुसार चुनकर जीवन को उत्साहित व तरोताजा बनाये रख सकता है। जैसे योगाभ्यास की कक्षाएँ चलाना, पुस्तकालय वाचनालय चलाना, लोगों को सद्साहित्य से अवगत कराना, पेड़ पौधों की देखभाल, समाज के भवन को साफ सुथरा रखना, गरीब बच्चों को निःशुल्क शिक्षा देना, झुग्गी झोपड़ियों में सेवा कार्य जैसे स्वच्छता, घरों से पुराने पहनने लायक व नए कपड़ें सर्दियों व गर्मियों के वस्त्र एकत्र कर

शेष पृष्ठ २५ पर....

वृद्धाश्रम की ओर

यह कैसी विडम्बना है
समय में कैसा बदलाव आ गया है
वाह रे वाह ये क्या जमाना आ गया है
ये मैं क्या देख रहा हूँ
मन ही मन में सोच रहा हूँ
कि वृद्धाश्रम के दरवाजे पर
सफेद स्वच्छ धवल कार
धीमी रफ्तार से खड़ी हो गई है
कार में से बाहर निकला अल्प परिवार
पति, पत्नी और छोटा बच्चा
थोड़ी ही देर पश्चात् आस्ते से
मायूस सी, सफेद वस्त्रों में
सफेद बालों वाली वृद्ध औरत निकली
वह औरत और कोई नहीं
परिवार की मुखिया भी
ममत्व भरी माँ थी
जिसने अपना सारा जीवन तीन औलादों
के पालन पोषण में झोंक दिया
जिसके आँचल की छाँव में
सारा घर आंगन महक उठा था
वहाँ सबका मन भावन हो जाता था
ठीक उस तरह जैसे पतझड़ में
मौसम में बसंत बनकर
बसंत का सावन हो जाता है

ये वो ही माँ है जिसने
बचपन में ही बच्चों के
पिता का साया उठ जाने पर
अपने आँचल का सहारा दिया
ये वो ही माँ है जो माँ शब्द से
संसार ही नहीं अपितु सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड भी
बौना-बौना सा लगता है
माँ का कर्ज कोई भी नहीं अदा कर सकता
सदा कर्जदार ही बना रहेगा
इस माँ की ये विडम्बना देख
उन औलादों के प्रति
ये मन उन्हें धिक्कारता है
जो जीवन के आखिरी सफर में
माँ को सहारा न देकर जिन्होंने
इस कदर अपना मुँह
माँ के प्रति मोड़ा है
इसलिये अपनी वृद्ध माँ को
वृद्धाश्रम की ओर
बेसहारा छोड़ा है

-डॉ. सुभाष नारायण
ए-३८, न्यू नेहरु कॉलोनी,
ठाठीपुर, मुरार, ग्वालियर

स्वयं के इच्छा के विरुद्ध वृद्धाश्रम को धकेले जाने की असहनीय पीड़ा को अधिकांश वे वृद्ध ही भोगते हैं जिन्होंने वैदिक संस्कृति में निहित अपने पुत्र का पुत्र होने पर वानप्रस्थ आश्रम को ग्रहण न कर सांसारिक झंझटों और शारीरिक संबंधों में जकड़ें रहे तथा जिन्होंने अपनी संतानों को केवल डॉक्टर, इंजीनियर, उद्योगपति बनाने की प्रतिस्पर्धा के प्रति अपने को समर्पित कर दिया ना तो उन्होंने कभी संध्या-यज्ञ, सद्साहित्य स्वाध्याय किया और ना अपने परिवार का वातावरण 'मनुर्भव जनया देव्यं जन' अनुरुप बनाया - संपादक

पृ. २४ का शेष जीवन की दूसरी पारी...

गरीब लोगों में वितरित करना, घरों से बची हुई दवाईयाँ संग्रह कर अस्पताल में नि:शुल्क बाँटने के लिए देना, नेत्रदान के लिए बुजुर्गों व रक्तदान के लिए नवयुवक-युवतियों को प्रेरित करना, किसी एन.जी.ओ. के साथ जुड़ना, नशामुक्ति के लिए जागृत करना, प्याऊ का संचालन, स्वाध्याय करना आदि। अनाथालयों में जाकर उन्हें नि:शुल्क शिक्षा दें ये ऐसे कार्य हैं, जिससे आत्मिक व मानसिक शांति व आनन्द की अनुभूति होती है।

परिवार में रहकर समझौतावादी व उदारवादी बनें। घर में टोका-टाकी ना करें। पोता-पोती, बेटा-बहू को उनके जन्मदिन व अन्य अवसरों पर उनके पसंद की सामर्थ्य अनुसार उपहार दें। कभी-कभी पोता-पोती को बाजार घुमाने ले जाएँ, उनकी पसंद का अल्पाहार, आईसक्रीम आदि खिलाएँ। उनके साथ खेलें, उनकी भी किसी-किसी कार्य के लिए प्रशंसा करें।

घर के छोटे-छोटे कार्य जैसे पानी, बिजली, टेलीफोन के बिल जमा कराना, एल.आई.सी. की किश्त जमा करना, बच्चों की फीस स्कूल में जमा करना, बच्चों को स्कूल बस तक छोड़ने व लेने जाना आदि।

इन सब कार्यों को आप तभी कर सकते हैं जब आप शरीर से स्वस्थ एवं दृढ़ मानसिक निश्चय वाले हो। इसलिए उम्र के इस पडाव पर नियमित व्यायाम और योगाभ्यास करें।

खानपान ऋतु अनुकूल एवं शरीर की मांग के अनुसार हो। दुर्व्यसनी चीजों का सेवन न करें। नियमित जीवनशैली अपनाएँ, समय प्रबन्धन को जीवन का सूत्र बनायें। ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, वैमनस्य, क्रोध, उत्तेजना आदि से दूर रहें। ये शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं। विवादों में समय बर्बाद नहीं करें। व्यर्थ निन्दा से बचें, उपदेश कथन की अपेक्षा, कार्य करने पर बल दें। जीवन को यज्ञमय (परोपकारी) बनाएँ। आत्मचिन्तन करें कि हमने कितने अच्छे कर्म किए और कितने करेंगे। आत्मचिन्तन परमात्मा के निकट लाता है और ईश्वर को निकट पाकर जो कार्य किये जाते हैं वे सब ईश्वरीय कार्य होते हैं।

विचार करें :- हमने अपने समाज, देश, आस-पड़ौस, गाँव-शहर को क्या दिया? यह जीवन कितनों के काम आया? यदि नहीं में उत्तर आता है तो जीवन की यह दूसरी पारी उसी के लिए है। दूसरी पारी का यह जीवन समुदाय, संस्था एवं समाज को अर्पित कर दें। देखियेगा आपके जीवन की फुलवारी महक उठेगी। ●

ऋषि दयानन्द की पंचांग विषयक मान्यता का स्पष्टीकरण

-आचार्य दार्शनेय लोकेश
सी-२७६, गामा-१, ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.)
चलभाष-०९४१२३५४०३६

आपको यह विदित ही है कि वैदिक पंचांग की गणना कर ली गई है और "**श्री मोहन कृति आर्ष तिथि पत्रक**" उस एकमात्र वैदिक पंचांग का ही नाम है। पंचांग के मामले में कुछ प्रबुद्धजनों को छोड़कर आर्य समाज के अधिसंख्यक लोग अन्यान्य हिन्दुओं से भी कई अधिक गुमराह है। उन्होंने जन्मपत्री को नकारने के चक्कर में पूरे ज्योतिष, जो कि स्वयं में एक वेदांग है, को ही नकार दिया है। वे समझते हैं कि ज्योतिष मात्र वह ही है जिससे कि जन्मपत्री बनाई जाती है। जबकि सत्य तो यह है कि जन्मपत्री ज्योतिष नहीं है, अपितु ज्योतिष का एक अर्थ संधानिक उपयोग/दुरूपयोग है। इस '**जातक ज्योतिष**' के फलने-फूलने का एक कारण आर्य समाज की ज्योतिष के प्रति अज्ञानता व उपेक्षा भी है। समस्या तब और भी गम्भीर हो जाती है जब व्यक्ति न तो स्वयं कुछ जानता है और ना ही उनकी मानता है जो कि जानते हैं। आर्यजनों को इस एक रोग से बाहर आने की आवश्यकता प्रतीत होती है जो कि हमें एक समाजी तो बनाता है किन्तु आर्य नहीं। इसलिये मैं पहिले भी एक सुझाव दे चुका हूँ कि "**कृण्वन्तो विश्वमार्यम्**" के पहले "**कृण्वन्तो स्वयमार्यम्**" के नारे को बुलन्द किये जाने का वक्त आ गया है।

मुझे प्रायः आर्य समाज के सामान्य तो क्या, पुरोहितजनों तक से यह सुनना पड़ता है कि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज तो पंचांग को मानते ही नहीं थे। स्वामी जी ज्योतिष या पंचांग को कितना जानते व मानते थे इस बात को जताने हेतु मेरे पास ६ प्रमाण हैं जिनमें से ४ तो स्वयं स्वामी जी के मुख से ही अभिव्यक्त हैं। सच्चाई तक पहुँचने के लिये कृपया स्वामी जी महाराज के लिखे से लिये गये निम्नलिखित प्रथम ४ उद्धरणों पर गम्भीरता से ध्यान देवें और सार को समझें।

उद्धरण १ - जैसे ऋग्यजुसाम अथर्व चारों वेद ईश्वरकृत हैं वैसे ही ऐतरेय, शतपथ, साम और गोपथ ब्राह्मणग्रन्थ, शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूक्त, छन्द और ज्योतिष, ये छः वेदांग, मीमांसा आदि छः शास्त्र, वेदों के उपांग, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद और अर्थवेद ये चार वेदों के उपवेद इत्यादि सब ऋषि मुनि के किये ग्रन्थ हैं। इनमें से जो वेद विरूद्ध है उस को छोड़ देना क्योंकि वेद ईश्वरकृत होने से निर्भ्रान्त अथवा स्वतः प्रमाण अर्थात् वेद का प्रमाण वेद से ही होता है। ब्राह्मण आदि सब ग्रन्थ परतः प्रमाण अर्थात् इनका प्रमाण वेदाधीन है।

अनुशीलन - वेदों के प्रति ऐसी दृढ़ आस्था यदि किसी के मनमस्तिष्क में ना हो तो उस व्यक्ति को भारतीय संस्कृति की सारभूत बातें नहीं समझाई जा सकती हैं क्योंकि उसके लिये "**नास्तिको वेद निन्दकः**" या "**वेदो अखिलो धर्ममूलम्, सर्वाज्ञान मयो हि सः**" जैसे उपदेशों का कोई अर्थ नहीं बनता। वेद अगर सकल ज्ञानकोष हैं तो ज्योतिष उस सकल ज्ञानकोष अर्थात् 'वेद' का ही एक अंग है। इस ज्ञान के अभाव से आप संवत्सर, अयन, ऋतु, मास, संक्रान्तियाँ, पक्ष, सौर (गते) एवं चान्द्र तिथियाँ, प्रहर, मुहुर्त, लग्नादि, सूर्यचन्द्रादि का उदयास्त और ग्रहण इत्यादि नहीं जान सकते हैं। ऐसे में वैदिक संस्कृति का तीज-त्योहार ही नहीं नित्यचर्चा पूर्वक ठीक-ठीक अनुपालन आप नहीं कर सकते हैं। वेद में संक्रान्तियों, पूर्णिमा और अमावस्याओं में खासतौर पर यज्ञायोजनों का उपदेश है। अब २२ दिसम्बर को मकर संक्रान्ति मानते-मनाते हैं तो भला आप से बड़ा वेद निन्दक कौन हो सकता है? मकर संक्रान्ति के बाद जो भी शुक्ल पक्ष आयेगा वह ही माघ शुक्ल पक्ष होता है। यह वैदिक मार्गदर्शन है। अब आप समझ सकते हैं कि माघ शुक्ल के गलत निर्धारण मात्र से आपके पूरे संवत् के सौर मास एवं दिनांकन और चान्द्रमास व्यवस्था की गड़बड़ हो जायेगी और आप पूरे वर्ष भर अपने त्यौहारों को गलत तिथियों में मनाने के लिये विवश बने रहेंगे। इतना सब जो नुकसान हो रहा है वह सब ज्योतिष को ना जानने या गलत जानने से ही होता चला आ रहा है।

उद्धरण २ - **ज्योतिषशास्त्रे प्रतिदिनचर्याअभिहितार्येः क्षणमारभ्य कल्पकल्पान्तस्य गणितविद्यया स्पष्ट परिगणितं कृतमद्यपर्यन्तमपि क्रियते प्रतिदिनमुच्चार्यते ज्ञायते चातः कारणादियं व्यवस्थैव सर्वैर्मनुष्यैः स्वीकर्तुं योग्यास्ति नान्येति निश्चयः। कृतो ह्ययं नित्यम्** "ओं तत्सत् श्री ब्रह्मणो द्वितीयप्रहरार्द्धे ....मासपक्षदिननक्षत्र लग्न मुहुर्ते अत्रेदं कृतं क्रियते च इत्याबालवृद्धैः प्रत्यहं......

अनुशीलन - स्वामी जी का पूर्ववर्ती, तात्कालीक और पश्चाद्वर्ती आर्यों पर पंचांगीय अनुपालन का कितना बड़ा विश्वास था, देखिये तो सही। स्वामी जी कह रहे हैं कि "**आज का दिन कौन सा है**" यह जानने की आर्यों की ज्योतिष शास्त्र सम्मत एक नित्य चर्चा है। उसको संकल्प कहते हैं। मैं आपसे पूछता हूँ कि क्या आप करते हैं संकल्प की इस नित्य चर्चा को? यदि नहीं तो क्यों नहीं? यदि हाँ तो फिर कैसे? स्वामी जी तो यह भी कह रहे हैं कि **अत्रेदं कृतं क्रियते च' इत्याबालवृद्धैः प्रत्यहं ...**। अब यदि नित्य का यह 'संकल्प' आप करते हैं तो निश्चित है कि अवैदिक पंचांगों के अनुसार ही करते होंगे और नहीं करते हैं तो तब भी आप स्वामी जी की अपेक्षा के अन्तर्गत (प्रतिदिनचर्याअभिहितार्यो अर्थात आर्यानुकूल) आचरण नहीं करते हैं। मैं पूरी विनम्रता से पूछना चाहता हूँ कि आप गलत कार्य क्यों करते हैं? इस बात को यहीं छोड़ते हैं, मुख्य बात ये है कि आज से ही सही, आपने अब सत्य "आर्य आचरण" की इस चर्या को स्वीकार करना है कि नहीं?

उद्धरण ३ - पृथ्वी से लेके आकाश पर्यन्त की विद्या को यथावत सीख के अर्थ अर्थात् जो ऐश्वर्य को बढ़ाने वाला है उस विद्या को सीख के ज्योतिष शास्त्र, सूर्य सिद्धान्त आदि जिस में बीज गणित, अंक गणित, भूगोल, खगोल और भूगर्भ विद्या है इसको यथावत सीखें।

अनुशीलन - आकाश पर्यन्त की विद्या को यथावत सीख के ज्योतिष शास्त्र, सूर्य सिद्धान्त आदि .... मैं सामान्य से लेकर विद्वज्जनों तक सभी को पूछना चाहता हूँ कि इन वाक्यों को पढ़ने के बाद भी क्या किसी को ये शंका बनी रह सकती है कि स्वामी जी ज्योतिष (पंचांग) को तो मानते ही नहीं थे? यह भी स्पष्ट करता चलूँ कि महर्षि ने पंचांग के अर्थ में '**तिथिपत्रक**' शब्द को स्वीकारा है और मैंने वही '**तिथिपत्रक**' शब्द ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका से अपने वैदिक पंचांग के लिये लिया है।

उद्धरण ४ - तत्पश्चात् सब प्रकार की हस्तक्रिया, यन्त्रकला आदि को सीखें, परन्तु जितने ग्रह, नक्षत्र, जन्मपत्र, मुहुर्त आदि के फल के विधायक ग्रन्थ हैं उनको झूठ समझ के कभी न पढ़ें और पढ़ावें।

अनुशीलन - "**यन्त्रकला**" शब्द का उपयोग ही यह तथ्य सिद्ध करता है कि स्वामी जी को ज्योतिष का कितना गहरा ज्ञान हो चुका था। इस "**यन्त्रकला**" जिसको वेध सिद्धान्त भी कहते हैं, से ही यह यथार्थ ज्ञान हो पाता है कि वास्तविक मेष (माधव), कर्क (नभस), तुला (ऊर्ज) और मकर (तपस) आदि कोई भी संक्रान्ति कब होती है। वेध सिद्धान्त ही है जो आपको बतायेगा कि क्यों मकर संक्रान्ति २१ दिसम्बर २०१३ को रात्रि १०:४१ बजे होगी और क्यों १४ जनवरी तो क्या पूरे वर्ष में अन्यत्र किसी

भी तिथि में घटित नहीं हो सकती है।

उद्धरण ५ – विश्व की समस्त आर्य समाजों को संकल्पित भाव से ये बातें जाननी और माननी होंगी कि पण्डित रघुनन्दन शर्मा पहले ही अपनी प्रसिद्ध पुस्तक **''वैदिक सम्पत्ति''** में (श्री घूडमल प्रहलादकुमार आर्य धर्मार्थ न्यास प्रकाशन) पंचांगों के **''ऋतुबद्ध सायन''** आधार की प्रामाणिकता घोषित कर चुके हैं। वे कहते हैं कि .... परन्तु संवत्सर, ऋतु, अयनादि की यथावत सन्धियों का ज्ञान तब तक नहीं हो सकता जब तक की सायन गणनानुसार ज्योतिष का ठीक-ठीक ज्ञान न हो।

अनुशीलन – तथ्यों को स्पष्ट करने और अब तक के ''असम्भव'' वैदिक पंचांग को ''सम्भव'' कर लेने के बाद भी अगर आर्य समाज के सुधी सज्जन नहीं चेते और अवैदिक पंचांग को ही शिरोधार्य करके चलते रहे तो इस से बड़ी **''शोक की बात''** क्या कुछ हो सकती है?

उद्धरण ६ – **''ज्योतिष विवेक''** नामक अपनी प्रसिद्ध रचना में स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती (पूर्व नाम वेदव्रत जी मीमांसक) का यह अभिप्राय आर्यों के मार्गदर्शन के लिये पर्याप्त होना चाहिये था कि यदि संक्रान्तियों को सायन गणनानुसार शुद्ध रूप से नहीं लिया गया तो आगे ऐसा भी वक्त आयेगा जब आज भी यथार्थ से २४ दिनों की अशुद्धि से मनायी जा रही माघ संक्रान्ति हमारे लोग जून माह में उस दिन मना रहे होंगे जब कि वास्तव में सूर्य दक्षिणायन हो रहा होगा।

अनुशीलन – ऐसी गलती सभी संक्रान्तियों के बारे में हो रही है और इस एक मात्र वैदिक पंचांग **''श्री मोहन कृति आर्ष तिथि पत्रक''** के सिवाय भारत के सारे पंचांग ऐसी ही गलती करते आये हैं और करते ही रहेंगे। बोधाभाव में आर्य समाज भी इस ही गलती की विडम्बना से गुजरता रहेगा।

सज्जनों! मैंने वह चिर प्रतीक्षित कार्य कर दिया है जिसके बिना पूरा समाज एक भटकाव में चलते रहने को विवश था। ३७ वर्षों के मेरे सतत् कार्य का ही प्रतिफल है यह **''वैदिक पंचांग''**। अब आपको क्या करना है, ये आप जानें और आपको जानना भी चाहिये। परन्तु भूल से भी ये न कहें कि महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती तो पंचांग को मानते ही नहीं थे। याद रहे कि आपकी प्रतिबद्धता इसमें है कि सत्य को स्वीकार ने और असत्य को त्यागने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये। ●

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षा से ही देश की उन्नति संभव

–ब्र. शिवदेव आर्य
गुरूकुल–पौन्धा, देहरादून

सुहृद् पाठकवृन्द! हमने बहुश: पढ़ा व सुना है कि किसी भी राष्ट्र के उन्नयन अथवा अवनयन में वहाँ की शिक्षा पद्धति की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अमेरिका जैसे देशों के विश्वमंच पर महाशक्ति के रूप में विद्यमान होने में भी वहाँ की शिक्षा पद्धति का महत्वपूर्ण योगदान है।

वर्तमान में हमारा देश अनेक जटिल समस्याओं से ग्रस्त हो रहा है। अत: इसका प्रमुख कारण हमारी दोषपूर्ण शिक्षा पद्धति है। ऐसे समय में यदि देश को इन जटिलताओं से मुक्त करा सकती है तो वो है श्रेष्ठ शिक्षा पद्धति। क्योंकि शिक्षा में वो सामर्थ्य होता है जो देशहित को सर्वोपरि उदित करता है।

यह तथ्य हम सभी स्वीकार करते हैं कि देश के वर्तमान, भविष्य का प्रमुख आधार शिक्षा पद्धति एवं शिक्षित वर्ग ही होता है।

आर्ष शिक्षा

अनार्ष शिक्षा

आर्य समाज में तथाकथित शिक्षित जन देश को दिशा व दशा देने वाले दृष्टिगत होते हैं पुनरपि हमारा देश समस्याओं के तिमिरान्धत्व में विचलित होता जा रहा है, आखिर क्यों? ऐसा क्या हुआ? आज शिक्षा की तो कोई कमी नहीं, हर प्रकार से उच्च से उच्च शिक्षा दी जा रही है।

तथाकथित उच्च शिक्षा को प्राप्त किये हुए नायक भी घोटाले, रिश्वतखोरी, बलात्कार जैसे अनेक दोषों में लिप्त दिखायी देते हैं। इन सबको हम देखते हैं तो इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि–कहीं–न–कहीं हमारी शिक्षा पद्धति (जो अधिकांश मैकाले की देन है) दोषपूर्ण है। यदि विचार करें विश्वगुरू भारत का तो हमारा ध्यान जाता है, उस प्राचीन युग पर जब हमारा राष्ट्र उन्नति के शिखर पर था भले ही आज हमारे युवा विद्यार्थी विदेशों में पढ़ना गौरव व महत्वपूर्ण समझते हो। वस्तुत: यह प्राचीन पद्धति का ही उत्कर्ष था कि उस समय समस्त विश्व में शिक्षा का प्रमुख केन्द्र भारत ही था। जिसके कारण लोग कहा करते थे कि–

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मन:।
स्वं-स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवा:।।

दुर्भाग्यवश हमने उच्च आदर्श युक्त आर्ष शिक्षा पद्धति की अवमानना कर आधुनिकता के आवरण में एक ऐसी पद्धति को अपना लिया है, जो हमें हमारे आदर्शों से विमुख कर हमें हमारे मूल से पृथक् कर रही है। आज आवश्यकता है कि हम अपनी आधुनिक शिक्षा योजनाओं में आर्ष शिक्षा के उच्चादर्शों का समावेश करें।

आर्ष शिक्षा वह है जो ऋषिकृत शिक्षा पद्धति है **(ऋषिणा प्रोक्तमार्षम्)**। अनार्ष शिक्षा (आधुनिक शिक्षा) वह है जो आज विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में प्रदान कराई जा रही है। आर्ष शिक्षा में नैतिकमूल्यों के उन पहलुओं को उद्धृत किया गया है, जिससे प्रत्येक व्यक्ति को निजी तुच्छ स्वार्थों को छोड़कर देशहित में अपने हित को समझते हुए कार्य करने की भावना को दर्शाया गया है। जहाँ देशहित, व्यावहारिक तथा नैतिकमूल्यों की शिक्षा प्रदान कराई जाती है परन्तु आज की शिक्षा में ये दृष्टिपात नहीं हो पा रहा है। आज की शिक्षा पद्धति को व्यक्ति धन कमाने का द्वार मानता है। ये भी गलत नहीं है कि हम धन कमायें। धन कमाना चाहिए, क्योंकि धन कमाना भी शिक्षा का उद्देश्य ही है परन्तु उस धन को गलत तरीको से नहीं कमाना चाहिए। आज लोग लाखों-लाखों रूपये देकर एम.बी.ए., एम.बी.बी.एस. आदि डिग्रियों को प्राप्त कर लाखों रूपयों की घूस देकर नौकरी को प्राप्त करते हैं और नौकरी प्राप्त करने के बाद जो पैसा उन्होंने नौकरी को प्राप्त करने में लगाया है उसे सर्व प्रथम निकालते हैं। चाहे

उस समय अधर्म हो रहा हो या धर्म हो रहा हो, उसकी उन्हें कोई चिन्ता नहीं होती। आज एक स्कूल में अध्यापकों का उद्देश्य शिक्षा देना नहीं होता उनका उद्देश्य तो पैसा कमाना होता है। महीना पूरा हुआ कि उनको अपने वेतन की चिन्ता होने लगती है। छात्र भी लाखों रूपये देकर शिक्षा को प्राप्त करते हैं इससे इनके अन्त:करण में भी ये भाव उत्पन्न हो जाते हैं कि हमने तो बहुत-सा धन खर्च कर शिक्षा को प्राप्त किया है तो मेरा प्रथम लक्ष्य धन कमाना ही होगा न कि शिक्षा देना। परन्तु आर्ष शिक्षा पद्धति को दृष्टिगत करें तो ज्ञात होता है कि आर्ष शिक्षा पद्धति में नि:शुल्क शिक्षा प्राप्त करने व कराने का विधान है, इसीलिए उनका उद्देश्य केवल मात्र विद्या की उन्नति ही होता है। ऋषि लोग मन्त्रद्रष्टा होते हैं, वो आर्ष-शिक्षा पद्धति के माध्यम से **सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय** की भावना को प्रस्तुत करते हैं।

हमें आधुनिक शिक्षा पद्धति को भी छोड़ने की आवश्यकता नहीं है अपितु उस शिक्षा व्यवस्था में जो दोष हैं, उनको हटा कर आर्ष शिक्षा पद्धति के मन्तव्यों को स्वीकार करना पड़ेगा, जो उन्नति के उच्च शिखर को स्थापित करते हों।

यदि हम राष्ट्र निर्माण चाहते हैं तो निश्चित है आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में आर्ष शिक्षा को समाहित करना ही होगा तभी जाकर राष्ट्रनिर्माण सम्भव हो सकेगा। अन्तिम निर्णायक तो आप सभी पाठक ही हैं। आप अपने सुझावों को प्रेषित करें, आपके सुझावों की प्रतिक्षा में .... ●

साभार - आदर्श आर्य वीर

युवावस्था में सदाचार का उपदेश

यावत्तरस्तन्वो३ यावदोजो यावन्नरश्चक्षसा दीध्याना:।
शुचिं सोमं शुचिपा पातमस्मे इन्द्रवायू सदतं बर्हिरदम्।। ऋ.७/९१/४

अर्थ-(इद्रवायू) हे ज्ञान, कर्म के विद्वानों! आप लोग **(इदम् बर्हि: आ सदतम्)** इन आसनों पर विराजिए और **(यावत्)** जब तक **(तन्व:)** हमारे शरीरों में **(तर:)** स्फूर्ति, बल है **(यावत् ओज:)** जब तक मानसिक उत्साह है, **(यावत् नर:)** जब तक हम लोग चक्षसा **(दीधयाना:)** सोचने, समझने की शक्ति रखते हैं **(शुचिपा)** आप हमारे शुभ कर्मों की रक्षा करने वाले हैं सो **(अस्मे)** हमारे **(शुचिम्)** पवित्र **(सोमम्)** स्वभाव की **(पातम्)** रक्षा कीजिये।

युवावस्था का प्रारम्भ आयुर्वेद ने सोलहवें वर्ष से पच्चीसवें वर्ष तक माना है। पच्चीस से चालीस वर्ष तक यौवन अर्थात् जवानी का समय है। यह जीवन का स्वर्ण काल है। यदि अनुभवी, सदाचारी, गुरूजनों का मार्गदर्शन इस आयु में मिल जाये तो फिर सोने पर सुहागा है। अनुभवी लोगों को कहना है-**'दान-भक्ति-रण, तीनों काम जवान के'**। अच्छे कार्यों में सहयोग युवावस्था में ही किया जा सकता है। देने की प्रवृत्ति भी इसी आयु में अधिक होती है, वृद्ध जन प्राय: कृपण वृत्ति के हो जाते हैं। ईश्वर की भक्ति के लिये भी यही समय उपयुक्त है। वृद्धावस्था में हाथ, पैरों के जोड़ शिथिल, कमर टेढ़ी और स्मरण शक्ति मन्द हो जाती है फिर जप, ध्यान और भक्ति का सामर्थ्य रह ही कहाँ जायेगा। इसी भाँति शूरवीरता के कार्य भी युवावस्था में किये जा सकते हैं।

जवानी नाम है बलिदान का विषपान करने का।
चुनौती संकटों को दे दु:खों का मान करने का।।

देश को स्वतन्त्र कराने के लिये जिन्होंने अपने प्राणों की बाजी लगा दी, वे सब जवान ही तो थे। संकटों को चुनौती देना, उनसे जूझना, कष्टों में भी धैर्य धारण किये रहना युवाओं का ही काम है।

उकाबी रूह जब बेदार होती है जवानों में।
नजर आती है उनको मंजिलें फिर आसमानों में।
नहीं तेरा नशेमन कसरे सुलतानी के गुम्बद पर।
तू श्याहीं है बसेरा कर पहाड़ों की चट्टानों में।।

मकबरों एवं टूटे-फूटे खण्डहरों में कबूतर रहा करते हैं और बाजों का घोंसला पहाड़ों की चोटियों पर होता है। जिसमें बाज के समान आगे बढ़ने की उमंग है समझो वही युवा है। ऐसे यौवन से सम्पन्न, कार्य करने में सफल और उत्साह वाले युवक कह रहे हैं-हे इन्द्रवायु-ज्ञान, कर्म का उपदेश करने वाले विद्वानों! **इदं बहिरा सदतम्** यह उत्तम आसन है, इस पर बैठिए और **यावत् तरस्तन्व:** जब तक हमारे शरीर में स्फूर्ति और बल है **यावत् ओज:** जब तक मन में उत्साह और ओज है, **नरश्चक्षसा दीध्याना:** जब तक हम लोग सोचने, समझने की शक्ति रखते हैं तब तक आप अपने ज्ञान कर्म का उपदेश देकर **अस्मे पातम्** हमारे आचार-विचार, व्यवहार की रक्षा कीजिए। क्योंकि भर्तृहरि जैसे अनुभवि योगी सावधान कर गये हैं-

यावत् स्वस्थमिदं शरीरमरुजं यावजरा दूरत:,
यावच्चेन्द्रिय शक्तिरप्रतिहता यावत् क्षयो नायुष:।
आत्मश्रेयसी तावदेव विदुषा कार्य: प्रयत्नो महान्,
संदीप्ते भवने तु कूप खननं प्रत्युद्यम: कीदृश:।।

जब तक यह शरीर स्वस्थ है, जब तक बुढ़ापा नहीं आता, जब तक इन्द्रियों की शक्ति क्षीण नहीं होती और आयु का नाश नहीं होता, तब तक बुद्धिमान् व्यक्ति को आत्म कल्याण के लिये विशेष प्रयत्न करना चाहिये। ऐसा न हो कि आग लगने पर कुआ खोदने लगें। उस समय किया श्रम किस काम का।

ज्ञान के बिना कर्म अन्धा और बिना कर्म ज्ञान लंगड़ा है। युवावस्था में कर्म की प्रधानता रहती है। उस समय किसी अच्छे सन्मार्ग दर्शक का मार्ग दर्शन मिल जाये तो उसका अहो भाग्य है। आगे वृद्धावस्था में तो सभी संयम, सदाचार का उपदेश देते हैं परन्तु यह उपदेश यदि युवावस्था में दिया जाये और तदनुसार आचरण भी हो तभी जीवन की सार्थकता है। कोई व्यक्ति कितने भी बड़े कुल खानदान का हो, गुणी हो, यदि उसकी किसी सज्जन पुरूष के साथ संगति है, तभी वह सुशोभित हो मान और कीर्ति को प्राप्त करता है जैसे बाँस का दण्ड अच्छा पर भी जब उसका तुम्बी के फल से संयोग कर वह वीणा या एक तारा बन जाता है, तभी उससे मधुर स्वर निकलता है। **सतां संगो हि भेषजम्** सज्जन लोगों की संगति औषध का काम करती है।

मन्त्र कहता है - हे ज्ञान-कर्म के उपदेशकों आप लोग शुचिपा हैं। आप के सामीप्य से हमारा जीवन पवित्र हो जायेगा और हम पतन से बच जायेंगे। **अस्मे शुचिं सोमं पातम्** हम युवावस्था में संयमी, सदाचारी, सोम-वीर्य की रक्षा करने वाले होवें, इसके लिए हमें सदाचार का उपदेश कीजिए। युवावस्था में जीवन की गाड़ी को सुपथ पर चलाने वाला कोई महापुरूष मिल जाये तो यह गाड़ी हमें मोक्ष तक पहुँचा देगी इसमें कोई सन्देह का स्थान नहीं है। कहा भी है-

साधुसंगतयो लोके सन्मार्गस्य च दीपिका।
हार्दान्धकारहारिण्यो भासो ज्ञान विवस्वत:।।

साधु जनो की संगति सन्मार्ग को दिखाने वाली टार्च या दीपिका (लालटेन) के समान है जो हृदय के अन्धकार को दूर कर ज्ञान सूर्य के सम प्रकाश कर देती है। ●

युवाओं के लिये शिक्षा का महत्व - आव्हान

-विनोद गोयल
वृन्दावन टाउनशीप, हरणी रोड, बड़ोदा (गुज.)
चलभाष-०९८२५३१५१२०

जब तक भारत अपने स्वरूप को पुन: प्राप्त नहीं कर लेगा, तब तक उसे शान्ति नहीं होगी। इसलिये गुरुकुलों और आश्रमों की आवश्यकता है। उसमें प्राचीन भारत का रहस्य छिपा हुआ है। उनसे फिर वह ज्ञान ज्योति प्रकट होगी। जिसकी आज हमें आवश्यकता है। हमारी स्वाधीन मातृभूमि ज्ञान से प्रकाशित हो। पुनरुज्जीवन के लिये शिक्षा आवश्यक है। गीता कहती है – **'ज्ञान के सदृश कोई वस्तु पवित्र करने वाली नहीं है।'** अर्वाचीन भारत भोजन से पीड़ित है। यहाँ लाखों-करोड़ों लोग अनपढ़ हैं। एक समय जापान में घोर अज्ञानान्धकार था। परन्तु मेकाडो ने राजकीय घोषणापत्र निकाला जिसके अनुसार ग्रामों में स्कूल खोले गये और प्रत्येक जापानी बालक को शिक्षा मिलने लगी। किसी समय भारत में भी प्रत्येक ग्राम में स्कूल थे।

भारत में वर्ण, जाति या लिंगभेद के लिये कभी भी विद्या का मार्ग बन्द न था। विद्या प्राप्त करना प्रत्येक मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है। शूद्र सहित सभी वर्ग वेदों के पाठ से लाभ उठा सकते थे। स्त्रियों के लिये भी विद्या का निषेध नहीं था। कोई-कोई स्त्रियों ने विद्या और बुद्धि में बहुत उच्च स्थान को प्राप्त किया था। एक ब्रह्मकुमारी ने अपना सारा जीवन कुरुक्षेत्र आश्रम में विद्या प्राप्ति के लिये अर्पण कर दिया था। एक राजकुमारी ने अपने पिता का राजमहल छोड़ दिया और स्वेच्छा से ब्रह्मचारिणी बनकर वेदों का अध्ययन करने लगी। कुछ वर्षों बाद वह तपस्सिद्धा बन गयी। एक राजा के दरबार में बहुत से प्रतिभाशाली कवि थे। इनमें एक कवियित्री भी थी। उसकी प्रतिभा कालिदास से कम नहीं थी। एक दिन दरबार में कुछ निर्धन स्त्रियाँ आईं, जिन्हें उनके पाण्डित्य के लिये पारितोषिक मिला। भारत में सर्वत्र शिक्षा फैली हुई थी। परिव्राजक, उपदेशक ग्राम-ग्राम में घूमते हुए आध्यात्मिकता का प्रचार करते थे। ऋग्वेद के भाष्य में एक जगह ऋषि दयानन्द शिक्षित मनुष्यों को कहते हैं- **चाहे स्कूल में हो, अथवा स्थान-स्थान पर घूम रहे हो, विद्या को अज्ञानियों तक पहुँचाओं। जब सब श्रेणियों के मनुष्य शिक्षित होंगे तो कोई भी झूठी, कपटपूर्ण अधार्मिक रीतियों को न चला सकेगा।**

अज्ञान के वायुमण्डल में अन्धविश्वास बढ़ता है। यह बात आश्चर्य है कि बेकन ने सर्वसाधारण के लिये शिक्षा का विरोध किया था। ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने ऐसी नीति बरती जिससे हमारी संस्कृति युक्त शिक्षा पद्धति नष्ट हो गयी। बेकन की युक्ति स्पष्ट थी। शिक्षा से जनता जागरुक हो जाएगी और अंग्रेजों का शासन समाप्त हो जाएगा। प्राचीन काल में भारतीयों के लिये शिक्षा एक आध्यात्मिक साधन था। शिक्षा की पाठ्यप्रणाली में बहुत से विषय सम्मिलित थे। नारद शिक्षा के विषय में कहते हैं –

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, इतिहास, व्याकरण, कल्प (यज्ञ प्रक्रिया), गणित, भौतिक विज्ञान, समय विद्या, न्याय, राजनीति, वाक्यविद्या, वेदों से सम्बद्ध विज्ञान, भूत विद्या, धनुर्विद्या, नक्षत्र विद्या, सर्वविद्या, ललित कलायें सब मैंने पढ़ें हैं।

विश्वविद्यालय को मन्दिर के समान पवित्र समझा जाता था। राजा राष्ट्र का मुखिया होता था किन्तु वह किसी विश्वविद्यालय के दीक्षान्त संस्कार में सम्मिलित होता था तो वह यह आशा नहीं करता था कि अध्यापक वर्ग खड़े होकर उसे प्रणाम करेंगे। परन्तु जब आचार्य का प्रवेश होता था, तब सब खड़े होकर उसका अभिवादन करते थे। वह शिक्षा के मन्दिर का अधिष्ठाता (शासक) समझा जाता था।

आजकल के स्कूल और कॉलेज की तरह भीड़ वाले स्थानों पर आश्रम नहीं होते थे। गुरु और ब्रह्मचारी गौ, हिरण आदि पशु-पक्षियों से प्रेम करते थे। विद्यार्थी पेड़ों के निचे बैठकर पढ़ते थे और ध्यान करते थे। स्वामी दयानन्द लिखते हैं – **'विद्यालय किसी नगर या ग्राम से ५ मील से कम दूर नहीं होना चाहिये।'** आजकल के नागरिक विश्वविद्यालय से योग्य व्यापारी मनुष्यों को उत्पन्न कर सकते हैं। परन्तु ऋषि और कलाप्रवीण पुरुषों को नहीं बना सकते। खुली वायु में स्कूल रखने का नया परीक्षण प्राचीन आश्रम के ही विचार का आंशिक पुनरुज्जीवन है।

विद्या मनुष्य को प्रकृति का विरोधी बनाने के लिये नहीं है, प्रत्युत् उसके अन्दर विश्व के साथ बन्धुता, एकता और सहयोग के भाव उत्पन्न करने के लिये है।

दु:ख की बात है कि आधुनिक भारतीय विद्यार्थी भारत के आदर्श और संस्कृति के विषय में बहुत कम जानते हैं। आज भी नयी सभ्यता और नयी मनुष्यता के निर्माण में उनका बहुत योगदान है। फ्रेंच विद्वान विक्टर गोल्डन ब्लफ ने कुछ समय पूर्व लन्दन में व्याख्यान देते हुए कहा था- **भारतीय ने मेडिटेर-नियम समुद्र के देशों को प्रोत्साहित किया और आलप्स से आगे फैल गया। भारतीय के आदर्शो ने बौद्धधर्म का रूप धारण कर जापान के जीवन को बदल डाला। भारत के विद्यार्थी के लिये आवश्यक है कि वह भारत के भूतकाल के महत्व का अनुभव करे।**

डट जाऊँगा

तू मुझमें है
मैं तुझ में ...
ब्रह्माण्ड कोई स्थल
कोई पल हो ...
यह न मिटने वाली निश्चल स्थिति है।
फिर भी तेरे और मेरे बीच
यह दूरी!
तू तो नहीं भूला होगा
लेकिन
मैंने तुझे भूला दिया है ...
इसी बात की दूरी है।
समझ गया ...
अब मैं इसको मिटाने में ही
डट जाऊँगा।

-रमण नावलीकर
झण्डा चौक, नावली, जिला-आणंद (गुज.)

भारतीय विद्यार्थी कमजोर नहीं होते थे। उन्हें शरीर का ध्यान रखना सिखलाया जाता था। 'पुरोहित और उपदेशक तथा परिव्राजक शिक्षक ग्रामों में महाभारत और रामायाण सुनाते थे जो जनता के मन पर पराक्रम के महत्व का प्रभाव डालते थे।' रामायण में श्री राम के उच्च चरित्र के दर्शन होते हैं। प्राचीन भारत के गुरु और शिष्य प्रार्थना करते थे - **'प्रभो, हमारे अन्दर शक्ति और सत्य की वृद्धि हो।'**

आजकल कुशिक्षा का जोर है। आजकल की शिक्षा से इधर-उधर का थोड़ा-बहुत साधारण परिचय ही होता है। साधारण परिचय का नाम शिक्षा नहीं है। सदाचार का निर्माण वीरता से होता है। सरकारी स्कूल विद्यार्थीयों को राजभक्त बनाते हैं। वे वीर और साहसी नहीं बनाते। आजकल के विश्वविद्यालयों से धन कमाने वाले क्लर्क, अध्यापक, वकील तथा कुछ तकनीकि विशेषज्ञ तो निकलते हैं किन्तु भारतीय गुणों से युक्त मानवों की अपेक्षा अधुरी रह जाती है।

मेरी समझ में भारतीय स्कूलों में सिर्फ भारतवर्ष के इतिहास की तारीखें और तालिकायें ही न पढ़ाई जाएं किन्तु इतिहास एक धर्मिक ग्रन्थ की तरह हो जिससे जीवन और कर्म का सन्देश प्राप्त हो सके। प्रत्येक भारतीय विद्यार्थी भारत को गौरवशाली बनाने वाले महान् पुरुषों के विषय में पढ़े। वे वेदादि शास्त्र तथा रामायण और महाभारत पढ़े। स्कूल में शारीरिक शिक्षा तथा ब्रह्मचर्य शिक्षा की ओर विशेष ध्यान दिया जाये जिससे कि बालक और बालिकाओं में साहस, हिम्मत, दृढ़ संकल्प आदि का विकास हो। उन्हें वीरता, निर्भयता, सदाचार और आदर्शवाद को अपने अन्दर विकसित करना चाहिये।

प्राचीन भारत में गुरु पवित्र भाव, विचार और आदर्श वाला होता था। वह पढ़ाने के बदले शिष्य से धन नहीं ऐंठता था। त्याग सबसे बड़ी सम्पत्ति थी। ऐसे अध्यापक ज्ञानी और पवित्र होते थे। उनके चरण कमलों में नतमस्तक होकर भारतीय ही नहीं विदेशी भी गौरवान्वित होते थे।

भारतीय ब्रह्मचारी के चरित्र गठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली निम्न शक्तियां थी -

१. सहानुभूति, २. सूर्य का प्रकाश, ३. आत्मिक ध्यान।

विद्यालय एक कुल होता था - जहां पर गुरु और गुरुपत्नी शिष्य पर प्रेम की वर्षा करते थे। गुरुकुल गुरु और विद्यार्थियों का परिवार होता था। जहां शिष्य आदर्श लोगों की सेवा करने की प्रेरणा प्राप्त करते थे। गुरु को शास्त्र की आज्ञा थी कि वह अपने शिष्यों को पुत्र की तरह प्रेम करे। उग्र शारीरिक दण्ड का निषेध था। विद्यार्थी सहानुभूति और प्रेम के वायुमण्डल में विचरते थे।

आज हिन्दू समाज के पतन का एक कारण है-स्कूल और कॉलेजों में अध्यापकों और विद्यार्थियों में परस्पर स्नेह का न होना।

प्रातः काल की ऊषा के प्रकाश में प्राणायाम करने से ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य बनता था। ध्यान और प्रार्थना से ब्रह्मचारी का जीवन श्रद्धा और स्फूर्ति से भर जाता था।

विद्या जीवन के पृथक् नहीं, कर्म और सेवा से ज्ञान की वृद्धि होती है। आजकल जिसे शिक्षा समझा जाता है, वह केवल अभिमान मात्र है। उसके अन्दर वह नम्रता नहीं, जो जीवन के साथ सहयोग और प्रेम-पूर्ण सेवा से प्राप्त होती है। सेवा के विषय में हम बहुत-सी कहानियां पढ़ते हैं। पुराने समय में विद्यार्थी गुरु के लिए भिक्षा लाता था। विद्यार्थी गुरु के घर पर काम करते थे। उनके पशु चराते थे। जंगल से इंधन लाते थे और दूसरी छोटी-बड़ी सेवाएं करते थे। आरुणि को उसके खेत की मेंड़ को, जहां पानी ने काट दिया था, रोकने की आज्ञा हुई। उसने सब उपायों को व्यर्थ समझकर अपना शरीर पानी रोकने के लिए लगा दिया। उपमन्यु गुरु के पशु चराता था और खेतों की देखभाल करता था। कच के विषय में हम पढ़ते हैं कि वह इंधन ले जाता था और अपने गुरु की गौ चराता था। रामायण के अनुसार श्री राम निष्ठा से गुरु वशिष्ठ की सेवा करते थे। श्री कृष्ण ने गुरुभक्ति का कैसा सुन्दर दृष्टान्त उपस्थित किया है। वह अपने गुरु सांदीपनी के लिए जंगल से इंधन और नदी से पानी लाते और भोजन भी बनाते थे।

संसार के इतिहास में भारतियों का सत्य के लिए अद्भूत प्रेम है। आधुनिक जीवन के मुख्य उद्देश्य धन और शक्ति हैं। भारतियों का मुख्य प्रोत्साहन विद्या या ज्ञान के लिए था। भारतीय विद्यार्थी ज्ञान के लिए उत्कट प्रेम रखता था। मैगस्थनीज जो लिखता है - **उस समय भारत में कुछ ऐसे विद्यार्थी थे जो ३७ वर्ष तक अध्ययन करते थे। 'श्वेतकेतु ने १२ वर्ष तक आत्मविद्या (आत्मिक ज्ञान) के अध्ययन में बिताए।**

जब भारत के विद्यार्थी और युवकों के हृदय में निहित विद्या आत्मसमर्पण के रूप में प्रकट होगी, तब इतिहास बदलेगा और वह दिन भारत की सच्चे अथों में स्वाधीनता का दिन होगा। आश्रम विद्या के सच्चे केन्द्र थे। वहां संकुचित सिद्धान्त या सम्प्रदाय का पाठ नहीं सिखाया जाता था। वे यथार्थ जीवन से पृथक् केवल रूढ़ि अध्ययन को प्रोत्साहित नहीं करते थे। वे बतलाते थे कि इन्द्रिय भोगों के पीछे जाना सच्चे सुख की हत्या करना है। वे जीवन का ऐसा पाठ पढ़ाते थे, जिसमें सरलता और आध्यात्मिकता दोनों सम्मिलित थी। आश्रम आत्मसंयम के स्त्रोत थे। विद्यार्थी तपस्या के वायुमण्डल में विचरते थे। जिस समय सिकन्दर भारत में आया, उस समय यूनानी तक्षशिला के आश्रमों के गुरुओं की आध्यात्मिक सरलता और शक्ति पर आश्चर्यचकित थे। भारत में उस समय बनारस, नालन्दा, मथुरा, द्वारकापुरी और नदिया प्रसिद्ध आश्रम (गुरुकुल) थे।

मैं भारत के परम्परागत आदर्शो का पोषक हूँ। मुझे उनमें भविष्य की पुकार सुनाई देती है। उनमें से एक पुकार है - **'मैं सत्य, चेतन और आनन्द का रूप हूँ। मैं सदा मुक्त हूँ।'**

भारत के युवकों! तुम्हें ऊपर लिखी पुकार को सुनना चाहिए। तुम सदा मुक्त हो। आधुनिक विज्ञान कहता है कि तुम केवल परमाणु हो। ठीक है! परन्तु मैं कहूँगा कि अनन्तशक्ति के परमाणु हो। तुममें से प्रत्येक युवक सत्य, चेतन और आनन्द रूप है। प्रत्येक युवक एक शक्तिशाली अणु है। प्रत्येक युवक बलवान शक्तियों का केन्द्र है और अनन्त शक्ति का बिन्दू है। इस विश्वास के साथ मैं युवकों से आह्वान करता हूँ कि वे अपने-अपने कार्य में सन्नद्ध हो जाएँ। संसार के चमकते हुए प्रलोभनों के पीछे मत पड़ो। धन और प्रसिद्धि की लालसा मत करो। सादगी को अपनाओ। शरीर को धूलिधूसरित होने दो। अपनी धरती माता के उद्धार के लिए घर को छोड़ो जिसके लाखों, करोड़ों बच्चे रोटी और स्थान के लिये तड़प रहे हैं। आसक्ति पूर्ण लिप्साओं को छोड़कर आदर्श के साक्षी बनो। ग्राम-ग्राम में घूमों और प्रतिक्षा करते हुए जनसमूह के प्रति इस प्राचीन सत्य संदेश की घोषणा कर दो - 'उठो! जागो! और शिक्षा का प्रचार करो।

आज ईश्वर मनुष्य बना, कभी मनुष्य भी ईश्वर तुल्य बनेगा। ●

स्वर्गस्य कामो यजेत् अर्थात् स्वर्ग की कामना वाले लोग यज्ञ करें क्योंकि यज्ञ स्वर्ग की सीढ़ी है

भारतीय संस्कृति को तोड़-मरोड़कर पेश करने की चेष्टा

- आचार्य रामगोपाल शास्त्री
प्राचार्य - सेठ जी.आर. चमड़िया संस्कृत महाविद्यालय
पूर्व आचार्य - जांगिड संस्कृत वैदिक विद्यालय,
फतेहपुर (सीकर), राज.
चलभाष-०९८८७३९३७१३

जोधपुर से प्रकाशित एक अखबार में- श्रीमती आशा गौतम का लेख, **१६ मार्च 'होलिका बलिदान दिवस'** बहुत बेतुका, बिना हाथ-पैर-सिर वाला, मनगढ़ंत है। इसमें जो बातें लिखी गई हैं वे भारतीय इतिहास में नहीं हैं। जो ऐतिहासिक तथ्य हैं उन्हें तोड़ा-मरोड़ा गया है और उन्हें मनमाने तरीके से घुमाकर लिखा गया है।

भारतीय आर्य संस्कृति विश्व की प्राचीनतम, श्रेष्ठ एवं समृद्ध संस्कृति है। भारत में जो लोग हिन्दू हैं वे सभी आर्य हैं। आर्य शब्द का ही पर्यायवाची तथा परिवर्तित नाम हिन्दू है। सभी हिन्दू आर्य हैं, इनमें कोई अनार्य नहीं है। अनार्य केवल वे हैं जो बाहर से आये, हिन्दू से इतर मुस्लिम, ईसाई आदि। भारत भूमि का प्राचीन नाम था 'आर्यावर्त' (आर्यों का देश)। भारत भूमि पर लाखों वर्षों से रहने वाले लोग आर्य हैं। इस धरती पर जो पहला मानव पैदा हुआ वह आर्य था। आर्य भारत के आदिवासी (मूलनिवासी) हैं। आर्यों से पहले यहाँ कोई नहीं था।

सृष्टि के आदि में महर्षि ब्रह्मा तथा महर्षि मनु की उत्पत्ति मानी जाती है। वे आर्य थे। सृष्टि के आदि में चार महर्षि अग्नि, वायु, आदित्य तथा अंगिरा हुए जिनके हृदयों में परमेश्वर ने एक-एक वेद का प्रकाश किया, वे आर्य थे। आर्यों की ही एक शाखा दक्षिण भारत में 'द्रविड' नाम से है। ये लोग वेदों के प्रकाण्ड पण्डित होते हैं।

भारत में सुर (देव) तथा असुर जातियाँ भी हुई हैं। सुर (देव) नैतिकता एवं सामाजिक मर्यादा पर चलने वाले लोग थे। ये लोग मांसाहार, सुरा एवं सुन्दरियों के जालों से दूर थे जबकि असुर लोग सामाजिक मर्यादाओं तथा नैतिकता को नहीं मानते थे। वे भोगवादी तथा उच्छृंखल प्रवृति के थे। सुरा, सुन्दरी तथा मांसाहार उनको प्रिय थे।

राजा हिरण्यकशिपु ईश्वर तथा धर्म में विश्वास न करने वाला नास्तिक था। हिरण्यकशिपु की बहन होलिका भी अपने भाई के ही मत में थी। राजा हिरण्यकशिपु का एक पुत्र प्रहलाद अपनी माता के संस्कारों एवं शिक्षाओं से आस्तिक, धार्मिक, एवं नैतिक बन गया। वह उज्जवल भारतीय संस्कृति पर विश्वास करता था। स्वेच्छाचारी राजा को यह स्वीकार नहीं था। वह चाहता था कि प्रहलाद भी उसकी तरह स्वेच्छाचारी, अधार्मिक तथा नास्तिक बने। राजा विष्णु ने अन्यायी राजा हिरण्यकशिपु का वध कर दिया तथा धर्ममार्ग पर चल रहे प्रहलाद की रक्षा की। (विष्णु पुराण तथा नृसिंह चम्पू में कथा पढ़ें।)

श्रीमती आशा गौतम ने अपने लेख में कुछ बातें अपने मन से बनाकर लिखी हैं और इतिहास को विकृत करने का प्रयास किया है। उन्होंने लिखा है कि **सुर सुरा पीते थे जबकि असुर सुरा नहीं पीते थे।** लेखिका ने वास्तविकता को बिलकुल उलट दिया है। वास्तव में सुरा असुरों को बहुत प्रिय थी जबकि सुर सुरा से दूर रहते थे। लेखिका ने लिखा है **कि आर्य लोग यज्ञों में घी, अन्न तथा पशुओं की बलि देते थे। यज्ञों में पशुबलि कभी नहीं दी जाती थी। यज्ञ का एक नाम 'अध्वर' अ=नहीं, ध्वर=हिंसा अर्थात् हिंसा का अभाव।** यज्ञ के लिए जो काष्ठ काम में लिया जाता है, उसकी भी अच्छी तरह जाँच की जाती है। घुन, दीमक लगा हुआ काष्ठ यज्ञ में काम में नहीं लिया जाता है। यह ध्यान रखा जाता है कि काष्ठ में कोई भी जीव न हो। यज्ञ की सामग्री की भी जाँच की जाती है कि उसमें कोई जीव न हो। यज्ञवेदी के चारों ओर हल्दी की कार लगाई जाती है जिससे कोई चींटी भी आकर अग्नि में न जल पावे। रात्रि में हवन करना इसलिये वर्जित है कि रात्रि में यज्ञ के प्रकाश से आकर्षित होकर कुछ कीट-पतंग अग्नि में गिर सकते हैं।

होली का पर्व राजा हिरण्यकशिपु के समय शुरू नहीं हुआ है। यह त्यौहार बहुत प्राचीन है। वैदिक काल में यह 'शारदीय नव शस्येष्टि यज्ञ' नाम से मनाया जाता था। प्रत्येक ग्राम कस्बे में यज्ञ होते थे। उनमें नई फसल में उत्पन्न नये धान की आहुतियाँ दी जाती थीं। वह प्रथम धान देवों को अर्पित किया जाता था। होली सभी आर्यों-अनार्यों का पर्व है। इसमें कोई विद्वेष भावना नहीं है। यह बुराई पर अच्छाई का पर्व है। होली के इतिहास को विकृत रूप में प्रस्तुत कर विद्वेष नहीं फैलाया जाना चाहिए। विराट हिन्दू समाज में आर्य और अनार्य के विष-बीज बोना गलत है। हमें हमारी उज्जवल भारतीय संस्कृति की रक्षा करनी चाहिए। ●

यज्ञ करने से लाभ

१. जल, वायु, भूमि आदि की शुद्धि होती है।
२. उत्तम स्वास्थ्य, दीर्घायु तथा विशेष सुख शान्ति की (स्वर्ग की) प्राप्ति होती है।
३. अनेक रोगों से निवृत्ति मिलती है तथा मान सम्मान में भी वृद्धि होती है।
४. प्रकृति का संतुलन बना रहता है अर्थात् ऋतुचक्र भी सही चलता रहता है।
५. वातावरण में विद्यमान हानिकारक-रोगकारक कीटाणुओं का नाश होता है।
६. सुनने में आता है कि घी के एक बूंद से पाँच अरब परमाणु निकलते हैं जो वायु में विद्यमान रोगाणुओं का नाश करते हैं।
७. यज्ञ के धुएँ से वायुमण्डल के ओजोन पर्त में बने छिद्र बंद हो जाते हैं जिससे कि पृथ्वी पर पराबैंगनी किरणे अन्तरिक्ष से नहीं आ पाती है।
८. व्यक्ति की धर्म के प्रति रूचि, प्रेम व विश्वास में वृद्धि होती है।
९. जिस घर में दैनिक हवन होता है वहाँ कोई बच्चा अल्पायु में किसी संक्रामक रोग से मृत्यु को प्राप्त नहीं होता है।
१०. यज्ञ करने से विषैली गैसों का नाश होता है।
११. यज्ञ करने से इस लोक व परलोक दोनों जगह सुख शान्ति व समृद्धि की प्राप्ति होती है।

- स्वामी शान्तानन्द सरस्वती,
एम.ए., दर्शनाचार्य, वैदिक गुरुकुल
भवानीपुर, जिला-कच्छ, गुजरात
चलभाष- ०९९९८५९४८१०

इस्लामिक देश मलेशिया से आचार्य प्रवर आनन्द पुरुषार्थी का आर्यों के नाम पत्र

-आचार्य आनन्द पुरूषार्थी
अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक मिशनरी, होशंगाबाद (म.प्र)
चलभाष-९४२५४९५२४६

समादरणीय आर्यप्रवर, सादरं नमस्ते, ईश्वर कृपयात्र कुशलं तत्रास्तु!

अपनी आठवी विदेश यात्रा के दूसरे चरण में सिंगापुर से ६ घंटे की बस यात्रा कर दोपहर २ बजे हम क्वालालम्पुर पहुँचे। मलेशिया कोलकाता से २६०० कि.मी. तथा सिंगापुर से ३५० कि.मी. दूर है। यह देश चीन सागर की मध्यस्थता में पूर्वी व पश्चिमी मलेशिया के रूप में विचित्र रूप से विभाजित है। पश्चिमी मलेशिया थाईलेंड की सीमा को स्पर्श करता है तो पूर्वी मलेशिया इंडोनेशिया व ब्रूनेई को। सिंगापुर को पुलव राजमार्ग से जोड़ लिया है तथैव वियतनाम व फिलीपींस की समुद्री सीमायें भी निकटतम हैं। मलेशिया का क्षेत्रफल ३२९८४७ वर्ग किमी. है जो आंध्रप्रदेश व पंजाब के संयुक्त क्षेत्रफल के बराबर है। इसमें १३ राज्य ३ संघ प्रदेश व ९७ जिले हैं। मलयाचल के निवासियों द्वारा बसाया गया होने से व सिंगापुर के कुछ साथ रहने से इसका नाम मलेशिया हो गया। शताब्दियों से अत्रस्थ आदिवासी विकृत पौराणिक पूजा पद्धति को मानते रहे। १४वीं शताब्दी में इस्लाम की विचारधारा पहुँची। जोर जबरदस्ती व विवशता से ये उसके रंग में रंगते चले गये। १७वीं शताब्दी में पुर्तगालों का आक्रमण हुआ तो अठारहवीं शताब्दी में ईस्ट इंडिया कंपनी ने अपनी कुटिल नजर डाल दी। द्वितीय विश्वयुद्ध में ३ वर्षों तक सिंगापुर सहित यहाँ पर भी जापान का कब्जा रहा पर पुन: अंग्रेजों ने इसे जीत लिया। चीनी व भारतीय मजदूरों को अंग्रेजों ने यहाँ सप्लाई किया। उनकी ही पीढ़ी यहाँ की स्थायी निवासी बन गई है। कुछ प्रदर्शनों और अन्तर्राष्ट्रिय दबाव के चलते, बिना किसी बलिदान के मलेशिया को ३१ अगस्त १९५७ को अंग्रेजों ने स्वतंत्र कर दिया था। यह एक विकसित राष्ट्र है। यहाँ की जनसंख्या ३ करोड़ १८ लाख है। यहाँ मूलनिवासी मलय (मुस्लिम) ६२%, बौद्ध २०%, ईसाई ९%, हिन्दू ७% व अन्य २% हैं। ३० लाख प्रवासी कर्मचारी कई देशों से आकर सेवारत हैं। बर्मा, फिलीपीन्स, इंडोनेशिया आदि देशो से २ लाख से ज्यादा घुसपैठ होने से चोरी, लूट की घटनायें यहाँ घटती रहती हैं। यहाँ की मुद्रा को रिंगित RM कहते हैं जो भारत के २०/- के बराबर है। भारत से ढाई घंटे पूर्व यहाँ सूर्योदय होता है। राजा का चयन नौ राज्यों के पारंपरिक शासक करते हैं। नागरिकता मिलना अत्यन्त कठिन है पर पर्यटन या नौकरी हेतु वीसा सरलता से मिल जाता है। यहाँ की २ राजधानी है क्वालालम्पुर (विधायिका) पुत्राजया (कार्यपालिका)। भूमध्य रेखा पर होने से इसे वर्षावन कहते हैं। लगभग पूरे वर्ष बारिश होती है। ठंड नहीं पड़ती उमस व आर्द्रता बनी रहती है। मुस्लिमों को अधिक संतान पैदा करने पर शिक्षा, चिकित्सा, धन आदि की सुविधा मिलती है। हदूद कानून (शरीयत) दो विधानसभाओं ने पारित कर दिया है पर बौद्ध व हिन्दू विरोध कर रहे हैं क्योंकि आगे इससे अल्पसंख्यकों पर दबाव पड़ेगा। मलेशिया तेल उत्पादन में विश्व का चौथा देश है। अत: पेट्रोल ४०/- व डीजल ३५/- है पर कारें मंहगी हैं। यहाँ के लक्ष्मीनारायण मंदिर की व्यास पीठ से हमें वेदविषयक तीन प्रवचनों का सुअवसर प्राप्त हुआ। हमने वेदों की विषयवस्तु, १६ संस्कार व आदर्श मार्गदर्शकों के अनुकरण पर चर्चा की। हिन्दू जाति की वर्तमान समस्याओं हेतु संतानों को संस्कारित करने व वानप्रस्थ का सुझाव दिया। इसी मंच से सायं **प्रख्यात पौराणिक विद्वान् श्री रमेश भाई ओझा जी** (गुजरात) का प्रवचन हुआ। हमने सत्यार्थ प्रकाश सहित कुछ वैदिक साहित्य आपको भेंट किया। संस्कृत में वार्तालाप के दौरान जब हमने बताया कि आपके नगर पोरबंदर के Advocate Bar Council में हम न्यायविषय पर वकीलों को व्याख्यान दे चुके हैं तो आपको सुखद आश्चर्य हुआ और आपने हमें अपने आश्रम में आमंत्रित किया। हमने भी पूर्व में आपको होशंगाबाद गुरूकुल आमंत्रित किया। मंदिर के मुख्य पुरोहित पं. दिनेश जी शास्त्री ने योगदर्शन के प्रथम व दूसरे पाद का अध्यापन किया। व्यासभाष्य भी आवश्यक होने पर पढ़ाया। आपके छोटे पंडित जी व धर्मपत्नि भी कक्षा में बैठी। अपने शिष्य प्रिय पीयूष जी Engg. के घर यज्ञ किया, दम्पत्ती व मित्रों को वैदिक धर्म की वृद्धि हेतु टिप्स दिये। मंदिर के पुस्तकालय हेतु बहुत सारी पुस्तके भेंट की। **मलेशिया के ईपोनगर में १९४२ में आर्य समाज स्थापित हुआ था** पर शाखा वृक्ष से दूर हो तो सूख जाती है। राजधानी से २०० कि.मी. दूर हमने उनका पता लगाकर उन्हें सार्वदेशिक सभा से जुड़ने का आग्रह किया। १,२ नवम्बर को सिंगापुर आर्य सम्मेलन में आमंत्रित किया। कुछ टिप्स दिये। आप मंदिर के पुनर्निर्माण का यत्न कर रहे हैं। **फिजी के बाद ये दूसरा देश है जब हम अपने दिल्ली आर्य सभा के मित्र श्री विनय आर्य जी को विदेशी आर्यों का सम्पर्क सूत्र देने को उद्यत हुए हैं।** दर्शनीय स्थलों में KL Tower (ऊँचाई ४२० मीटर), Twin Tower (जुड़वा इमारते), म्यूजियम, २०० में Sea Lion द्वारा बॉस्केटबाल खेलना अन्य आज्ञा पालन, सैकड़ों जीव, तितलियों, सापों व मधुमक्खी का संसार, ६ D मूवी में जंगल की सैर, कार्तिकेय जी की १४० फीट की प्रतिमा, गुफायें, समुद्र तट बौद्धों व हिन्दुओं के मंदिर, कुछ प्रसिद्ध मस्जिदें, सुल्तान अब्दुल समद भवन प्रमुख है। १९ मई को एयरएशिया के विमान से कलकत्ता व Connecting flight से दिल्ली व भोपाल पहुँचेगें जहाँ के निकटतम वर्धा में आर्यसमाज के विशाल प्राङ्गण में पंचदिवसीय यज्ञ का आयोजन है। ●

---

५८ दम्पत्तियों द्वारा की गई पूर्णाहुति से
आर्य समाज वर्धा का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दिनांक २१ से २५ मई २०१४ तक प्रतिवर्ष के अनुसार इस वर्ष भी ऋग्वेद यज्ञ (आंशिक) का आयोजन आर्य समाज वर्धा, जिला-विदिशा (म.प्र.) द्वारा किया गया। जिसमें आचार्य आनन्द पुरूषार्थी जी होशंगाबाद मुख्य वक्ता व पंडित कुलदीप आर्य जी (बिजनौर, उ.प्र.) भजनोपदेश के रूप में आमंत्रित थे। यज्ञ सत्र प्रात: ८ से ११ बजे तक व प्रवचन सत्र रात्रि कालीन ८:३० से ११ बजे तक होता था। आचार्य जी वेद के किसी एक मंत्र का संहाय लेकर उसकी व्याख्या करते थे। वेद मंत्रों के अर्थ अनेक प्रकार से किये जा सकते हैं, परन्तु आध्यात्मिक अर्थों पर विचार करने से ईश्वर के प्रति श्रद्धा में वृद्धि होती है। सांसारिक कार्यों में उलझ कर हम स्वाध्याय नहीं करते हैं। हमारे पूर्वज ऋषियों ने एक-एक मंत्र पर पूरा जीवन लगा दिया। आज भी उनके नाम उन-उन मंत्रों के साथ लिखे जाते हैं। अंतिम दिन ५८ दम्पति २१ यज्ञ वेदियों में पूर्णाहुति करने को उद्यत होकर नयनाभिराम दृश्य उपस्थित कर रहे थे। कुछ कन्याओं को आचार्य जी की प्रेरणा से आलियाबाद (आंध्रप्रदेश) के कन्या गुरूकुल आर्ष शोध संस्थान में शास्त्रों के अध्ययनार्थ भेजने की व्यवस्था की गई। आर्यमुनि जी (ललरिया), राममुनि जी (कुरवाई), पंडित कमलकिशोर शास्त्री जी (बेरसिया), भगवतदत्त जी (वर्धा) आदि महानुभावों ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति दर्ज कराई। मंच का संचालन मंत्री रामकृष्ण आर्य ने किया। नन्नूलाल आर्य, मूरतसिंह आर्य, सूर्यप्रकाश आर्य, मनमोद सिंह जी का तन-मन-धन से सहयोग प्राप्त हुआ। मेहरबानसिंह आर्य जी ने अपने आर्य विद्यालय में विद्वानों के रूकने की व्यवस्था की।

दो बात हमें कहनी है केवल

दो बात हमें कहनी है केवल, अपने देश के पहरेदारों से,
हमें जवाब तलब करना है, देश के इन गद्दारों से,
लोक तंत्र में किसने ऐसा, नेता-तंत्र चलाया है ?
भारत माँ के दामन में रे ! किसने दाग लगाया है ?
देश हमारा निर्धन क्यों है ? नेता क्यों धनवान बना ?
लोकतंत्र के हम स्वामी हैं, नेता क्यों भगवान बना ?
अपराधी नेताओं को क्यों दंड नहीं मिल पाता है ?
लूट रहा है देश, कौन वह ? उसको कौन बचाता है ?
रोज डकैती, खून-खराबी, ये सब कौन कराता है ?
अपराधी का अभिनंदन क्यों उसको ताज पहनाता है ?
बलात्कार-अपहरण घिनौने कांड यहाँ क्यों होते हैं ?
मंत्री के घर अपराधी क्यों, बड़े चैन से सोते हैं ?
जनता यहाँ भिखारी क्यों है, नेता वैभवशाली क्यों ?
बैंको में दौलत किसकी है, यहाँ खजाना खाली क्यों ?
दफ्तर में घूसखोरी क्यों है, यहाँ कमिशनखोरी क्यों ?
जनता की सरकार यहाँ, फिर जनता के घर चोरी क्यों ?
बड़े-बड़े अपराधी को, कानून बता क्यों छोड़ रहा ?
कानून बनाने वाला ही, कानून बता क्यों तोड़ रहा ?
कैसा है यह जेल तोड़कर, अपराधी सब भाग रहे ?
चौकीदार क्या सोया है, चोर यहाँ क्यों जाग रहे ?
बुद्धिजीवी क्यों दूर ? व्यवस्था क्यों मजबूर हुई ?
राजनीति व्यवसाय बनी, वह क्यों सेवा से दूर हुई ?
शासक शोषक बना, घोटाला रोज यहाँ क्यों होता है ?
शासन क्यों निष्प्राण बना ? वह आँख मूंद क्यों सोता है ?
खूनी और डकैतों से क्यों पुलिस यहाँ घबराती है ?
आतंकवाद से क्यों यहाँ, सरकार बहुत डर जाती है ?
राजनीति क्यों गदीं है ? शासन इतना गंदा क्यों ?
किसान लोग जान गँवाते, बाँध गले में फंदा क्यों ?
गाँव-गाँव को छोड़ लोग क्यों भाग रहे हैं शहर-शहर ?
भारत माता ग्राम वासिनी, फिर वैसी क्यों नहीं यहाँ लहर ?
ताज पहनने वाले ताज पहन लेना,
पहले जवाब दो मेरे चंद सवालों का ?
अपराधी है कौन बता ?
इन सारे यहाँ सवालों का ?

-डॉ. लक्ष्मी निधि
निधि विहार, न्यू बारादारी,
साकची, जमशेदपुर, झारखण्ड
चलभाष-०९९३४५२१९५४

असली वोट का अकाल

गाली-गलोज का थम गया प्रचार
वैर-वैमनस्य की घिस गई धार
झूठ ही झूठ का प्रसार सच की किस्मत गई हार
कांग्रेस न जीत सकी ले के वोट नगद या उधार
देश की अखण्डता की सोच का नाम-ओ-निशाँ नहीं
लगे नेताओं को खुशगत
सामाजिक एकता, भाईचारे, पाट न पाएँ हम,
इतनी गहरी डाल रहे दरार
होशियार मतदाता सचेत, सावधान, होशियार
बना लो नरेन्द्र भाई अब स्थायी सरकार
काम करो, कुछ नहीं, ढेरों काम, सुनो समझो दर्द हमारा,
जो दे गई तुम्हारी पूर्वज सरकार
थाने में न सताये सिपाही, चौराहे पे डकैती न डाले यातायात पुलिस
रजिस्ट्रार ऑफिस में केवल हो मकान का पंजीयन,
घूसखोरी की न हो दरकार
हर सड़क हो तकनीक के अनुसार,
स्कूल के अध्यापक हों ज्ञान-विज्ञान के आधार
हर नागरिक दायित्व निभायें,
धरने पे न जाए मांगने केवल अधिकार
आम आदमी पार्टी,BJD,BSP, SP, TME,JD(U)
भारत के विकास में हैं क्या यह भागीदार ?
रजवाड़े छूट गए, अब लगाते अन्याय का खुल्लम-खुल्ला दरबार
रोक सको तो रोको इनकी रफ्तार
सत्य आधारित कर्म करो, सौ साल जीयों,
साल के दिन हो कई हजार
ऐसी करनी कर चलो, हम हँसे जग रोय जार-जार
सावधान मोदी जी, हमारी सुनो पुकार,
आ न जाए दोबारा कांग्रेस सरकार
घर को सावधान त्याग करों,
आपसी फूट से गिर न जाए बनी बनाई सरकार
हमारा वोट मत कर देना बेकार

-मोहनलाल मगो
पी-६५, पाण्डव नगर, दिल्ली

एक व्यंगयात्मक सच्चाई

ऐ! मदहोश, क्यों फालतु बड़-बड़ा रहा है, कुछ तो कर होश।
मारूँ या बिना मारे ही कर लेगा मुँह बन्द और हो जायेगा खामोश।।

मद-होश व्यक्ति ने कहा:-

ओ! भले मानुष्य, मुझे तो आप मार भी सकते हैं, पीट भी सकते हैं।
पर वे नेता और मन्त्री, जो पीते हैं दिन-रात, उनके पास तो आप जाने से भी डरते हैं।।
मैंने तो किया है अपना ही नुकसान, बेची है अपनी ही सम्पत्ति और बेचा अपना मकान।
पर वे तो बेच रहे हैं देश की सम्पत्ति, आबरू, स्वाभिमान, धरती और आसमान।।
फैला रहे हैं देश में रिश्वत खोरी, भ्रष्टाचार, अन्याय, जिसका नहीं है कोई अनुमान।
अपने देश का घटा रहे हैं सम्मान, गौरव, ईज्जत, प्रतिष्ठा और स्वाभिमान।।
उनको न तो देश की चिन्ता, उन्हें तो केवल अपनी कुर्सी बचाने का रहता है ध्यान।
वे तो दोनों हाथों से लूट रहे हैं देश को, जिससे देश में महगाई छू रही है आसमान।।
जिन पर चल रहे हैं सैकड़ों मुकदमें, वे ही बन बैठे है सांसद, मन्त्री, MLA, अपनी छाती तान।
इसीलिए देश में बढ़ रहा है अन्याय, अत्याचार, लूट, खसौट जिससे प्रजा हो रही है परेशान।।
आतंकवादियों के बुलन्द हैं हौसले, फैलाते हैं आतंक, बन कर हमारे देश के महमान।
हमारी सरकार की ही स्वार्थ भरी, तुष्टिकरण की दुर्बल नीति, बना देगी हमें जल्दी ही गुलाम।।

अब वहीं शराबी कहता है:-

मैं तो छोड़ दूँगा, आपके सामने ही, न पीने की खाता हूँ कसम, पकड़ता हूँ अपने दोनों कान।
उनकी छुड़ाओ तो में जानूँ, जो देखते हैं रंग-रंगेलियाँ और करते हैं मस्ती, करके मद्य-पान।।

उसकी बाते सुन कर:-

मैंने सोचा, यह कोई साधारण व्यक्ति नहीं, है कोई चिन्तक, मननशील और देशभक्त महान्।
इसी भाँति सभी देशवासी हो जावें, तो शीघ्र ही हो जावे, मेरे प्यारे देश की प्रगति और उत्थान।।

मेरी मनोकामना:-

जब मेरे देश का हर बच्चा, नौजवान, तरूण और वृद्ध, रखने लगे देश हित का सर्वदा ख्याल।
तभी आयेगा वहीं **"राम राज्य"** जिसके राज्य में नहीं था कोई दु:खी, निर्धन और सभी थे **"खुशहाल"**।।
सभी थे खुशहाल! सभी थे खुशहाल!!

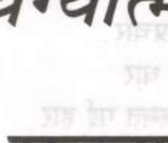

- खुशहालचन्द्र आर्य
मार्फत-गोविन्दराम जी
आर्य एण्ड सन्स
९२०, महात्मा गाधी रोड,
(दो तल्ला) कोलकता-०७
चलभाष-९०३८४८५१५५

गुरूकुलीय शिक्षा पद्धति से शिक्षित युवक-युवतियों के वैवाहिक परिचय सम्मेलन की महती आवश्यकता

- आचार्य अग्निमित्र
स्वामी विवेकानन्द नगर, कोटा (राज.)
चलभाष-०९९२९५-११०३१

वैदिक परम्परा में विवाह को एक महत्वपूर्ण संस्कार माना गया है जिसका उद्देश्य समाज तथा राष्ट्र का विकास करना है। विख्यात पश्चिमी समाजशास्त्री हांबेल का कथन है कि विवाह सामाजिक नियमों का पुंज है जो कि विवाहित युग्म के पारस्परिक और उसके बच्चों के समाज के प्रति संबंधों को नियंत्रित तथा परिभाषित करता है। विवाह में जिन मूलभूत तत्वों को महत्व दिया जाता है उन तत्वों के आधार पर ही देश का सामाजिक व सांस्कृतिक विकास होता है।

वैदिक धर्म के अनुसार विवाह उन्हीं का होना चाहिए जिनके गुण कर्म और स्वभाव सदृश हों तथा जिन्होंने विवाह के लिए वेदों का अध्ययन, विद्या ग्रहण, युवावस्था, ब्रह्मचर्य का पालन, विवाह से पूर्व गुरू की विधिवत अनुमति तथा कर्म के आधार पर वर्ण का चयन आदि आवश्यक योग्यताएँ पूर्ण कर ली हों।

विवाह की इन सभी आवश्यक योग्यताओं में से अधिकांश का सीधा संबंध वर या वधु के आचार्य या गुरूकुल से है, क्योंकि आचार्य द्वारा समावर्तन में जो दीक्षांत उपदेश दिया जाता है वही व्यक्ति के गृहस्थ जीवन की आधार भूमि तैयार करता है। साथ ही गुण, कर्म तथा स्वभाव का जितना ज्ञान गुरूकुल के आचार्य को होता है उतना अन्य किसी को नहीं। इसलिए आज भी जब-जब व्यक्ति के चरित्र प्रमाण पत्र की आवश्यकता होती है तो जिस शिक्षण संस्थान में उसने अध्ययन किया है उसके चरित्र प्रमाण पत्र को सर्वाधिक महत्व दिया जाता है।

दूसरी बात व्यक्ति के वर्ण के निर्धारण का अधिकार भी धर्मशास्त्रों ने गुरूकुल के आचार्य को ही प्रदान किया कि विवाह से पूर्व कन्याओं की सौलहवें वर्ष में और पुरूषों की पच्चीसवें वर्ष में परीक्षा कर वर्ण नियत करना चाहिए जिससे समान वर्ण में विवाह किया जा सके।

इस विवेचन से स्पष्ट है कि वैदिक परम्परा में जिस समान गुण, कर्म, स्वभाव वाले युवक युवती के विवाह पर बल दिया गया है उसके प्रमाण पत्र देने का अधिकारी मात्र गुरूकुल है।

शेष पृष्ठ ३८ पर....

वर्तमान सरकार का दायित्व – 'हिंसा मुक्त भारत' का निर्माण

- गिरीश त्रिवेदी
४९६, शनीवार पेठ, इलिना अपार्ट.
पुणे (महा.)-४११०३०

चेतना को झकझोर देने वाला एक दृश्य ७ अप्रैल २०१४ को टीवी पर देखा। जिसमें सी.आर.पी.एफ. का एक जवान गुहार लगा रहा था। **'मुझे बचालो मेरे भाई। मैं मर जाऊँगा, मेरे दो छोटे-छोटे बच्चे हैं, मुझे बचा लो मेरे भाई। मेरे शरीर से सारा खून निकल चुका है, दो घंटे हो गये हैं। कोई हेलिकोप्टर नहीं आया। मैं राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री से कहता हूँ मुझे बचा लो मेरे भाई।' कराहते हुए आहाहा।**

यह समाचार दृश्य कई समाचार चैनलों पर ७ अप्रैल दोपहर को कुछ देर तक बताया गया। आठ अप्रैल को फिर प्रातः टीवी पर यह सुनने को मिला कि चार घंटे बाद इन्द्रजीत की मौत हो गई थी।

क्या हमारे देश के सैनिकों और सुरक्षा कर्मियों के जीवन इतने सस्ते हैं कि उनकी मृत्यु की उपेक्षा की जाए ? प्रश्न एक इन्द्रजीत का ही नहीं है दशकों हो गये हमारे देश की गलत राजनैतिक नीतियों के कारण कश्मीरी आतंकवाद, नक्सली समस्या और ईशान्य भारत में अलगाववादी समस्या देश के केंसर बने हुए हैं और सैनिकों की प्रतिदिन बली चढ़ती जा रही है। इन्द्रजीत को नक्सलवाद ने मारा। ठीक पाँच दिन बाद १२ अप्रैल को और तेरह जानें नक्सलवाद ने ले ली। जैसा कि एक नेता ने कहा था **'ये लोग होते ही हैं मरने के लिये।'** यदि हमारी नई सरकार भी ऐसा ही सोचती है तो फिर मुझे उसे कुछ कहना नहीं है। बस इतना कह सकता हूँ कि **'देश को आतंकवाद और नक्सलवाद के नासूर की पीड़ा सहन करने के लिये छोड़ दीजिये और आप अपना राजनीति का करोबार चलाते रहिये जैसा कि पिछली सरकार करती रही है।'**

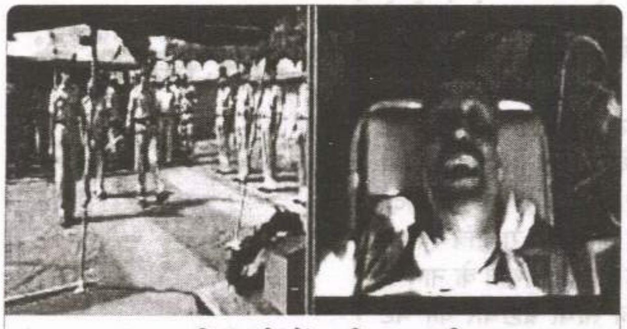

नक्सली हमले में शहीद इन्द्रजीत

नई सरकार गठित हो चुकी है। देश की जनता की ओर से उसे शुभकामनाएँ। जनता की सरकार से कई आशाएँ हैं। जनता बरसों से सुशासन की भूखी बैठी है। देश में समस्याओं के अम्बार हैं। सरकार के लिये एक मौका भी है कि युक्तिपूर्ण ढंग से जनता को विश्वास में लेकर सभी समस्याओं को सुलझाएँ और प्रशंसा के पात्र बनें।

मैं राष्ट्र की सभी समस्याओं को तीन भागों में वर्गीकृत करके देखता हूँ। **१. असुरक्षा और अशांति अर्थात् भयाक्रांत वातावरण, २. समृद्धि का अभाव, ३. भारतीयता में निष्ठा का अभाव अर्थात् राष्ट्रवाद का अभाव।**

सरकार को चाहिये कि जनता की समृद्धि से पहले सुरक्षा के स्थाई प्रबंध करें। सोचिये समृद्ध तो हो गये और फिर आतंकवाद की चपेट में आकर मर गये तो वह समृद्धि किसके लिये ? जैसे चेचक मुक्त भारत, पोलियो मुक्त भारत वैसे ही राष्ट्रीय संकल्प हो **'हिंसा मुक्त भारत'**। वैसे भी हमारे राष्ट्र की प्राचीन काल से ही अहिंसक राष्ट्र के रूप में प्रसिद्धि रही है। गौतम, महावीर और गांधी का भारत अहिंसक नहीं तो क्या आतंकवादी बनेगा।

जब हम राष्ट्रीय शांति की कल्पना करते हैं तब आवश्यक होता है सबको समान अधिकार, समान विकास और समान सुरक्षा। इसके लिये साधन है समान शिक्षा व्यवस्था जो देशप्रेम का संस्कार दे और समान कानून व्यवस्था। मानवीय प्रकृति है कि वह दूसरों से अधिक पाना चाहता है इसका ही प्रतिफल है हम आपस में 'दूसरों से उपर खास' होना चाहते हैं। हम आज मैं मराठी, मैं जाट, मैं मुस्लिम के विनाशकारी विभाजन में फँस चुके हैं और हमारा देशप्रेम विस्मृत होता जा रहा है। जब तक सभी के लिये राष्ट्र सर्वोपरि की शिक्षा अनिवार्य न हो और समान कानून व्यवस्था न हो तब तक देश के नागरिक आपसी वैमनस्य से पीड़ित ही रहेंगे। अन्ततः किसी को विशेषाधिकार क्यों दिया जाए ? ऐसा क्या त्याग-बलिदान कर दिया देश के लिये जो वे अपने को खास दर्जे में चाहते हैं ? क्यों कोई भारत में रहकर भारत को, भारतीयता को दोयम दर्जे में रखना चाहता है ?

राष्ट्रीय शांति के लिये आवश्यक है आतंकवाद के साथ अमेरिका आदि देशों की तरह कठोरता से कदम उठाए जाए। जब तक आतंकियों को सर चढ़ा के बैठाया जाएगा, उनके साथ नरम नीति अपनायी जाएगी तब तक देश कराहता ही रहेगा।

हिंसा कभी आदर्श नहीं हो सकती और हम सच्चे मन से **'हिंसा मुक्त भारत'** चाहते हैं तो **'गौहत्या बन्दी'** कानून सर्वप्रथम लागू किया जाए। उच्चतम न्यायालय ने भी इसे उचित बताते हुए सरकार को कानून बनाने का आदेश बरसों पहले ही दिया हुआ है तो अब ही सही कानून बनाकर न्यायालय का सम्मान क्यों नहीं किया जाए।

मनुष्य ही पृथ्वी पर एक मात्र ऐसा प्राणी है जो सभी पर शासन करता है। बाकी सभी प्राणी मूक हैं। मानव की मानवता इसी में है कि वह सभी के साथ न्याय करे। सरकार का कर्तव्य है कि उन सब पशु-पक्षियों के हित में कानून बनाए कि उनका कत्ल न किया जाए। उन्हें सुविधाजनक वातावरण में रखा जाए और दाना पानी भी पूरी मात्रा में दिया जाए। दोषी वधशालाओं, पोल्ट्रिफार्मों और कसाइयों के लिये उचित कठोर दण्ड का प्रावधान हो।

देश में शांति और सुरक्षा के लिये सरकार को बड़े साहसी निर्णय लेने होंगे। समर्थन और विरोध के स्वर भी उठेंगे। यदि बीमारी का उपचार करना है तो कड़वी गोली से कब तक डरते रहेंगे। इंजेक्शन का दर्द तो होगा, चीख भी निकलेगी मगर मुल्क में अमन चैन आ जाएगा। आज भाई-भाई पर आँखें फोड़ रहे हैं कल एक हो कर गले मिलेंगे, हर्षित होंगे। आखिर प्रगति, शांति, स्वाभिमान और सुरक्षा में सब के सब लाभान्वित होंगे। यह बात पूरी जनता और सरकार को समझनी चाहिये।

अब तक नक्सलवाद को आतंकवाद के रूप में प्रचारित किया जा रहा है। वास्तव में जेहादी आतंकवाद और कश्मीरी उपद्रव से नक्सल-वाद की प्रकृति अलग है। नक्सली हिंसा को किसी भी तर्क से उचित नहीं ठहराया जा सकता। हिंसा निंदनीय है। सरकारें तो नक्सलवाद को भलि-भाँति जानती समझती है। आओ अब हम भी संक्षेप में नक्सलवाद को समझ लें। क्यों ये खून के प्यासे हैं।

''**हमें देश की अखण्डता को बरकरार रखना है। हमें देश तोड़ना नहीं है लेकिन प्रचलित राजकीय व्यवस्था नष्ट करनी है।**'' यह कहना है नक्सलवाद के एक प्रमुख नेता गणपति का। नक्सलवाद एक सशस्त्र क्रांति है। यह हिंसक आंदोलन है शोषण के विरूद्ध। यह आंदोलन विरोध करता है भ्रष्ट राजनीति एवं भ्रष्ट राजनेताओं का। यह आंदोलन है अपने हक की मांग करने का मगर तरीका मात्र हिंसक है जो कि गलत है। नक्सलवाद का उद्देश्य वनवासी, गिरिवासी, शोषित, पीड़ित एवं वंचितों का उत्थान है, क्या सरकारें नहीं चाहती कि देश के ये गरीब नागरिक भी प्रगति करें?

सरकार जो वनवासियों और गिरिजनों को ऊपर उठाने के लिये योजनायें बनाती है उनमें सत्यता होती तो ये नक्सलवाद नहीं होता। सरकार जो इतने प्रकार के आरक्षण चलाती है पिछड़ों को आगे लाने के, सभी व्यर्थ है। ये मात्र राजनेताओं के वोट बैंक पक्के करने के स्टंट मात्र है। आरक्षणों से भला होता तो क्यों है ये असंतुष्ट। सभी तरह की प्रगति से वंचित रखा गया है इन्हें जिसका सीधा परिणाम है ये नक्सलवाद।

आदिवासी, वनवासी, पर्वतवासियों पर अब तक राजतंत्र शोषण ही करता आया है। इनका बहुत दमन हुआ है। इनके उत्थान के नाम से जो भी सरकारी धन खर्च हुआ वो सीधा का सीधा भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ गया।

सामाजिक, आर्थिक समता और न्याय ये इस आंदोलन के केंद्रबिन्दु है। नक्सलियों का मानना है कि मौजूदा राजव्यवस्था शोषणकर्ताओं द्वारा निर्माण की हुई राज पद्धति होने के कारण इसे समूल नष्ट करना या बदल के रख देना ये ही नक्सलवाद का अंतिम ध्येय है।

सरकार और सरकार के समर्थक ये एक पक्ष और इनके विरूद्ध ये सरकारी व्यवस्था अस्वीकार करने वाले वर्ग और नक्सलवाद ऐसा इस संघर्ष का स्वरूप है।

नई सरकार को चाहिये इनकी हिंसा की नीति छोड़ इन के सर्वांगीण विकास की नीति और नीयत बना कर तुरंत इनका उत्थान करें। झूठमूठ की बैठकों में कुछ धरा नहीं है। ऐसी बैठकें विफल ही होंगी। ये चाहते हैं भ्रष्टाचार का खातमा। इन्हें सामाजिक और आर्थिक प्रगति चाहिये। इन्हें शोषण का अन्त चाहिये। नई सरकार अब बौद्धिक कसरत करें।

दुनियाँ में जितनी भी क्रांतियाँ हुईं वे सब हिंसक ही थीं। होता यों है कि सशक्त पक्ष निर्बल पर लगातार अत्याचार करता ही जाता है और अन्ततः एक दिन ऐसा आता है कि शोषित शोषणकर्ता पर पलटकर वार कर देता है। ऐसे समय में शोषित वर्ग पूरी ताकत मुकाबले में झोंक देता है। परिणाम की परवाह नहीं की जाती। अन्ततः क्रांति सफल हो जाती है या फि र दमनकर्ता की भी जीत होकर शोषित बुरी तरह पराजित होकर अपना अस्तित्व ही खो देता है। अन्य क्रांतियों की तरह यह भी हिंसक क्रांति ही है। अब सरकार का कर्तव्य बनता है कि इस हिंसक क्रांति को अहिंसा के मार्ग पर लाए। नक्सली और सरकार दोनों याद करें कि जब यह नक्सलवाद पैतिस वर्ष पहले चला था तब यह पूरी तरह अहिंसक आंदोलन था एक आदर्श आन्दोलन था। अब यह अपने मूल उद्देश्य से भटक गया है ऐसा कहें तो गलत नहीं होगा। अपनी गलती सुधारना कोई गलत बात नहीं है। आखिरकार सवाल है प्रगति का, समता का, न्याय का, व्यवस्था परिवर्तन का। तो यह हिंसा से कभी संभव नहीं है।

७ अप्रैल को एक इन्द्रजीत की बली नक्सलवाद ने ली। क्या इस निरपराधी को मारकर उनका उद्देश्य पूर्ण हुआ? नहीं। तो अब इस हिंसा को यही पूर्णविराम देने की जिम्मेदारी नक्सलियों के साथ-साथ नई सरकार की भी है। सवाल आठ से नौ करोड़ गरीब व्यक्तियों की प्रगति का है।

भारत की जनता '**हिंसा मुक्त भारत**' के सपने संजोये आशा भरी नजरों से सरकार की ओर देख रही है। आशा है सरकार इस सपने को साकार करेगी और चीर स्थायी कीर्ति अर्जित करेगी। ●

रेल यात्रा में मांस परोसना बंद हो

सेवा में श्रीमान संपादक महोदय

मैं आपके सम्मानित पत्र के माध्यम से रेल्वे मंत्रालय केंद्रीय सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ कि रेलगाड़ियों में संयुक्त रूप से भोजन निर्माण (शाकाहारी एवं मांसाहारी) की व्यवस्था होती है। **विशुद्ध शाकाहारी रेलयात्री इस व्यवस्था के चलते रेल्वे के भोजन का लाभ नहीं उठा पाते,** जिससे उन्हें अत्यन्त असुविधा का सामना करना पड़ता है।

अंग्रेजों के द्वारा अपनी सुविधा की दृष्टि से रेलयात्रा में माँस युक्त भोजन की व्यवस्था की गई थी क्योंकि वे मांसाहारी थे। अहिंसा के पुजारी महावीर स्वामी और महात्मा गांधी के देश में देश को स्वतंत्र होने के ६६ वर्षों उपरांत भी **हम गुलामी काल की थोपी गयी भारतीय संस्कृति के विपरीत व्यवस्था को कब तक ढोते रहेंगे?**

अस्तु श्रीमान् जी से निवेदन है कि शाकाहारी यात्रियों के लिये पृथक भोजन निर्माण की व्यवस्था की जाये जिसमें पाचकों की ड्रेस एवं बर्तनों की व्यवस्था भी अलग हो। जिससे की शाकाहारी यात्रियों को यात्रा के दौरान भूखा नहीं रहना पड़े।

यदि यह व्यवस्था तत्काल संभव नहीं हो तो रसोई में मांस का पकाना तब तक बंद कर केवल शाकाहारी भोजन ही बनाया जावे। क्योंकि शाकाहारी भोजन को मांसाहारी और शाकहारी दोनों प्रकार के यात्री ग्रहण कर सकते हैं। धन्यवाद!

-**श्रीप्रकाश आर्य**, नागपुर, महाराष्ट्र
चलभाष-०९४२२१२०२८०

जनसंख्या दिवस -११ जुलाई २०१४

-सावरकर वाद प्रचार सभा
२६, के.पी. रोड, बुलन्दशहर (उ.प्र.)
चलभाष-०८९५८७७८४४३

१. जनसंख्या के हिसाब से १९४७ से पूर्व, अविभाजित भारत विश्व का सबसे बड़ा देश था।

२. अब खंडित भारत विश्व में दूसरा सबसे बड़ा देश है जबकि चीन प्रथम स्थान पर है।

३. चीन का क्षेत्रफल भारत से तिगुना है फिर भी उसने एक बच्चे की कठोर नीति कई वर्षों तक लागू की अब उसने दो बच्चों की नीति अपनाई है। उसकी जनसंख्या १३५ करोड़ है।

४. भारत की जनसंख्या १२५ करोड़ है जबकि विभाजन के बाद १९४७ में जनसंख्या केवल ३० करोड़ थी।

५. यहाँ के नेता अदूरदर्शी-दुर्बल-स्वार्थी-पदलोलुप और तुष्टीकरणवादी रहे। अतः उन्होंने स्वैच्छिक परिवार नियोजन की नीति जारी रखी।

६. कमरतोड़ महंगाई, गरीबी, बेरोजगारी, आर्थिक पिछड़ापन होते हुए भी ६-६ अथवा ८-८ बच्चे अभी भी हो जाते हैं और बहुविवाह भी होते हैं।

७. मुस्लिम समाज के धार्मिक नेताओं ने नसबन्दी-परिवार नियोजन को इस्लाम धर्म के विरूद्ध बताते हुए अपील की थी कि इसे नहीं अपनाया जाए। उन्होंने बहुविवाह का भी समर्थन किया।

८. देश की सभी छोटी-बड़ी पार्टियों के नेताओं ने वोट बैंक के लालच में कह दिया कि परिवार नियोजन-नसबन्दी का सरकारी कार्यक्रम पूर्ण रूप से स्वैच्छिक है अतः मुस्लिम इसे मानने के लिए बाध्य नहीं हैं। पार्टियों की इस उदारता का मुस्लिमों ने भरपूर लाभ उठाया।

९. १९४७ में मुस्लिमों का प्रतिशत १०% था जो २०१४ में बढ़कर १६% हो गया है।

१०. केरल में चर्च नेताओं ने चौथा और पाँचवा बच्चा होने पर अनेक प्रकार की सुविधाओं की घोषणा की हुई है।

११. चर्च नेताओं ने संविधान की कमजोर धाराओं का दुरूपयोग करके वनवासियों और दलितों का धर्मान्तरण बृहद स्तर पर किया है जिसके फलस्वरूप पूर्वोतर भारत में तीन ईसाई राज्य बनाने पड़े। १९४७ में ईसाई २ प्रतिशत थे जबकि अब २०१४ में ३ प्रतिशत हो गए हैं।

१२. संयुक्त राष्ट्र संघ की रिपोर्ट है कि यदि देश में स्वैच्छिक परिवार नियोजन-नसबन्दी की नीति जारी रही तो भविष्य में भी हिन्दू की संख्या गिरती रहेगी और देश की सत्ता मुस्लिम-ईसाई गठबन्धन के पास हो सकती है।

१३. कई बुद्धिजीवियों ने कहा है कि देश तो पुनः मुस्लिमों के अधीन होना है अतः वे व्यर्थ में क्यों चिन्ता करें?

१४. ९०६ वर्षों की लम्बी पराधीनता के बाद देश को तब स्वतन्त्रता मिली जब देश का विभाजन स्वीकार किया गया और ३(१/४) लाख वर्ग मील भूमि हमसे छीन ली गई।

१५. २६ मई २०१४ को प्रखर हिन्दूवादी नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में राजग की सरकार बनी है किन्तु उन्होंने भी अल्पसंख्यक मामलों की मंत्री डॉ. नजमा हेपतुल्ला को केबिनेट स्तर का दर्जा देकर कोई प्रशंसनीय कार्य नहीं किया।

१६. पुरानी प्रसिद्ध कहावत है **''जिसकी संख्या उसका देश''**।

१७. यदि सिन्ध-पश्चिमी पंजाब-बिलोचिस्तान-उत्तर पश्चिम सीमांत और पूर्वी बंगाल में हिन्दुओं का बहुमत होता तो देश का १९४७ में विभाजन ही नहीं होता।

१८. यदि कश्मीर घाटी में हिन्दुओं का बहुमत होता तो रियासत का विलय विवादास्पद ही नहीं होता।

१९. अतः हिन्दू युवकों-युवतियों से अनुरोध है कि वे **''हम दो-हमारे चार''** की सोच व मानसिकता रखें और उस पर अमल करें तभी देश सुरक्षित रहेगा। ●

आर्य नेताओं व विद्वानों से विनम्र अनुरोध

महर्षि दयानन्द जी सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज के संगठन को ताकतवर बनाने के लिए एक जुट होने की परमावश्यकता है। दुर्भाग्यवश आर्यों की आपसी फूट के कारण आर्य समाज का संगठन दुर्बल हो गया है। आर्यों की विचारधारा पवित्र है, हमारा आदर्श भी पवित्र है, हमारा लक्ष्य (**कृण्वन्तो विश्वमार्यम्**) भी बेहद शुद्ध और पवित्र है। परन्तु आपस की फूट के कारण आर्य समाज कुछ कर नही पा रहा है। नये-नये अवैदिक संगठन उत्पन्न हो रहे हैं। अवैदिक मान्यताएँ खूब फल-फूल रही है। इन्हें रोकने के जो प्रयास आर्यों को करना चाहिए था वह नहीं हो रहा है। हमारी शक्ति आपस में एक दूसरे को अपमानित करने और नीचा दिखाने में लग रही है। जो साधन वेद प्रचार के लिए प्रयोग करने चाहिए थे, वह साधन प्रयोग हो रहे हैं-अदालतों के चक्कर काटने में। आर्य समाज को जो दान मिलता है-वह वकीलों को देने के लिए नहीं मिलता। दान द्वारा प्राप्त धन का दुरूपयोग हमारे नेता अपनी नाक की लड़ाई को जितने के लिए अदालतों में कर रहे हैं। अदालतों में आर्य नेता एक दूसरे को नकली और अपनी पार्टी को असली सिद्ध करने में लगे हुये हैं। सत्यार्थ प्रकाश के साथ भी छेड़-छाड़ की जा रही है, इसका समाधान कोई नहीं करना चाहता। यह दुर्भाग्य की स्थिति है:- आर्य समाज के नेता-संन्यासी-विद्वान्-कार्यकर्ता आदि सब गुटबाजी के शिकार हो चुके हैं। आर्य नेताओं व विद्वानों से निवेदन है कि आपसी फूट को दूर करने के लिए सत्प्रयास करें। मुकदमेबाजी को छोड़कर मिल बैठकर-झगडों को निपटायें तो वैदिक संस्कृति एवं राष्ट्र के हित में होगा। यह विनम्र निवेदन आप सभी से है।

-स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती
१७२, प्रणव कुटीर, से.-२ पलवल (हरि.)
चलभाष-०८०५३३५५४९६

वैवाहिक आवश्यकता

वधु हेतु : ०३/२०१४ - वैश्य परिवार में १४ नवम्बर १९८० को जन्में, कद ५ फूट ६ ईंच तथा दिल्ली विश्वविद्यालय से एम. ए. संस्कृत एवं बी.एड., नेट/जे.आर.एफ उपरांत शोधरत (पी.एच.डी.) उच्च शिक्षा प्राप्त सौम्य, सरल, आर्य विद्वान् के विवाह हेतु सुशिक्षित, सुयोग्य कन्या की आवश्यकता है इच्छुक अभिभावक सम्पर्क करें।

युवक वर्तमान में डी.ए.वी. इंटर कॉलेज मोतिहारी (बिहार) में अध्यापक पद पर सेवारत होकर वार्षिक आय करीब चार लाख रूपये है। दहेज एवं जाति बंधन मुक्त विवाह। **संपर्क**- ०९४७१९४७१३८, ०९१३५२२१०१०

ई.मेल- deepnarayan.skt@gmail.com.

पृ. ३४ का शेष

गुरुकुलीय शिक्षा...

आज भारत में आर्य समाज द्वारा सैंकड़ों गुरूकुलों का संचालन किया जा रहा है, जिससे हजारों युवक तथा युवतियाँ ब्रह्मचर्य पूर्वक वेद वेदांग दर्शन आदि का अध्ययन कर रहे हैं, किन्तु उनके जीवन में आने वाली विवाहगत समस्याओं की ओर अभी भी आर्यसमाज के मनीषियों, विद्वानों तथा आचार्यों का ध्यान नहीं गया है। गुरूकुल में अध्ययन करने के उपरान्त उन हजारों ब्रह्मचारियों, ब्रह्मचारिणियों को विवाह के लिए उपयुक्त मंच न मिलने के कारण परिस्थितिवश आर्य संस्कारों से बिल्कुल अपरिचित जीवन साथी से विवाह करना पड़ता है। जिसके फलस्वरूप वैचारिक साम्यता न होने के कारण वैवाहिक जीवन में समायोजन करना मुश्किल हो जाता है तथा वैवाहिक जीवन के द्वारा उस सांस्कृतिक विकास का लक्ष्य अधूरा रह जाता है, जिसको लेकर आर्य समाज द्वारा इन गुरूकुलों की स्थापना की गई थी कि इनमें तैयार होकर निकलने वाले स्नातक, स्नातिकाएँ आर्य संस्कारों से युक्त एक नये समाज का निर्माण करेंगे।

लेखक जो स्वयं गुरूकुल का छात्र रहा है उसका यह मानना है कि गुरूकुल में अध्ययन के उपरान्त इन स्नातक, स्नातिकाओं को एक ऐसा उपयुक्त मंच मिलना चाहिए, जिससे वे अपने योग्य वर या वधु का चयन कर सकें तथा अल्प परिश्रम से ही आर्य संस्कारों से युक्त परिवारों का निर्माण कर सकें। वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार का संकल्प लेकर जब ये गुरूकुल के स्नातक, स्नातिकाएँ समाज में आते हैं तो इनमें से अधिकतर का समय आर्य संस्कारों से अपरिचित अपने जीवन साथी को आर्य विचारधारा से जोड़ने में ही लग जाता है। और कालान्तर में समयाभाव व गृहस्थी के गुरूतरभार के कारण आर्य समाज के प्रचार-प्रसार से दूर चले जाते हैं। खासतौर पर गुरूकुल की ब्रह्मचारिणियों को इस समस्या का सामना अधिक भी करना पड़ता है, क्योंकि पति प्रधान समाज के बंधन उन्हें स्वेच्छानुसार प्रचार कार्य से रोकते हैं।

इसलिए अब समय आ गया है कि जिस प्रकार आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली द्वारा आर्य युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलनों का आयोजन किया जा रहा है उसी प्रकार के प्रयास इन गुरूकुलों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं के लिये किये जायें। उन्हें एक उचित अवसर व मंच प्रदान किया जाए कि वे भी अपने गुण-कर्म-स्वभाव के अनुरूप विवाह कर सकें। इतिहास साक्षी है कि विवाह संबंधों ने इतिहास की धाराओं को मोड़ दिया है। राष्ट्रों के भूगोल को बदल दिया है इसलिए सभी पक्षों को साथ लेकर गुरूकुल के इन स्नातक, स्नातिकाओं के लिए उचित वैवाहिक मंच प्रदान किया जाए जिससे ऋषि के **कृण्वन्तो विश्वमार्यम्** के स्वप्न को साकार किया जा सकें। ●

निर्वाचन-समाचार

आर्यसमाज, छोटी सादड़ी, जिला-प्रतापगढ़ (राज.) की नवगठित कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह आर्य समाज मन्दिर पर रविवारीय साप्ताहिक सत्संग दिवस अवसर पर संरक्षक डॉ. वृद्धिशंकर जी उपाध्याय की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। प्रधान बाबूलाल पाटीदार के अनुसार नवगठित कार्यकारिणी में वरिष्ठ उपप्रधान हीरालाल शर्मा उपप्रधान भूदेव व्यास, रामबिलास साहू, **मंत्री**-महेश शर्मा ''सुमन'' **सहमंत्री**-रामनिवास तेली, **उपमंत्री**-लक्ष्मीनारायण तेली, **कोषाध्यक्ष**-जमनालाल शर्मा, सह कोषाध्यक्ष-करणमल साहू, **संगठन मंत्री**-अर्जुन पहलवान, **सह संगठनमंत्री**-अशोकमाली, **पुस्तकालय प्रभारी**-बाबू लाल शर्मा, **प्रचार-प्रसार मंत्री**-रामचन्द्र माली, **विधि सलाहकार**-प्रकाश साहू, **आर्यवीर दल अधिष्ठाता**-आशाराम साहू, **विद्यालय प्रतिनिधि**- विजयकुमार शर्मा, **अंकेक्षर**-भोपराज साहू, **व्यवस्था प्रमुख**-कैलाश इन्दौरा, **मीडिया प्रभारी**-रोहित शर्मा नियुक्त किये गये, साथ ही स्क्रिनिंग कमेटी हेतु प्यार चंदसाहू चाँदमल तेली एवं चाँदमल धामनोदिया के नाम सर्वसम्मती से स्वीकृत किये गये। शपथ ग्रहण एवं विशेषयज्ञ के साथ बैठक सम्पन्न हुई। कार्यक्रम में सुरेश गुजराती, काशीराम शर्मा, माधव लाल पाटीदार, सुरेश चन्द्र साहू, गीता देवी साहू सहित कई आर्यजन उपस्थित रहे।

मंत्री-महेश शर्मा 'सुमन'

आर्यसमाज रावतभाटा, वाया कोटा (राज.) का वार्षिक चुनाव दिनांक ०६.०७.२०१४ को सम्पन्न हुआ। जिसमें निम्न पदाधिकारी चुने गए -**प्रधान**-श्री नरदेव आर्य, **उपप्रधान**-श्री शंकरदत्त शुक्ल, श्री योगेश आर्य **मंत्री**-श्री ओमप्रकाश आर्य, **उपमंत्री**-श्री शैलेश कुमार, श्री भारत भूषण, **कोषाध्यक्ष** - श्री रमेशचन्द्र भाट, **पुस्तकालयाध्यक्ष**-श्री अरविन्द श्रीवास्तव, **आय-व्यय निरीक्षक**-श्री विनोद कुमार त्यागी, **संरक्षक**-श्री रेशमपाल सिंह, **अंतरंग सदस्य**-श्री अशोक कुमार कश्यप, श्रीमती गायत्री देवी, श्रीमती मंजू कुमावत, श्रीमती प्रकाश धीमन, श्री पंकज कुमार।

आर्य समाज विज्ञाननगर कोटा (राज.) के चुनाव दिनांक २२ जून २०१४ को जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, कोटा द्वारा नियुक्त मुख्य चुनाव अधिकारी अरविन्द पाण्डेय द्वारा करवाये गये। जिसमें सर्वसम्मति से **प्रधान**-जे.एस. दुबे, **मंत्री**-राकेश चड्डा तथा **कोषाध्यक्ष**-कौशल रस्तोगी निर्वाचित किये गये। निर्वाचित पदाधिकारियों द्वारा कार्यकारिणी का गठन किया गया। जिसमें **उपप्रधान**-अशोक अग्निहोत्री, अनिल दुबे, श्रीमती अनीता शर्मा, सुनील दुबे, मुकेश चड्डा, राजुल रस्तोगी, **पुस्तकालय अध्यक्ष**-दिनेश शर्मा, **अन्तरंग सदस्य**-डॉ. के.एल. दिवाकर, अर्जुनदेव चड्डा, भगवान पाण्डेय, सुमेश कुमार गांधी, मनोहरलाल शर्मा, महेन्द्रलाल शर्मा, सतीश वशिष्ठ, श्रीमती पूनम चड्डा, महेन्द्र रस्तौगी, श्रीमती दीपा दुबे का मनोनयन किया गया।

आर्य समाज मल्हारगंज, इन्दौर (म.प्र.) के निर्वाचन दिनांक २९.०६.२०१४ को सर्वसवम्मति से सम्पन्न हुए। **प्रधान**-दक्षदेव जी गौड़, **मंत्री**-डॉ. विनोद अहलुवालिया, **उपप्रधान**-सुरेश सोनी, **उपमंत्री**-अजय रेनीवाल, **कोषाध्यक्ष**-श्रीमती रेणु गुप्ता, **पुस्तकालयाध्यक्ष**-श्रीमती अनिल गुप्ता, **आर्यवीर दल अधिष्ठाता**-धर्मेन्द्र धाकड़, **अतरंग सदस्य**-श्रीमती गीता अहलुवालिया, दिनेश गुप्ता, श्रीमती विमलागौड़ आदि का मनोनन्दन सर्वसम्मति से किया गया।

सघन साधना शिविर

दिनांक १ अक्टूबर २०१४ से ३० सितम्बर २०१५ तक

स्वामी ब्रह्मविदानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में दर्शन योग महाविद्यालय में सघन साधना शिविर का आयोजन दिनांक १ अक्टूबर २०१४ से ३० सितम्बर २०१५ अर्थात् एक वर्ष हेतु आयोजित किया जा रहा है। आवेदन की अंतिम तिथि १५ अगस्त है।

विस्तृत विवरण हेतु दर्शन योग महाविद्यालय की वेबसाईट देखें अथवा ०९४०९४१५०११, ०९४०९४१५०१७, ०२७७०-२८७४१८ पर सम्पर्क करें।

योग-ध्यान, साधना शिविर

दिनांक १४ से २१ सितंबर २०१४ तक

आनन्दधाम (गढ़ी आश्रम) उधमपुर, जम्मू में पूज्य महात्मा चैतन्यमुनि जी के सान्निध्य में दिनांक १४ से २१ सितम्बर २०१४ तक निःशुल्क योग-ध्यान-साधना शिविर का आयोजन किया जा रहा है है जिसमें अनुभवी आचार्यों एवं महात्माओं द्वारा उपासना, प्राणायाम, योगासन आदि कराए जाऐंगे तथा दर्शन-पठन-पाठन की भी व्यवस्था है। साधक अपनी शंकाओं का समाधान भी कर सकेंगे। इस अवसर पर सामवेद-पारायण यज्ञ भी होना है। आश्रम में पूज्य महात्माजी के सान्निध्य में पहले लगाए गए शिविरों में शिविरार्थियों के बहुत अच्छे अनुभव रहे हैं इसलिए साधकों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है। अतः इच्छुक साधक अपना स्थान आरक्षित करने के लिए फोन नं. ०९४१९१०७७८८, ०९४१९१९८५१ पर तुरन्त सम्पर्क करें।

-भारतभूषण आनन्द, आश्रम प्रधान

विश्वकर्मा एज्यूकेशन ट्रस्ट (रजि.) द्वारा छात्रवृत्ति आवेदन पत्र आमंत्रित तथा छात्रवृत्ति वितरण समारोह

समस्त विश्वकर्मा बन्धुओं एवं विश्वकर्मा एज्यूकेशन ट्रस्ट के सदस्यों को सादर सूचित किया जाता है कि प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी आगामी अक्टूबर माह में ट्रस्ट द्वारा छात्रवृत्ति वितरण समारोह आयोजित किया जा रहा है। जिसके लिये इच्छुक छात्र-छात्राओं की ओर से आवेदन पत्र आमंत्रित किये जाते हैं। समस्त बंधुओं से नम्र निवेदन है कि आपकी जानकारी में ऐसे छात्र-छात्रा है जो आर्थिक कमजोरी के बावजूद भी एक मेधावी छात्र-छात्रा के रूप में शिक्षा के उच्चतम् लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु प्रयासरत है तो कृपया उनके नाम का अनुमोदन कर उन्हें प्रोत्साहित करें। आवेदन पत्र छात्रों के पूर्ण विवरण के साथ आगामी सितम्बर माह के अंत तक विश्वकर्मा एज्यूकेशन ट्रस्ट के प्रधान कार्यालय, सी-१, ज्योति कॉलोनी, शाहदरा, दिल्ली-११००३२ पर पहुँच जाने चाहिये। तदनुसार आवेदन पत्र में - छात्र-छात्रा का नाम, पिता का नाम, स्थायी पता, मोबाइल न., कॉलेज का बोनाफाइड सर्टिफिकेट, पिछले वर्ष की मार्कशीट, इन्कम सर्टिफिकेट एवं पासपोर्ट साइज की फोटो आदि के साथ कम से कम दो ट्रस्टियों के द्वारा अनुमोदन अति आवश्यक है। अधूरे एवं सितम्बर माह के बाद प्राप्त आवेदन पत्र पर कोई विचार नहीं किया जायेगा। ट्रस्ट के नियमानुसार बारहवीं कक्षा तक के छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति नहीं देते हुए मात्र उच्च शिक्षा हेतु प्रदान की जाती है। अतः बारहवीं कक्षा तक के छात्र आवेदन न करें। छात्रवृत्ति हेतु चयनित छात्र छात्राओं को छात्रवृत्ति वितरण संबंधी बाकी सूचनायें आगामी कार्यक्रमानुसार प्रेषित कर दी जायेंगी।

सम्पर्क सूत्र :- ०९९७१९१५३०४, ०९८६८४४५८८८

मंत्री-रामपाल शर्मा, दिल्ली

आर्य समाज सैलाना द्वारा बहेगी वैदिक ज्ञान गंगा

आर्य समाज सैलाना, जिला-रतलाम (म.प्र.) द्वारा **दिनांक १४ से १७ अगस्त २०१४ तक** वैदिक सत्संग का आयोजन **जैन समाज मांगलिक भवन** किया जा रहा है जिसमें यज्ञ-प्रवचन एवं भजनों द्वारा वैदिक धर्म सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार किया जावेगा। ईश्वर का वरदान-ज्ञान, कर्म, उपासना एवं विज्ञान विषय पर दर्शन योग महाविद्यालय आर्यवन रोजड़ से पधारे उद्भट विद्वान् चन्द्रेश जी दर्शनाचार्य सरलता पूर्ण व्याख्या कर प्रकाश डालेंगे।

इसके अतिरिक्त पधारे अन्य विद्वानों का भी मार्गदर्शन एवं भजनों का आनन्द प्राप्त होगा। इस अवसर का लाभ लेने का विनम्र अनुरोध आयोजनकर्ताओं द्वारा किया गया है। **सम्पर्क**-शेखर आर्य ९५८४२२६५५०

विवाह योग्य आर्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन सूचनाएँ

आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के दिशा-निर्देश तथा श्री अर्जुनदेव चड्ढा के राष्ट्रीय संयोजन में आयोजित आठवाँ आर्य युवक-युवती विवाह परिचय सम्मेलन दिनांक १५ जून २०१४ को आर्य समाज मल्हारगंज इन्दौर में प्रस्तावित था। अत्यधिक गर्मी के कारण उपरोक्त आयोजन स्थगित कर दिया गया था। अब यह आयोजन **आर्य समाज मल्हारगंज इन्दौर पर २८ सितम्बर २०१४** को आयोजित किया जा रहा है। इच्छुक जन शीघ्र अपना पंजीयन करवाये।

सम्पर्क- अर्जुनदेव चड्ढा (०९४१४१८७४२८), **राष्ट्रीय संयोजक**
दक्षदेव गौड़ (०९४२५०७०७०), **प्रधान-आर्य समाज मल्हारगंज**

श्री मोहनलाल जी आर्य का सम्मान समारोह

दिनांक १३.०७.२०१४ को आर्य समाज रावतभाटा में श्री मोहनलाल जी आर्य का सेवानिवृत होने पर सम्मान आर्य समाज रावतभाटा व जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा द्वारा किया गया। आर्य व्यक्तित्व के धनी श्री मोहनलाल जी वैदिक धर्म के निष्ठावान सिपाही है आपका जीवन परिचय वैदिक संसार मई २०१४ के पृष्ठ ३३ पर प्रकाशित किया गया था। इस अवसर पर दानदाताओं (सर्वश्री दिलीप भाटिया, राकेशकुमार सिंह, श्रीमती सुमन सिंह, विजय सिंह, रमेशचन्द्र भाट, श्रीमती मोहनीदेवी भाट, रेशमपाल सिंह, अभिषेक वार्ष्णेय, एन.के. शर्मा, जगदीश प्रजापत, रणजीत प्रधान, एस.पी. जांगिड) जिनके सहयोग से विद्यालयों में कापियों व गणवेश का वितरण किया गया उनको भी स्मृति चिन्ह प्रदान किये गये एवं वैदिक संसार पत्रिका के सदस्यों (वार्षिक-श्रीमती श्यामा आर्य, सर्वश्री तुलसीराम उपाध्याय, चाणक्य पोतदार, राधेश्याम शर्मा, प्रकाश शर्मा, वीरेंदर मीणा, अभिमन्यु नरवेर, शैलेश, पंकज, जगदीश प्रजापत, अशोक कुमावत, विजय सिंह, श्यामकुमार सोनी, योगेश आर्य, पी.एल. शर्मा, मंजुल त्यागी, अभिषेक वार्ष्णेय, जगदीशप्रसाद चौधरी, विनोदकुमार त्यागी, नरेश रहारिया, पुरूषोत्तम सोनी, रेशमपाल सिंह, महावीरप्रसाद प्रजापति, रणजीत प्रधान व आजीवन सदस्य-रमेशचन्द्र भाट व रोहित श्रीवास्तव) को जिला-प्रधान अर्जुनदेव जी चड्ढा द्वारा स्मृति चिन्ह प्रदान किये गये।

श्री संतराम जी गुप्ता का किया गया सम्मान

श्री संतराम गुप्ता, प्रबन्धक, झिन्नूराम माध्यमिक विद्यालय, संत कबीर नगर (उ.प्र.) ने स्वव्यय से चार विद्वानों के साथ मिलकर दो दिवसीय वेद प्रचार का कार्य किया। इस उपलक्ष में यज्ञ का आयोजन भी किया गया व आर्य समाज रावतभाटा से पधारे वैदिक विद्वान् श्री ओमप्रकाश आर्य ने श्रीफल व वस्त्र प्रदान कर श्री संतराम गुप्ता का अभिनन्दन किया। श्री मोहनलालजी, आर्य समाज रावतभाटा द्वारा प्रकाशित वैदिक कैलेंडरों के माध्यम से वेद प्रचार का सराहनीय कार्य किया गया।

जिला आर्य प्रतिनिध सभा कोटा (राज.) के संयोजन में सम्पन्न गतिविधियाँ

यज्ञ द्वारा प्रारंभ किया गया विद्यालय का नवसत्र

अन्नपूर्णा विद्यालय कोटा के नवसत्र का प्रथम दिवस आर्य समाज के कार्यालय सचिव अरविन्द पाण्डे के पौरोहित्य में देवयज्ञ द्वारा सम्पन्न कर किया गया मुख्य यजमान विद्यालय के निर्देशक डॉ. रामाराव तथा आपकी धर्मपत्नी विद्यालय प्राचार्या डॉ. लक्ष्मीराव थे इस अवसर पर प्रधान अर्जुनदेव जी चड्ढा के साथ आर्य समाज के पदाधिकारी, विद्यालय के अध्यापक-अध्यापिका एवं छात्र-छात्राओं ने उपस्थित होकर यज्ञ में अपनी आहुतियाँ प्रदान की।

डी.ए.वी. चेअरमेन श्री पूनम सूरी का किया गया अभिनन्दन

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा (राज.) के प्रतिनिधि मण्डल ने डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्ध समिति के चेअरमेन श्री पूनम सूरी जी से सौजन्य भेंट कर उन्हें संस्था द्वारा संचालित गतिविधियों से अवगत करवाया तथा आत्मिय अभिनन्दन करते हुए ओ३म् स्मृति चिन्ह भेंट किया। इस अवसर पर श्रीमती मणी सूरी, एम.एल. गोयल रीजनल डायरेक्टर डी.ए.वी., राजेश कुमार मेनेजर, प्राचार्य ए.के. लाल, प्राचार्या श्रीमती सरिता रंजन, अशोक कुमार जयपुर, जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा, मंत्री कैलाश बाहेती, कोषाध्यक्ष जे. एस. दुबे, डॉ. वेदप्रकाश गुप्ता आदि उपस्थित रहें।

सात दिवसीय साधना, ध्यान एवं योग शिविर सम्पन्न

आर्य समाज विज्ञान नगर कोटा में आयोजित सात दिवसीय शिविर का समापन समारोह पूर्वक किया गया मुख्य अतिथि के रूप में अमरोहा उत्तरप्रदेश से डॉ. वीना रस्तोगी तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में पतंजलि योग समिति राज. की महिला राज्य प्रभारी श्रीमती विजय लक्ष्मी ने समारोह को गरिमा प्रदान की। इस अवसर पर कैंसर रोग विशेषज्ञ डॉ. आर. के. तवर के भी व्याख्यान हुए आपने कैंसर रोग पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए बताया अब यह लाइलाज रोग नहीं है। आर्य समाज रेलवे कॉलोनी, भीमगंज मण्डी, विज्ञान नगर, तलवण्डी तथा जिला सभा के पदाधिकारियों की उपस्थिति एवं सक्रिय सहयोग प्राप्त हुआ। साधना विशेषज्ञ के रूप में आचार्य अग्निमित्र जी एवं मुख्य योग प्रशिक्षक अरविन्द पाण्डेय तथा उनके सहयोगी प्रदीप शर्मा थे। सात वर्षिय बालिका मौली दुबे ने सम्पूर्ण समय उपस्थित रहकर तन्मयता से अभ्यास किया। समापन समारोह अवसर पर बालिका को सम्मानित किया गया।

आर्य समाज भिमगंज मण्डी का तीन दिवसीय वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज भिमगंज मण्डी, जिला-कोटा (राज.) का तीन दिवसीय वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ। आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान् डॉ. शिवदत्त जी पाण्डे सुल्तानपुर (उ.प्र.) के वैदिक सिद्धांतों को सुस्पष्ट करते व्याख्यान तथा मुजफ्फरनगर (उ.प्र.) के भजनोपदेशक पं. नरेश निर्मल के भजनों का लाभ उपस्थितों ने प्राप्त किया। इस पर आर्य समाज हाड़ौती के पं. बिरधीचंद जी शास्त्री तथा कोटा के विद्वान् पं. रामदेव जी शर्मा एवं सुल्तानपुर (उ.प्र.) से पधारे आचार्य राजेन्द्र जी के भी प्रवचनों का लाभ आर्यजनों ने प्राप्त किया। इस अवसर पर जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा अपने अन्य सहयोगी पदाधिकारियों के साथ उपस्थित हुए। कार्यक्रम का संचालन ओमदत्त गुप्ता संस्था मंत्री ने किया शांति पाठ एवं स्नेह भोज के साथ समापन हुआ।

दैनिक भास्कर के शिक्षा अभियान में किया सहयोग

जिला आर्य प्रतिनिध सभा कोटा (राज.) के तत्वावधान में आर्यजनों द्वारा निर्धन तबके के बच्चों हेतु दैनिक भास्कर समाचार पत्र समूह द्वारा चलाये जा रहे मिशन शिक्षा अभियान में दैनिक भास्कर कार्यालय पर शिक्षण सामग्री भेंटकर अपनी सहभागिता दर्ज करवाई। उल्लेखनीय है कि जिला सभा सदैव इस प्रकार के कार्यों को तत्पर रहती है।

बुजुर्ग हमारी धरोहर संगोष्ठी सम्पन्न

करणी नगर विकास समिति के आश्रय भवन सभागार में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें **'बुजुर्ग हमारी धरोहर'** विषय पर मंथन हुआ जिला-प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने संयुक्त परिवारों की टुटती परम्परा तथा बुजुर्गों के मान-सम्मान में हो रही गीरावट पर अपने विचार व्यक्त करते हुए चिंता जताई। संगोष्ठी में डॉ. के.सी. शृंगी तंथा सेवानिवृत ए.एस.पी. चन्दरसिंह, दिवा संगम के अध्यक्ष डॉ. के.एस. राजोरा तथा वैदिक विद्वान् आचार्य अग्निमित्र जी शास्त्री ने भी संबोधित किया। प्रो. हरिमोहन शर्मा ने आभार ज्ञापित किया।

तंबाकू सेवन करने वालों को नौकरी नहीं देने का किया स्वागत

राजस्थान सरकार द्वारा धुम्रपान व गुटखा सेवन करने वालो को बिजली कम्पनियों में नव नियुक्ति हेतु अपात्र घोषित किये जाने तथा भविष्य में वचन बद्धता देना होगी की वे तंबाकू उत्पादों का सेवन नहीं करेंगे के निर्णय पर जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा द्वारा हर्ष व्यक्त करते हुए मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे को आभार पत्र प्रेषित किया है। निश्चित रूप से राजस्थान सरकार द्वारा उठाया गया यह छोटा सा कदम आने वाले दिनों तथा अन्य क्षेत्रों में मिल का पत्थर साबित होगा।

'आओ यज्ञ करें' कार्यक्रम आयोजित

आर्य समाज गायत्री विहार कोटा (राज.) के तत्वावधान में हाड़ौती राठौर समान छात्रावास दादावाड़ी में **'आओ यज्ञ करें'** कार्यक्रम आयोजित कर नवयुवकों को यज्ञ तथा वैदिक धर्म-संस्कृति के परिचय से अवगत करवाकर उन्हें प्रेरित किया गया। आचार्य अग्निमित्र, जिला प्रधान-अर्जुनदेव चड्ढा, जे.एस. दुबे, अरविन्द पाण्डेय, रामप्रसाद याज्ञिक आदि ने संबोधित करते हुए कुसंग, व्यसन, मांसाहार, अंधविश्वास तथा जातिप्रथा की हानियों के प्रति आगाह करते हुए आर्य समाज के योगदान से अवगत करवाते हुए वैदिक सत्संग तथा आर्य समाज द्वारा संचालित गतिविधियों में जुड़कर राष्ट्रोत्थान हेतु प्रेरित किया। कार्यक्रम का संचालन कन्हैयालाल राठौर ने किया आभार राधावल्लभ राठौर ने माना।

युवा निर्माण प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

वृज क्षेत्र के गाँव वनचारी (हरियाणा) में सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् की ओर से चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन किया गया। १४० युवाओं को योगधर्म, राष्ट्रधर्म व जीवन दर्शन का सम्पूर्ण दिग्दर्शन कराया गया। स्वामी श्रद्धानन्द जी सरस्वती के सान्निध्य में आयोजित शिविर में युवाओं को **''आर्य युवक परिषद्''** के व्यायामाचार्यों ने योगासन, प्राणायाम, दण्ड-बैठक, जूडों करातें आदि का प्रशिक्षण दिया, शिविर का उद्घाटन डॉ. अनिल आर्य-राष्ट्रीयाध्यक्ष केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के करकमलों द्वारा किया गया। शिविर का समापन समारोह की सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी सरस्वती ने मुख्य अतिथि के रूप में (रजि.) के संरक्षक श्री पूर्णसिंह राणा का सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया। समापन समारोह में पलवल जनपद के सैकड़ों आर्य सामाजिक कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। स्वामी श्रद्धानन्द जी सरस्वती ने इस अवसर पर कहा आर्यों को संगठित होकर समाज में व्याप्त धार्मिक पाखण्ड, राजनैतिक भ्रष्टाचार, सामाजिक अन्याय, नशाखोरी-नारी उत्पीड़न, शोषण (रंग भेद-जाति भेद) आदि बुराईयों के खिलाफ जन आन्दोलन की भूमिका बनानी चाहिए।

-नारायण सिंह आर्य, संयोजक-युवा निर्माण प्रशिक्षण शिविर

वैदिक संसार को आप महानुभावों का आर्थिक सहयोग (दान)

दिनांक २१ मई २०१४ से २० जुलाई २०१४ तक

विशेष सहयोग

गोवा - सुमित वुड्स प्रायवेट लिमिटेड - फोंडा, गोवा।

स्वैच्छिक अनुदान

राजस्थान :- जिला-कोटा : श्री अर्जुनदेव रामलाल जी चड्डा-कोटा। **महाराष्ट्र :- मुम्बई :** भानुशाली शंकरलाल देव जी भाई-घाटकोपर। **जिला-पूना :** श्री भगवान स्वरूप हुकुमसिंग जी पालीवाल-सालूंके विहार पूना, श्री गिरीश देवेन्द्र जी त्रिवेदी-शनिवार पेठ, पूना। **मध्यप्रदेशः-जिला-मन्दसौर :** श्री जगन्नाथ भेरूलाल जी सेठिया-शामगढ़। **जिला-इन्दौर :** श्री छाजूलाल कन्हैयालाल जी शर्मा-संचारनगर, इन्दौर। **जिला-रतलाम :** आर्य समाज-धामनोद।

आजीवन

हिमाचल प्रदेश :- जिला-मण्डी : श्री रामफलसिंह जी आर्य-सुन्दरनगर। **महाराष्ट्र :- मुम्बई :** श्री रजनीकांत बजरंग जी जांगिड-भाईन्दर वेस्ट। **गोवा :** श्री तिलाराम किशनाराम जी सुथार-पणजी, श्री मूलाराम मानाराम जी सुथार-पणजी, श्री बालाराम जी सुथार-तिस्वाड़ी। **हरियाणा :- जिला-गुड़गाँव :** श्री सुभाषचन्द्र जयचन्द जी जांगडा-ताजनगर, श्री जितेन्द्र महेन्द्रसिंह जी जांगडा 'नम्बरदार'-बिलासपुर खुर्द। **मध्यप्रदेश :- जिला-उज्जैन :** श्री लक्ष्मीनारायण मांगीलाल जी आर्य-विक्रमनगर (मौलाना)। **जिला-बड़वानी :** श्री कैलाशचन्द्र शंकरलाल जी शर्मा-बड़वानी। **राजस्थान :- जिला-सवाई माधोपुर :** आर्य समाज-गंगापुर सिटी, जांगिड ब्राह्मण समाज समिति-गंगापुर सिटी, श्री ओमप्रकाश रामनाथ जी जांगिड-गंगापुर सिटी। **गुजरात :- जिला-साबरकांठा :** वानप्रस्थ साधक आश्रम-आर्यवन रोजड़। **जिला-अहमदाबाद :** श्री सत्यार्थ सत्यव्रत जी श्रीवास्तव-घुमा-शेला रोड़ अहमदाबाद, श्री वेदप्रकाश रामअवतार जी शर्मा-विजय बॉडी बिल्डर्स सरखेज अहमदाबाद। **जिला-कच्छ :** श्री सुनिल राजेन्द्र जी मिलक-आदिपुर। **जिला-सूरत :** योगाचार्य श्री उमाशंकर जी आर्य-भट्टार रोड सूरत, श्री मूलचन्द जगदीशप्रसाद जी जांगिड-कुम्भारियाँ सूरत, श्री राजेन्द्र जी शर्मा-श्रीनाथ ट्रेवल्स सूरत, श्री चेतनप्रकाश फूलचन्द जी जांगिड-अड़ाजन सूरत, श्री कैलाशचन्द महादेवप्रसाद जी जांगिड-भट्टार सूरत, श्री रामलाल प्रेमा जी जांगिड-वी.आई.पी. रोड़ सूरत, श्री रघुनाथ लूणाराम जी जांगिड-पूनमनगर सूरत।

त्रैवार्षिक

गुजरात :- जिला-साबरकांठा : दर्शन योग महाविद्यालय-आर्यवन रोजड़। **मध्यप्रदेश :- जिला-विदिशा :** श्री रामार्य जी व्यथित-विदिशा। **जिला-उज्जैन :** श्री भरतलाल नन्दराम जी पटेल-विक्रमनगर (मौलाना), श्री कृष्णचन्द्र कचरूलाल जी पाटीदार-विक्रमनगर (मौलाना)। **जिला-रतलाम :** आर्य समाज -आक्याकलां (ताल)। **महाराष्ट्र :- जिला-पूना :** श्री हेमदेव जी थापर-माईड भोसरी पूना, श्री केवलचन्द बाबूलाल जी गेहलोत-धनकवड़ी पूना, श्री मगाराम रूपाराम जी सुथार-धनकवड़ी पूना, श्री अर्जुनलाल बुद्धाराम जी जांगिड-कात्रज पूना, श्री मिश्रीलाल पूनमचंद जी-सुखसागर नगर पूना, आर्य समाज नानापेठ-पूना। **राजस्थान :- जिला-सवाई माधोपुर :** श्री बृजमोहन मूलचन्द जी मीणा-सवाई माधोपुर, श्री राजेन्द्रप्रसाद रामजीलाल जी शर्मा-गंगापुर सिटी, श्री कुंजबिहारी लड्डूलाल जी शर्मा-गंगापुर सिटी, श्रीमती राजकुमारी धर्मेन्द्र जी जांगिड-गंगापुर सिटी। **जिला-बाड़मेर :** श्री जोगाराम रावताराम जी जांगिड-पनावड़ (बायतु)। **जिला-नागौर :** श्री किशन बंशीराम जी जांगिड-चौलियास। **जिला-जयपुर :** श्री हरिबक्श जी जांगिड-सिंधी कॉलोनी। **जिला-अलवर :** श्री रणजीतसिंह पूर्णचन्द जी सोलंकी-खैरथल।

वैदिक संसार समस्त दान दाताओं का इस पवित्र कार्य में सहयोग करने पर आभार व्यक्त करता है तथा परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करता है कि आप दानी, महानुभाव आयुष्मान, विद्यावान, धर्मात्मा, यशस्वी, पुरूषार्थी, प्रतापी, परोपकारी, श्रीमान बनों और अधिकाधिक पवित्र कार्य कर पुण्य एवं यश के भागी बनों और अन्तः करण की पवित्रता और यश प्राप्त करो।

वार्षिक

हरियाणा :- जिला-हिसार : श्री मागेराम हनुमान सिंह जी-मण्डी आदमपुर। **मुम्बई :-** पटेल नवीन भाई शिवदास भाई-डोबिवली ईस्ट। **दिल्ली :-** श्री संदीपकुमार रमेशचन्द्र जी वेदालंकार-बुराड़ी दिल्ली, श्री मोहनलाल जी मगो-पाण्डवनगर दिल्ली। **महाराष्ट्र :- जिला-पूना :** श्री नथमल घासीराम जी जांगिड-बिबवेवाड़ी पूना, पटेल पंकजभाई हीरालाल भाई-वारजे पूना, श्रीमती शांता बेन आर पटेल-वारजे पूना, श्री अशोक भाई एल. वेलाणी-वारजे पूना, श्री विजय भाई एल. वेलाणी-वारजे पूना, श्री भरतभाई डी. वेलाणी-वारजे पूना, श्री भरतकुमार मगनकुमार पटेल-कोथरूड़ पूना। **गुजरात :- जिला-अहमदाबादः** आदर्श विद्यालय-लाँभा अहमदाबाद, जांगिड ब्राह्मण महिला मण्डल-नरौड़ा अहमदाबाद, श्री महेन्द्र भाई दास-अहमदाबाद। **जिला-गांधीनगर :** श्री लक्ष्मण भाई डी. पारसिया-गांधीनगर। **उत्तरप्रदेश :- जिला-गाजियाबाद :** डॉ. वीरपाल विद्यालंकार-इन्दिरापुरम गाजियाबाद।

लखनऊ :- लखनऊ के आठ सदस्यों को एक वर्ष तक भेजे जाने बाबद किसी अज्ञात सहयोगी द्वारा गुप्तदान द्वारा २००० रूपये भेजा गया है। वैदिक संसार गुप्तदान प्रदान करने वाले महानुभाव का हृदय से

धन्यवाद व्यक्त करता है।

राजस्थान :- जिला-बीकानेर : श्री नरसिंह गंगाराम जी सोनी-बीकानेर, **जिला-सवाई माधोपुर :** श्री ओमप्रकाश किशनलाल जी महावर-मलारना चौड़, श्री दामोदर हरसहाय जी गुप्ता-मलारना चौड़, श्री हरिराम बद्रीलाल जी आर्य-खेरदा, श्री सीताराम नमोनारायण जी मीना-कोयला (वामनवास), श्री पप्पूलाल धूलचन्द जी सैनी-गालदकलाँ, श्री धर्मराज प्रभुलाल जी मीणा-कोड्याई, श्री किशन रंगलाल जी मीणा-मामडोली (खिरनी), आर्य समाज-भगवतगढ़, श्री सुरज्ञान बीरबल जी मीना-गालद खूर्द, श्री भगवानसहाय रामदेव जी शर्मा-सवाई माधोपुर, श्री रामचरण गोरधनलाल जी महावर-कवासपुरा अन्ता, आर्य समाज भगवती नगर-गंगापुर सिटी, श्री नगराचन्द केदारनाथ जी शर्मा-गंगापुर सिटी, श्री सत्यप्रकाश रामस्वरूप जी शर्मा गंगापुर सिटी।

जिला-सीकर : श्री मदनलाल जी जांगिड-कोटड़ी धायलान (रिंगस)।

जिला-दौसा : श्री कमलेश जयलाल जी मीना-बगड़ी, श्री नानगराम कन्हैयालाल जी जांगिड-अमराबाद (लालसौठ)।

मध्यप्रदेश :- जिला-रतलाम : श्री प्रमोदकुमार जी गुप्ता-रतलाम, श्रीमती शोभा कृष्णकुमार जी पांचाल-रतलाम, आर्य समाज-धामनोद, श्री शान्तिलाल मांगीलाल जी पटेल-धामनोद, श्री हरिनारायण पन्नालाल जी राव-धामनोद, श्री सत्यदेव जी वानप्रस्थी-रतलाम, श्री शंकरलाल गोगा जी आर्य-सैलाना, श्री चांदमल घनश्याम जी सोनी-धामनोद, श्री मनोहरलाल मोहनलाल जी चौधरी-धामनोद, श्री सागर जी पाटीदार-धामनोद, श्री श्याम वॉच सर्विस-सैलाना, श्री ललित मूलचन्द जी कसेरा-सैलाना, श्री संजय बाबूलाल जी कसेरा-सैलाना, श्री रामलाल भेरूलाल जी पांचाल-आक्याकलां।

जिला-इन्दौर : वास्तुमंथक डॉ. कौशिक-संचारनगर इन्दौर, श्री रूपकिशोर थानसिंह जी जाकर-इन्दौर-११, श्री प्रेमसिंह भॅवरसिंह जी यादव-देपालपुर, श्री ओंकार काशीराम जी सेठ-देपालपुर, श्री रामचन्द्र रामलाल जी दुबे-सुखलिया इन्दौर।

जिला-उज्जैन : श्री गोपाल केसरीमल जी चोटिया-बड़नगर, आर्य समाज-बड़नगर, श्री अरूण अशोक जी भावसार-बड़नगर, श्री माणकचन्द पूनमचन्द जी राठौर-बड़नगर, श्री भालचन्द्र रामलाल जी उपाध्याय-बड़नगर, श्रीमान प्रधानाध्यापक महोदय शारदा स्कूल-बड़नगर, श्री योगेन्द्र नारायण जी चांदीवाला-बड़नगर, श्री राजेन्द्रसिंह गोपाल जी यादव-बड़नगर, श्री रामलाल लक्ष्मण जी चौहान-बड़नगर, श्री सदाशिव जी संगित्र-खाचरौद, श्री उच्छवलाल गमरतनलाल जी पाटीदार-खरसौदकलां, श्री नारायण रामेश्वर जी पटेल-खरसौदकलां।

जिला-सागर : श्री जीवनलाल चिन्नुलाल जी विश्वकर्मा-सागर।

श्री ओमप्रकाश जी आर्य, रावतभाटा (राज.) सम्माननीय प्रतिनिधि वैदिक संसार द्वारा वैदिक सिद्धांतों को जन-जन तक पहुँचाने का लक्ष्य लेकर अथक परिश्रम कर वैदिक संसार के एक आजीवन सदस्य तथा २५ सदस्य वार्षिक बनाये हैं वैदिक संसार आपका आभार व्यक्त करता है।

आपके द्वारा बनाये गये वार्षिक सदस्य निम्न है -

बिहार :- जिला-नालन्दा : श्री श्यामकुमार बाढू जी साहू-बिहार शरीफ।

राजस्थान :- जिला-चित्तौड़गढ़ : श्री रणजीत घुरडू जी प्रधान-रावतभाटा, श्रीमती श्यामकमल जी आर्य-रावतभाटा, श्री टी. आर. उपाध्याय, सुपुत्र-श्री आशुराम जी उपाध्याय-रावतभाटा, श्री चाणक्य रवीन्द्रकुमार जी पोतदार-रावतभाटा, श्री राधेश्याम मोतीलाल जी शर्मा-रावतभाटा, श्री प्रकाश मोतीलाल जी शर्मा-रावतभाटा, श्री विरेन्द्र सत्यनारायण जी मीणा-रावतभाटा, श्री अभिमन्यु गुलाबराव जी नरवरे-रावतभाटा, श्री शैलेश बाबूलाल जी सुथार-रावतभाटा, श्री ओमप्रकाश रामआसरे जी आर्य-रावतभाटा, श्री जगदीशप्रसाद रतनलाल जी प्रजापति-रावतभाटा, श्री अशोक बालूराम जी कुमावत-रावतभाटा, श्री विजयसिंह दामोदरलाल जी-रावतभाटा, श्री श्यामकुमार रूपचन्द जी सोनी-रावतभाटा, श्री योगेश नरेशचन्द्र जी आर्य-रावतभाटा, श्री पी. एल. ओकारनाथ जी शर्मा-रावतभाटा, श्री मंजुल दुलीचन्द जी त्यागी-रावतभाटा, श्री अभिषेक शांतिचन्द जी वार्ष्णेय -रावतभाटा, श्री विनोद कुमार ब्रह्मानन्द जी त्यागी-रावतभाटा, श्री नरेश भूराराम जी रेहारिया-रावतभाटा, श्री पुरूषोत्तम मन्नालाल जी सोनी-रावतभाटा, श्री रेशमपालसिंह रतनसिंह जी-रावतभाटा, श्री महावीरप्रसाद रामनारायण जी प्रजापति-रावतभाटा।

श्री बंशीलाल जी आर्य, बरखेड़ा पंथ, जिला-मन्दसौर (म.प्र.) सम्माननीय प्रतिनिधि वैदिक संसार द्वारा वैदिक सिद्धांतों को जन-जन तक पहुँचाने का लक्ष्य लेकर अथक परिश्रम कर वैदिक संसार के २४ सदस्य वार्षिक बनाये हैं वैदिक संसार आपका आभार व्यक्त करता है।

आपके द्वारा बनाये गये वार्षिक सदस्य निम्न है -

दिल्ली : श्री बी. एल. शर्मा जी-ईस्ट ऑफ कैलाश दिल्ली।

मध्यप्रदेश :- जिला-नीमच : श्री जगदीशचन्द्र किशनलाल जी सुथार-भाटखेड़ी, श्रीमती वेदवन्ती रामलाल जी-इन्दिरा नगर नीमच।

जिला-मन्दसौर : डॉ. रामनिवास बगदीराम जी पाटीदार-नैनोरा, श्री उदयसिंह कालूसिंह जी चौहान-दौरवाड़ा, श्री तुलसीराम फकीरचन्द जी-बूढ़ा, श्री रामभजन रतनलाल जी पाटीदार-बूढ़ा, श्री विनोद कुमार बंशीलाल जी नागरिया-कनघट्टी, आर्यसमाज-पिपलिया मंडी, श्री मुकेश नानालाल जी पाटीदार-बूढ़ा, श्री रामेश्वर नारायण जी आर्य-पिपलिया मण्डी, श्री मांगीलाल सीताराम जी आर्य-नारायण गढ़, श्री पूरनदास शंकरलाल जी बैरागी-खेड़ा खदान, श्री अशोक देव प्रकाश जी आर्य-खेड़ा खदान, श्री भूपेन्द्र अम्बालाल जी आर्य-पिपलिया मंडी, श्री बंशीलाल डालूराम जी आर्य-बरखेडा पंथ, श्री अरूणकुमार गणपतलाल जी पाटीदार-नारायणगढ़, श्री ऋषिराज कँवरलाल जी कापड़िया-नारायणगढ़, श्री विजयसिंह मूलचन्द जी आर्य-बादरी, श्री गोवर्धनलाल रामेश्वरप्रसाद जी ओझा-दलौदा, श्री रविन्द्रकुमार रामावतार जी शर्मा-मन्दसौर, श्री सत्यनारायण नाथूलाल जी शर्मा-मन्दसौर, श्री गंगाधर वरदीचंद जी शर्मा-मन्दसौर।

आर्यमित्र के सम्पादक पत्नी विरह वेदना से पीड़ित

वयोवृद्ध विद्वान आचार्य वेदव्रत अवस्थी सम्पादक आर्यमित्र साप्ताहिक लखनऊ की धर्मपत्नी श्रीमती शकुन्तला अवस्थी का दिनांक ०४ जुलाई २०१४ को कुछकालीक अवस्था के बाद निधन हो गया। वे ८२ वर्ष की थी। वे अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गई है। उनका अन्तिम संस्कार उसी दिन सांय साढ़े चार बजे बैकुण्ठधाम श्रृंगारनगर लखनऊ में पूर्ण वैदिक रीति से आचार्य सन्तोष वेदालंकार ने सम्पन्न कराया, अन्तिम संस्कार में सम्बन्धियों के अतिरिक्त आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के मंत्री श्री भुवन तिवारी सहित सभा के कई अधिकारी एवं प्रदेश व लखनऊ नगर के सैकड़ों आर्यजनों ने भाग लेकर उन्हें श्रद्धा सुमन भेंट किये। ०७ जुलाई को सायं आचार्य जी के निवास वेद मन्दिर ४७९ हिन्दनगर, लखनऊ में शान्तियज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई। जिसमें श्री जगदीश खत्री, डॉ. आनन्द कुमार बरनवाल, श्री सन्तोष वेदालंकार, श्री नरदेव आर्य, श्री मनमोहन तिवारी, श्री अखिलेश कुमार लखनवी, श्री मुनीन्द्र शास्त्री ने उनके व्यक्तित्व के कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए दिवंगतात्मा की सद्गति एवं दु:खी परिवार को मन:शान्ति व धैर्य प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की।

-भुवन तिवारी, मंत्री-आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा के संयोजन में संपन्न गतिविधियों की चित्रावली

डी.ए.वी. के चेयरमेन श्रीमान् पूनम जी सूरी का जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा के प्रतिनिधि मंडल ने किया अभिनंदन

आर्य समाज विज्ञान नगर, कोटा की नवगठित कार्यकारिणी एवं निर्वाचन अधिकारी मंडल

आर्य समाज भीमगंज मण्डी, जिला– कोटा के वार्षिकोत्सव के अवसर पर बृहद् संख्या में उपस्थित महानुभाव

डॉ. शिवदत्त जी पाण्डे, सुल्तानपुर(उ.प्र.) आर्य समाज भीमगंज मण्डी के वार्षिकोत्सव में व्याख्यान देते हुए

विस्तृत विवरण पृष्ठ ४० पर

आर्य समाज विज्ञान नगर द्वारा आयोजित सप्त दिवसीय ध्यान साधना एवं योग शिविर का लाभ लेते शिविरार्थी

योग शिविर में पधारे कैंसर रोग विशेषज्ञ डॉ. आर. के. तंवर उपस्थित महानुभावों से चर्चा करते हुए

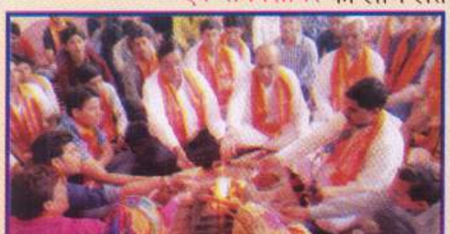

आओ यज्ञ करें कार्यक्रम में राठौर समाज छात्रावास कोटा के युवक एवं आर्य समाज के पदाधिकारी आहुतियाँ प्रदान करते हुए

दैनिक भास्कर के मिशन शिक्षा अभियान में जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा के पदाधिकारी शिक्षण सामग्री ले जाते हुए

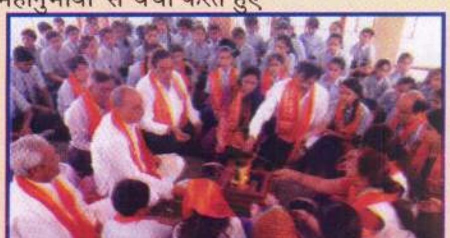

शिक्षा के नवसत्र का प्रारंभ देवयज्ञ द्वारा, अन्नपूर्णा विद्यालय कोटा के बालक –बालिकाएं एवं अन्य देवयज्ञ में आहुतियाँ प्रदान करते हुए

श्री मोहनलाल जी आर्य रावतभाटा का सेवानिवृत्त होने पर आर्य समाज रावतभाटा द्वारा समारोह पूर्वक किया गया भावभीना अभिनंदन

विस्तृत विवरण पृष्ठ ३६ पर

आचार्य आनंद पुरूषार्थी की वेद प्रचार विदेश यात्रा मलेशिया की चित्रावली

विस्तृत विवरण पृष्ठ ३२ पर

आर्य समाज वर्धा, जिला विदिशा (म.प्र.) में आयोजित वार्षिकोत्सव की चित्रावली

आर्य समाजी रामजीलालजी शर्मा का नेत्रदान का संकल्प पूर्ण

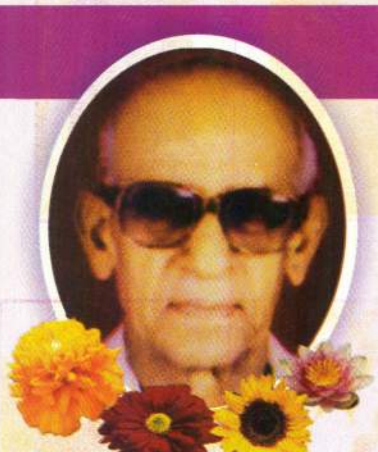

कोटा, १५ मई। नेत्रदान महादान परंपरा का निर्वाह करते हुए आर्य समाजी व समाजसेवी रामजीलाल शर्मा के निधन पश्चात उनकी आखों का नेत्रदान शाइन इंडिया के प्रभारी डॉ. कुलवन्त गौड़ व उनकी टीम के माध्यम से किया गया। यह स्मरणीय है कि स्व. रामजीलाल शर्मा पूर्व में ही नेत्रदान का संकल्प व्यक्त कर चुके थे। आर्य समाज रेल्वे कॉलोनी के वरिष्ठ सदस्य एवं समाजसेवी श्री रामजीलाल शर्मा के निधन का समाचार पाकर जिला शाखा के वरिष्ठ उपप्रधान हरिदत्त शर्मा तथा प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने शाइन इंडिया की टीम से संपर्क कर श्री शर्मा के निवास स्थान रेल्वे हाऊसिंग सोसायटी पहुँचकर नेत्रदान का कार्य संपन्न करवाया।

शर्माजी के सुपुत्र एल.के.शर्मा एवं परिवारजनों ने आर्य समाज पदाधिकारियों द्वारा दिये गये सहयोग के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। आर्य समाज पदाधिकारियों एवं स्नेहीजनों ने अंतिम संस्कार में उपस्थित होकर कृतज्ञता भाव से श्री शर्मा जी को अंतिम बिदाई दी तथा अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये।

भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक महोदय द्वारा पंजीकृत, पंजीयन संख्या, एम.पी.एच.आई.एन.- २०१२/४५०६६,डाक पंजीयन-एम.पी./आई.डी.सी./१४०५/२०१२-१४

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक - सुखदेव शर्मा 'जांगिड'-इन्दौर, इन्दौर ग्राफिक्स-२४ कुंवर मण्डली खजुरी बाजार से मुद्रित, १२/३, संविद नगर-इन्दौर-४५२०१८ से प्रकाशित, संपादक - गजेश शास्त्री, चलभाष - ०९९९३७६५०३१, कार्यालय - ०७३१-४०५७०१९